



# कवि-श्री माला

• असमिया •

कवि :

रघुनाथ चौधुरी

सम्पादक-अनुवादक

परेश चन्द्र शर्मा

बीर

लोफनाथ मराली



राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

प्रकाशक

मोहनलाल मट्ट

मन्त्री

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

दिल्लीमण्ड, बघाँ



सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण—१९९२

मई १९९२

मूल्य—₹ २/-



मुद्रक

मोहनलाल मट्ट

राष्ट्रभाषा प्रेस

दिल्लीमण्ड, बघाँ



इर्ष्य विषय है कि राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्षी अपने कार्य बराले २५ वर्ष मन् १९६१ में पूरे कर रही है। इस उपलक्ष्यमें मन्वावे जाभवाले रजत-जयन्ती महोत्सवके अवसरपर सभी भारतीय भाषाओंके मान्य कविदोका तथा उनके उत्कृष्ट कृत्यका परिषय 'कवि-श्री माध्य' की पच्चीस पुस्तकमें हिन्दी-गद्यनुवाद सहित प्रकाशित करनेकी योजनाके अन्तर्गत प्रस्तुत ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष आ रहा है।

यद्यपि किसी भी भाषाके सर्वश्रेष्ठ कृत्य-सर्जक निरूपण करना एक कठिन कार्य है किन्तु यही अपनी सीमाओंके ध्यानमें रखते हुए ग्रन्थमात्र उम उम भाषाओंके विद्वानोंकी रायसे ही चुनकर कार्य सम्पन्न किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकके आरम्भमें जिस भाषाके कविकी रचनाओंका चयन किया गया है उस भाषाके साहित्यका परिषय और कवि विशेषकर परिषय दिया गया है। जिस भाषाके कविदोका चुनाव दिया गया है उनका चुनाव करते समय मन् १९०० से पूर्वका साहित्य और १९०० से बादका साहित्य—इस तरिकेसे एक विभाजन-रेखा ध्यानमें रखी गई है। इसका कारण यह है कि लगभग मन् १९० के पूर्वके तथा १९० के बादके साहित्यमें प्रचलित विचार-धाराके एक विशेष प्रसरण अनुभव-सा पाया जाता है।

प्रस्तुत संग्रहमें संकलित साहित्य-परिषयमें भी एक-एककी मरालीने तैयार किया है। श्री परेन चन्द्र अर्पान पुस्तकमें कवि-परिषय और कृत्योंके सम्पादित तथा अनुवादित का श्रेय साजयीको इस रूपमें प्रस्तुत करनेमें सहयोग दिया है। संग्रहकी आवश्यक डिजाइन्के बनवा देनेमें श्री श्री एन. अक्षरकरजी (इंजीनर के के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इन्फ़ार्मेटिफ़ आर्ट, बम्बई) का उदार सहयोग मित्र है। उसके लिए समिति सन्धी आभारी है।

इसके अतिरिक्त एकाद तथा अग्र्यान्व दूरिदयोंमें जिन-जिनका प्रयत्न एवं प्रयत्न सहयोग मित्र है, उ के प्रति भी समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है प्रस्तुत संग्रह पाठकोंके रुचि एवं उपयोगी प्रतीत होगा।

*H. R. S. S.*

बन्धी

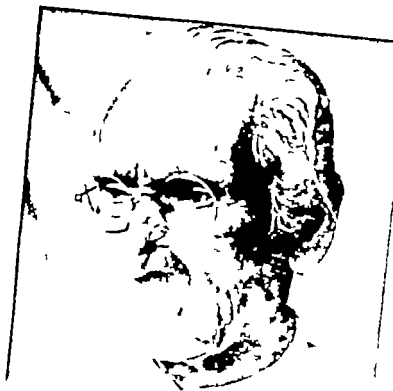
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्षी

## अनुक्रमणिका

पृष्ठांक

अरागिगा-साहित्य परिषद	[ प्रारम्भसे सन् १९२६ तक ]	१
कवि-परिषद		१९
काव्य-शास्त्र		३७

कवि-श्री माता  
असमिया



रघुनाथ घोषुरी



असमिया साहित्य परिचय  
(प्रारम्भसे १९२० तक)





# असमिया भाषा और उसका साहित्य



## भाषा साहित्यकी पूर्व पीठिका

प्राचीन मनुष्यका जीवन आधुनिक जीवनकी तुलनामें न तो उतना जटिल था और न उदरार्थकके लिए उन आसन्न ख़तरों में उतना लक्ष्य ही करना पड़ता था। ही जीवनकी लड़ाके लिए उसे ख़तरों का ख़तरा बरकरा रहना पड़ता था। इन जीवनमें व्ययना तो ही किन्तु मनुष्यके आत्मिक व्ययनामें एक भाषा और एक नए जीवनकी ही बान्धना की जा सकती है। एते जीवनमें अपनी भाषा अभिव्यक्तिके लिए उमर कम भाषाका व्ययना दिया होगा उनका स्वल्प भी अपने समाजके अनुकूल बननेका आशानीमें अनुमान दिया जा सकता है। उन समय न नियमका माघन था और न आशाका बार्ध निर्दिष्ट स्वल्प। मनुष्यने बचत तुलनाका ही सीखा था। इसलिए उन समयकी भाषा अनायास ही आइम्बलीन और अभिव्यक्तिका एक सीमा-जा बार्ध थी। आशाने जब इन स्थितियों का बार्ध निभा और आदिम मनुष्यने जीवनकी अभिव्यक्ति और कुछ बड़ा दिया तो उनके समाजमें एक अभिव्यक्ति सीधिका भाषा-आहित्यका उदय हुआ। इने मात भाषा या सोव-आहित्य का जा सकता है। मात आशाने इन सीध आहित्यमें सीध जीवनके आधारक सुख-सुखकी बार्ध और आत्मिक तथा उन्मुक्तकी मनोरञ्जक बार्ध बार्ध जारी

ही। इस साहित्यकी भाषा सरस भाव सहज और बोध मय्य और सीधी सरस-सीधी होती थी। मनोरंजक तो वह है ही और साथ ही उत्साहजनक और लोकहितवा भी है। भाषा-साहित्यके इस स्तरको पार करनेके बाद ही हमें भाषाओंका साहित्यिक रूप उपलब्ध होता है। वह लोक-साहित्य ही सभी साहित्योंका उत्पन्न-स्रोत है।

### ई० छठी शताब्दीका प्रारम्भिक असमिया साहित्य

असमिया साहित्यका सर्व प्राचीन नमूना भी ऐसे ही लोक-साहित्यमें मिलता है। बिहु पीठ मो-बारण पीठ विवाह-पीठ ग्रामीण पीठ सोरी आदिके माध्यमसे हम असमिया साहित्यके प्राचीनतम रूपकी खोज कर सकते हैं। असमिया समाजमें आज भी इन पीठोंका बाहुल्य है किन्तु इनकी भाषा प्राचीन न रहकर आधुनिक रूपमें रच गई है भाव और अधिभ्यंजना प्राचीन ही रह गई। इन लोक-पीठोंकी परम्परा असमिया भाषाके प्राचीन लोक-कवि दुर्गाकर, पीताम्बर और मानकीके समयसे आजतक चली आई है। संसारकी समस्त भाषाओंमें वह बात पाई जाती है कि लोक-गीत और लोक-साहित्यका समाजमें बहुत प्रचार तो रहता है किन्तु उसे लिपि-बद्ध करनेका प्रयास बहुत कम होता है या नहीं ही होता है। इसलिए असमिया भाषा-साहित्यके इस आरम्भिक युगका लोक-साहित्य भी अनिश्चित ही रहा।

ऐसे अनिश्चित साहित्यका एक बृहत् अथ हमें डाकर-बचन के रूपमें प्राप्त होता है। इन बचनोंका रचना-काल इसकी तन् छठी शताब्दी माना जाता है। प्रारम्भिक लोकगीतोंके स्तरसे ये बचन कुछ भिन्न प्रकारके होते हैं। इन बचनोंमें कृषि-सम्बन्धी जानकारी मीनतका हाल औपनिषदोंका वर्णन राजनीति और तत्सम्बन्धी बहुत-सी बातोंका जिक्र बहुत ही सरस और रोचक रूपमें मिल जाता है। अधिकतर बचन उपदेशात्मक हैं और सुन्दर छन्द-बद्ध भी। डाक की असमियाका मुकंदान कहा जा सकता है। आवे चसकर इस लोक-परम्पराको बहुतसे ध्यात-अध्यात लोक कवियोंने जाने बढ़ाया है।

उपर संक्षेपमें ही असमिया साहित्यके प्रारम्भिक स्वरूपपर उल्लेख किया गया है। यहाँपर यह कह देना सर्वगत अनुचित न होगा कि असमिया भाषा एक पूर्ण भारतीय भाषा है और उसकी उत्पत्ति डॉ बिरेचिनुमार बक्शाके अनुसार सम्भवतः मायमी या गौड़ अपभ्रंशमें हुई है। कुछ विद्वानाका मत है कि महाभारत कालमें असममें (उन समय प्राग्ज्योतिषपुर) आर्योंकी जो संस्कृत भाषा थी बालान्तरमें उनमें अपनी जनहकी प्राकृतके लिए छोड़ दिया और इन प्राकृतमें स्थानीय विशेषताओंको ग्रहण कर असमिया जैसी एक सर्वांगपूर्ण भाषाको जन्म दिया। यहाँपर एक बात और जान देना जरूरी होगा कि छठी शताब्दीके 'डाकर बचनों' अथवा ध्यातकी शताब्दीके अन्य साहित्यिक रचनाओंमें असमिया भाषाका जो रूप या आधुनिक असमिया भाषाका रूप उनमें बहुत भिन्न नहीं है जैसा हिंदी

साहित्यके आदि कामके साहित्यमें पाया जाता है। राष्ट्र-रचना और राष्ट्र-रचनाकी दृष्टिमें यह परिवर्तन बहुत ही कम हुआ है।

वर्ष-कासका पूर्ववर्ती असमिया समाज और उसका उस समयके साहित्यपर प्रभाव

तेरहवीं शताब्दीके पूर्वार्धमें असममें शक्तिशाली आहोम कबीलेका प्रवेश दक्षिण-पूर्वी दिशामें हुआ। बाड़े ही दिशाके भीतर इस कबीलेके लोगोंने असमके विस्तृत पूर्वीय अंगपर अपना अधिकार जमा लिया और लगातार छह शताब्दियों तक उसका शासन असमपर बना रहा। इस राजनैतिक स्थितिके कारण देशमें एक स्थाई जीवन-साक्षात् स्थापित हुआ सम्भव हुआ और असमिया भाषा-साहित्यका सर्वोत्कृष्ट युग इसी-कालमें रहा है और इसे एक स्थाई जीवन भी मिला। ईसाकी पंद्रहवीं शताब्दीकी समाप्तिसे सात-सात उलार भारतकी अजेय मुस्लिम शक्तिमें आहोम राज-शक्तिका संघर्ष हुआ और लगातार कई संघर्षोंके बाद ही राज्यका प्राचीन विस्तार कम होने लगा और असम राज्य कई छोटे-छोटे राज्योंमें बँट गया। इन कालमें असम या कामरूप कहनेसे आधुनिक असमके सू-भागका ज्ञान ही होता ही या पर साब ही आधुनिक बंगाल (अधिभक्त) का उत्तरी हिस्सा भी जिसे आजकल रंगपुर असमपुरी और कोचबिहार कहा जाता है इसके अन्तर्गत था। इसी कोच-विभागमें कोच-राजघराने राजा नरनाथराजने इस समय राज्य किया था। राजा नरनाथराजने असमिया साहित्यके विकासमें कुछ हाथ बँटाया। साम्प्रदमें इस साहित्यमें नरनाथराजके शासन-कालमें एक संपूर्ण नया जीवन पाया। राजा नरनाथराज विद्यानुरागी था और उसने अपनी राजा-जघामें विद्वानोंको स्थाप किया था। महापुरुष शरदेव माधव देव राममरम्बनी मार्भमीन मट्टाचार्य आदि महान अक्षरिया कवि एवं साहित्यिक इसकी राजघराने समा-गणित थे।

प्राचीन कालमें ही कामरूप उत्तर-मध्यक देशके रूपमें प्रसिद्ध है। सामाजी बहुत-सी विचारधारा धारणाएँ इन राजघरे कालमें अपनी आई हैं और आज भी अपनी रही हैं। आप जनकर जब आहोम राज्य-शक्तिकी उत्पन्न यहाँके शासन लायातो प्रामाण्य मिला तो उसने सोनेमें मुद्राकेका काम किया। आहोम कबीलेके नाम शाका थे या यों कहना चाहिए कि वे जब प्रारम्भमें शिल्प अर्थमें दीर्घाण प्राप्त कने थे तो शाकाके प्रभावमें आ गए थे। राजघरे कोने-कोनेमें देवीदेवी पीठ बने हुए थे और उनके प्रतिष्ठित मंत्रका पत्राकारी बलि हानी थी। बौद्धोंकी साधनाकी शाखा—जिसे अल्पमें 'महर्षिवा' कहा जाता है—का भी प्राचीन कामरूपमें प्रबल ज्ञान था जो धातु-शास्त्र और उत्तर-मध्यक शिवाय बन गई थी। आजकलके प्रसिद्ध कामरूप-शाखाका का मन्दिर ना उस समय का ही। इनकी ट्यागि बड़ाकाण कालमें अपनी आ रही थी। यह राज्यमार्गमें शाकाका एक मुद्रु लेना पीठ बन गया था जिसका

सामी और कोई पीठ नहीं था। कहा जाता है कि उत्तर-पूर्वी असमके 'ताम्रेश्वरी' नामक मन्दिरमें उस समय 'तरबति' प्रथाका भी चलन था। इस प्रकारकी मन्द-कारण्य विकट परिस्थितिमें असममें महापुरुष संकरदेवका जन्म हुआ। उन दिनों राज्यमें ऐसी विकट परिस्थितिका प्रथम हो गया था कि मानवता बाहि बाहि करने लगी थी। मनुष्यकी पारंपरिक कृतिकी सन्तुष्टिके लिए पुष्ट अनुष्ठानोंमें नीच-से-नीच काम करनेके लिए भी किसीको हिचकिचाहट नहीं होती थी। उस अस्वाभाविक अवस्थामें मानवताकी पुकार मुनकर उसकी रक्षाके लिए मानो ईश्वरने ही एक महापुरुषको असममें भेज दिया।

ये महापुरुष भी संकरदेव थे। संकरदेवका जन्म जिस वंशमें हुआ था वह भी क्षत्रियका ही उपासक था। किन्तु संकरदेवको अपने वंशकी मान्यताके विकट ही शिरोहकी पताका अपने हाथमें लेनी पड़ी। उन्होंने क्षत्रि पूजाके विरुद्ध अपना जो सिद्धान्त स्थापित किया था उसे श्रीमद्भागवतसे ग्रहण किया था। जिते से एकेश्वरवाद भी कहा करते थे। सोच उन्हें महापुरुष कहते थे और उनके चलाने हुए सिद्धान्तको उनके सम्मानमें (महापुरपीया धर्म) कहते थे जो भाषवती धर्मके नामसे प्रसिद्ध है। ऊपर बताया गया है कि आहोम राज्य क्षत्रिका उपासक था और इसलिए महापुरुष संकरदेवका जन्म आहोम राज्यमें होनेपर भी अपने सिद्धान्तकी रक्षाके लिए उन्हें मातृभूमिको छोड़ना पड़ा था और अन्ततक कोच राजा नरनादायकके दरबारमें आश्रय लेना पड़ा था। इस महापुरुषका जन्म ई. सन् १४८९ में हुआ था। इनकी जन्मतथिके बारेमें अब भी सन्देह है कि किम महीनेकी किम तिथिमें उनका आधिर्भाव हुआ था। विभिन्न क्षत्रि पुत्रियों (जीवितियों) में इन जन्मकी विभिन्न तिथियाँ मिलनी हैं। इसी तरह संकरदेवके जन्मके साध-साध में ईश्वर-धर्मका प्रारम्भ होना है।

असमिया साहित्यका आधिकार

ई० छठी शताब्दीसे १३ वीं शताब्दीके पूर्वार्ध तक

अबकी पत्रहवीं शताब्दीमें महापुरुष भी संकरदेवके जन्मके समय तक हुए। इन क्षत्रियोंकी रचनाओंमें काव्यकी रचनाएँ बहूनी लिखाई देनी हैं। जो कवि संस्कृत भाषाके जानकार थे और अपने पाण्डित्यके लिए उन युगमें विख्यात थे उन्हें अपने वाक्योंमें अस्मिन् नरम धारा बहानेकी कोशिस थी। इनकी रचना या तो संस्कृत वाक्य या पुगर्भोला मुन्दर अस्मिया अनुवाद हानी थी या इन वाक्यों और कहानियोंको आधार बनाकर अपनी नवीन रचनाओंकी मूर्ति थी थी। इन कवियोंमें सबसे प्राचीन कवि है नरम्बनीरो माता जाना है जिनने 'प्रहार' अस्मिन् नामक ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थकी अस्मिया भाषाके बेजाड़ भाषा थे। उन्होंने

निम्नम्बेहू अममिया भाषाको बहुत मकस और पुष्ट रूप दिया है। इमरा उल्लेखनीय कवि हरिहर बिष्ट हुआ जिमने महाभारतके अरबमेघ पत्र वा अममिया अनुवाद किया। तीसरा कवि हुआ कविरत्न नरस्वामी। इमने महाभारतके श्लोकार्थ वा अनुवाद किया है। इस युगका सर्वश्रेष्ठ कवि माधवबन्दीनी हुआ। इस कविने मार्गो काण्ड रामायणका सुन्दर छन्दमें अममिया भाषामें अनुवाद किया है। इस युगकी कविने एक स्वतन्त्र काव्य भी लिखा वा जिसका नाम है देवमित्र। उनमें इस काव्यके जरिए भगवान् विष्णुके वृष्णावतारकी सर्वश्रेष्ठता दिखानेका प्रयत्न किया है। अर्जुनके द्वारा मभी देवनाभोंकी पराजय दिखाकर वृष्णकी श्रेष्ठता दिखाई गई है।

वृष्णव कासीम साहित्य ई० १४४९ से १९५० तक

अममिया साहित्यकी यह विरासतीन बरम्बा चल रही थी कि ई सन् पन्द्रहवीं शताब्दीके मध्यकालमें अममिया साहित्यकी प्राथमिक प्रतिष्ठा करनेवाले महा पुरुष संकरदेवरा जन्म हुआ। उन्होंने अममके प्रचलित शाकल मतके विरुद्ध भीमरू भागवतके अतिमाधुर्यक अर्जुनवाचन जो जय-बोध किया उनमें शाकलोके पतनको ही निवृत्त्यर्थ नहीं किया बल्कि अममिया साहित्यको भी अपने विचारोंके लिए नई प्रेरणा दी। अपने धार्मिक मतके समर्थन और प्रतिपादनके निमित्त ही संकर देवको साहित्य-देवताकी शरण मंत्री पड़ी और वे साहित्यकी मूर्त्तिमें निष्ठाके साथ जुट गए। उनोंने भाषावत्त पुस्तकके प्रथम द्वितीय अल्पम ब्रह्म तत्त्वादि और इन्द्र अथवा रामायणके मध्यम काण्ड कविनी हरण काव्य निबन्धनमिद्ध मन्वत्त वृष्णवामुन कविन रत्नाकर (अर्जुनमें) शीतल आदि प्रथम कुछ अनुवाद और कुछ मौलिक रूप लिखे थे। उन्होंने करीब बीस प्रथम लिखे व किममें शीतल सबसे महत्वपूर्ण है। यह प्रथम बहुतसे संस्कृत शब्दोंके अपने धर्ममतके समर्थनके लिए महत्वपूर्ण अंशको चुनकर अनुवाद करके तैयार किया गया था। शीतल को हम उनका धर्ममतका छोटा-सा संस्करण कह सकते हैं। विषयवस्तुको समझानेका शीतल और निष्ठाकी ही अनुत्तरीय है और आज उल्लेख योग्य वेदानी जनोंके श्रम प्रकाश सुमतीदासके रामचरित मानसका आरंभ और अन्तर्गत है उनी प्रकार शीतल-पाठके प्रति अममिया काशीन असाधारण सम्मान और आदर है। मध्याह्न और मध्याह्नममें हर पृथग्धीमें शीतल पाठा का मध्यम रूप हर गाँवमें बूझने मजगा है।

श्री संकरदेव अममिया भाषा-साहित्यके पहले गुरुवार और साप्ताहिक है। श्री संकरदेव अममिया भाषा के नाममें अममिया साहित्यमें सादृश साहित्यकी एक नई बरम्बाकी स्थापना की। उन्होंने कविपद इमम पत्नी प्रसाद कविनी हरण पाणित्राज हरण श्रीगणेशविषय बिष्ट याथा वैदिकशास्त्र आदि सादृशरी रचना की। साप्ताह्यमें मन्वत्त प्रसादकी पत्रमें कोई परम्परा न जान हुए श्री तत्त्वादि श्री संकरदेवके साप्ताह्यमें अममिया गुरुवार प्रयोग और वह भी श्रेष्ठ श्रेष्ठ कर्म—अममिया भाषा

साहित्यके विकासमें एक दूसरी उल्लेखनीय घटना है। नाटक रचनेकी परम्परा भी असमियामें इसके पहले नहीं थी। नाटककी रचना और मसका आदिर्बाब दोनों एक साथ हुए। सर्व प्रथम असमिया मस भी नाटकके बचोपकरणमें ही दिखाई पड़ा।

अंगीया नाटककी रचनामें भी संकरदेवने संस्कृत नाट्य साहित्यसे अवश्य प्रेरणा ली है इसमें कोई संदेह नहीं है। किन्तु संस्कृत नाटक उपनाटक आदिका कोई भी लक्षण इनके नाटकमें पूर्ण रूपसे नहीं है। इसी समय कहा जाता है कि मिथिलामें मैथिलीमें या संस्कृत मैथिली मिथिल भाषामें लोक-परम्परामें कुछ नाटक मिले गए थे। श्री संकरदेवने इन नाटकको कहीं खोजते देखा होया या पढ़ा होया ऐसा अनुमान ही किया जा सकता है। उसकी पुष्टिके लिए हमारे पास कोई ठप्य उपलब्ध नहीं है। श्रीसंकरदेवके इन नाटकों द्वारा एक ओर तो आनिक मसके प्रकारमें सहायता मिली और दूसरी ओर साहित्यका महत्कार पुष्ट हुआ।

इन शब्दोंके अलावा श्री संकरदेवने अपने धर्ममसको बूझ करनेके लिए अनादि पाठन भक्ति प्रवीण सीसामाला अनामिलोत्सवाम नाममालिका प्रेम बनवी बोपा कुश्लोक बलिचलन नामक विभिन्न छन्दोबद्ध छन्द लिखे। छन्दोकी विभिन्नता होते हुए भी इनकी विषयवस्तुमें भिन्नता नहीं आई। उन्होंने बरणीत नामसे कुछ ऐसे मीठ रचे हैं जिनमें अतमिबा और बजनापाका एक सुन्दर समन्वय दिखाई पड़ता है।

महापुराण श्री संकरदेवके द्वारा उनकी परम्पराको उनके सर्वप्रिय सिष्य श्री माधवदेवने साहित्यिक और धार्मिक—दोनों दृष्टियोंमें कायम रखा। अपने मुरके जीवित रहते ही श्री माधवदेव साहित्यिक जीवनमें जा बसे थे और आजीवन गुरुके बाहिले हाथ बनकर उनके कार्योंमें महायत्न बने रहे।

श्री माधवदेवकी दृष्टियोंमें नाम-बोपा रामायण आदि काव्य जलिन उत्सावकी नाममालिका राजमूव यत्र बैलकी कीर्तन श्रीसंकरदेवका संस्कृत छन्द जलिन रत्नाकरवा नाट्य आदि है। इन छन्दोंके द्वारा श्री माधवदेव अपने गुरुके धर्म-मसकी भिन्नको बूझ बनानेमें समर्थ तो हुए ही साथ ही अगनिया भाषाके साहित्य बज्जारमें भी अनुपम राशि छोड़ गए। इन छन्दोंके छन्दामें सबीनही ऐसी मारवना छिपी है कि उन्हें या देनेमें बोना और गायन दोनों मूम उठने हैं। बैलब धर्मके प्रति अगमनी जनताके आदृष्ट होनेके मूम कारणमें धर्म प्रचारके साधनोंका आवश्यक रूप भी एक था। महापुराण श्री संकरदेवके अनुकरणमें श्री माधवदेवने भी कुछ 'अंगीया नाट्य लिखे हैं। उनकी अवनत पाई गई मूची इस प्रकार है—

—मोजम बिहार, मुनि नेटोवा अर्जुन मजन पिगता-मुचुवा राम मुमुप

१ हिन्दीके प्वासीकी तरफकी एक साहित्य-विद्या

कारण होता था खलावा भूख होता और बहामाह्न झुमरा। इन नाटकोंमें भी माधवदेवने भी शंकरदेवकी भांति भक्तवान् भीरुपणकी महिमाय लीलाकी व्यंजना की है। उन्होंने इसमें अपनी कोई नई चीज नहीं जोड़ी है अपने गुरुके पर चिन्होंपर ही जाना उन्हें भागा था।

उदरालन प्रकारके अनाथा भी माधवदेवने महापुरुष भी शंकरदेवके समुद्र बरगीतकी रचना भी की थी। कहा जाता है कि भी शंकरदेवके मित्रे हुए बरगीत किमी समय महाल जम जानेके कारण मर गये थे और भी शंकरदेवने भी माधव देवको पुनः कुछ ऐसे गीत रचनेके लिए अनुज्ञा की। गुरुके आदेशानुसार ही उन्होंने बरगीत लिखे हैं। 'बरगीतमें भी माधवदेवने एकरचनाका मिश्रण प्रतिपादित करने हुए हरिभक्ति स्वयं स्थापना की है। बरगीतकी गहर भी माधवदेव स्वयं गुरुक मन्त्रा प्रचार करते थे। जिस प्रकार मूरदास हिन्दी साहित्यमें बाल्यस्य भावके संबंधमें कवि हुए, भी माधवदेव उसी प्रकार अममिया साहित्यके कवि रहे। बर गीतोंमें भक्तवान् भीरुपणके बालजीवनकी विभिन्न घटनाएँ मनोरञ्जक रूपमें अभि व्यक्त हुई हैं। प्रत्येक बरगीतमें भीरुपणके बचपनकी किमी-न-किमी बहानीका वर्णन मिलता है। इन बरगीतोंका आशय साम्प्रदायिक गीतोंके जैसा आर और सम्मान दिया जाता है और उनका मान भी उसी प्रकार ही होता है। बरगीतकी भाषा ब्रजबुद्धि थी या अममिया मैथिली और ब्रजभाषा का एक मिश्रण रूप थी।

ई एक सौलहवीं शताब्दीके आरम्भिक कालमें कवि राममरुतकीका जन्म हुआ था। महापुरुष भी शंकरदेवकी कृपासे उन्हें वाचविहारके राजा मरुतागणकी राज समामें जयहू मिली और भी शंकरदेवके कृतन ही उन्हें मरुतागण राजा महाभारतका अममिया छत्रमें अनुवार बननी आज्ञा मिली। राजाने उन्हें मूल सामायकी एक प्रति भेंट की और कहा जाता है कि उन कवियों राम मरुतकीक जन्म के आनेके लिए एक ब्रह्मदाईकी व्यवस्था बरनी पड़ी थी। मरुतागणने यद्यपि यह स्वयं कवियों ही सीगा था किन्तु अतः समयक दुन्दे कवियोंने भी इस कार्यमें सहयोग दिया गया था। महाभारतका सम्पूर्ण अनुवाक मरुतागणके कालमें नहीं हो सका। उसके छोटे भाई विद्यागणके पीछे अमरुतागणके कालमें इस कार्यकी समाप्ति हुई। महाभारतका अममिया भागान्तर सम्पूर्ण ही हूबहु सकन नहीं थी। अन्तर्गतने अपनी तरफमें बहुत-सी अन्य घटनाएँ और कथाएँ जोड़ी हैं। अनुवाकके कालमें स्वयं कविने काम किया गया है। सम्पूर्ण इस काल कवक अन्तर्गत अममिया साहित्यक जीवनका एक बड़ी शक्ति मिली थी और पारकी कालक साहित्यका पन और कथाने गुणात्मक एक विस्तृत बर्गीका प्राप्त हुआ। मूल कवकी विषय सम्पूर्ण साथ अन्तर्गत हांग पुण्य आदिम रोचक कहानियाँ



बोध देनेके कारण जगतमें उसका प्रचार और लोकप्रियता बढ़ गयी और असमिया साहित्यको बढ़ानेमें सुगम मार्ग मिल गया।

महाभारतकी कथाके आधारपर रामसरस्वतीने रोमाञ्चिक काव्य भी लिखे हैं। उनमें ये मुख्य हैं—

कुशावत बध्र ब्रह्मासुर बध्र ब्रह्मासुर बध्र।

अस्वकर्ण युद्ध नामक काव्य भी रोमाञ्चिक काव्यका एक अच्छा नमूना है। 'रामसरस्वतीने श्रीमन्नरिच' नामकी एक दूसरी रचनामें श्रीमन्के नाम श्रीमन्के कुछ बिन्न बहुउत्पी सुन्दर रूपमें हास्य रसका गुण देकर लीखे हैं। इस काव्यमें उस समयके असमिया समाजका जीवन और समाज-व्यवस्थाका अच्छा चित्रण मिलता है। असमिया साहित्यमें यह एक बेजोड़ कृति है। व्याध चरित नामके एकका कुछका काव्य भी हमें प्राप्त है। रामसरस्वतीने—महाभारत महाभारतके अनुसूचीपर बयबेध इत गीत गोविन्दका असमिया भाषान्तर बहुत ही कल्पित छन्दोंमें किया है।

अनन्त कन्दली भी संकरदेवका समयका हीन कवि था। उसने भी श्री संकर-देवके अनुसूचीके ही महाभारत महाभारतकी राज समाजें स्थापन पाया था। कुछ लोगोंका विश्वास है कि रामसरस्वती और अनन्त कन्दली दोनों एक ही व्यक्ति हैं। कहते हैं कि इनके इन नाम थे और रामसरस्वती तथा अनन्त कन्दली उन्हीं इन नामों से नाम थे। अनन्त कन्दलीने श्री संकरदेवके वैष्णव धर्मकी बीजा ली और मुन्के आदेयने श्री मद्मपानवतके राज स्तम्भका अनमियामें स्थापित किया। इनके अलावा उनमें 'कुमार हरम' काव्य और 'नीतार पाताल घरेम' नाटक लिखे। यह नाटक श्री संकरदेवके नाटकीय टनकरका है और आज भी उनका जादू अनमिया जनतामें होता है। कुमार हरम काव्यकी भी संकरदेवके शिष्यगी काव्यमें तुलना की जा सकती है। अनन्त कन्दलीने अनन्त रामायण नामके एक संक्षिप्त रामायण भी लिखी थी।

मार्गमीम भद्राचार्य वैष्णव कुवका एक विद्वान् उद्योग था। वह पहले शाक्य था और बादकी भी संकरदेवके उसने वैष्णव धर्म की बीजा ली। श्री संकरदेवके साथ शाक्य और वैष्णव धर्म सम्बन्धी होनेवाले शाक्यधर्ममें यह पराजित हुआ और शाक्यजी बना गया और नतीपर विदेववर चरचरकि अधीन रहकर उनमें शाक्यों का अध्ययन किया। पाँच वर्ष तक वही उन्हेंके परधान् अगार जानोसारैम कर वह स्वदेग बीटा और मुत्तम वैष्णव हो गया। शाक्यमीमें ही उसने पद्मपुत्राका अनमिया में अनुवाद किया था और कामरुण पहुँचकर भावजन पुत्रा अधिप्य पुत्राका अनुवाद किया। उनमें श्री संकरदेवका एक जीवन चरित भी लिखा है।

श्रीधर कन्दली भी वैष्णव शाक्यका एक अच्छा कवि था। वह भी संकरदेव का समयका हीन था और श्री संकरदेव उनको बहुत मानने भी थे। संकर-देवकी



बोध देनेके कारण जनतामें उसका प्रचार और लोकप्रियता बढ़ गयी और असमिया साहित्यको बढ़नेमें सुगम मार्ग मिल गया।  
महामारतकी कबाके आधारपर रामसरस्वतीने रोमाण्टिक काव्य भी लिखे हैं। उनमें ये मुख्य हैं—

कुमावत बघ बबामुर बघ खटामुर बघ।

'अस्वकर्ण पुत्र' नामक काव्य भी रोमाण्टिक काव्यका एक अच्छा नमूना है। रामसरस्वतीने 'मीमचरित्र' नामकी एक बूसरी रचनामें भीमके बाम बीबलके कुछ चित्र बहुतही सुन्दर रूपमें हास्य रसका पुट देकर लीये हैं। इस काव्यमें उस समयके असमिया समाजका बीबल और समाज-व्यवस्थाका अच्छा विवरण मिलता है। असमिया साहित्यमें यह एक बेजोड़ कृति है। व्याघ्र चरित्र नामसे उसका दूसरा काव्य भी हमें प्राप्त है। रामसरस्वतीने—महाराजा नरनारायणके जनरोधपर जयदेव कृत नील योधिन्द्रका असमिया भाषांतर बहुत ही ललित शब्दोंमें किया है।

अनन्त कन्दली भी संकरदेवका समकालीन कवि था। उसने भी भी संकर-देवके अनुपहसे ही महाराज नरनारायणकी राज सभामें स्तान पाया था। कुछ लोगोंका विश्वास है कि रामसरस्वती और अनन्त कन्दली दोनों एक ही व्यक्ति हैं। कहते हैं कि इसके दत्त नाम से और रामसरस्वती तथा अनन्त कन्दली उन्हीं रस मार्गों से नाम से। अनन्त कन्दलीने भी संकरदेवसे वैष्णव धर्मकी शिक्षा ली थी और पुस्तके आरोग्ये भी महामातृवतके ब्रह्म स्मरणका असमियामें लपलपार किया। इनके अलावा उसने 'कुमार हरण काव्य और भीतार पातान प्रवेश नाटक' लिखे। यह नाटक भी संकरदेवके नाटकके टक्करका है और आज भी उनका आदर असमिया समाजमें होता है। कुमार हरण काव्यकी भी संकरदेवके रचियकी काव्यसे तुलना की जा सकती है। अनन्त कन्दलीने अनन्त रामावत नामसे एक संश्लिष्ट रामायण भी लिखी थी।

मार्चनीय मद्दाचार्य वैष्णव बुढ़का एक विख्यात बचवार था। यह पहले पाण्डव या और बादका भी संकरदेवसे उनसे वैष्णव धर्म की सीखा ली। भी संकरदेवके पाप पावन और वैष्णव धर्म मन्त्रधी होनेवाले पाण्डचार्यमें यह पराश्रित हुआ और बापायगी बना गया और बड़ीतर विस्मयकर बचवनीके ज्ञान रहकर उसने पाण्डो का अध्ययन किया। पाँच वर्ष तक वही रहनेक परवान् आर ज्ञानोपार्जन कर बहु स्वयं लौटा और तुल्य वैष्णव हा गया। बारापनीमें ही उसने पद्मपुराणका असमिया में अनुबाध किया था और नामरूप पहुँचकर प्रागण पुराण भविष्य पुराणका अनुबाध भी बर कन्दली भी वैष्णव नामका एक अच्छा कवि था। यह भी संकरदेव का समकालीन था और भी संकरदेव उनको बहुत मानने भी से। मंत्रवन् इमीति



संग्रह आदि ग्रन्थ संस्कृतमें लिखे थे। इनके अलावा उसने 'भक्ति रत्नावली' का अक्षरमयामे अनुबाद किया। प्रसंगमाता और नृप बसावसी नामकी दो पुस्तकें उसने पद्यमें लिखीं। भट्टदेवका गद्य-साहित्य आधुनिक भारतीय भाषाओंके प्राचीनतम पद्योंमेंसे है। आधुनिक अक्षरमया गद्य-साहित्य भट्टदेवके गद्य-साहित्यसे बहुत भिन्न नहीं है। भट्टदेवके कथा-भागवत और कथा-गीत अपने समयके पद्य साहित्यका उत्कृष्टतम नमूना हैं। इसके अतिरिक्त रघुनाथने कथा-रामायण नामक भट्टाचार्यने कथासूत्र कृष्णानन्द द्विवने सत्तिततम्न और परशुरामने कथा घोषा लिखी हैं। इन सबकी लेखन-शैली भट्टदेवकी वैसी ही रही है।

गोपाल जाताने भी संकर-भाषणकी परम्परामें 'अम माता' और उदय सम्भार नामसे दो नाटक लिखे हैं। नाटकोंकी भाषा देखनेसे मान्य होता है कि गोपाल माता एक अच्छा लेखक था। रामचरण ठाकुरने मुश्चरित का संकर चरित लिखा था। कंस बध नामसे उसका एक नाटक भी मिला है। द्विज भूपवने अजायित उपाख्यान नामसे दूसरा नाटक लिखा है। बैत्यारि ठाकुरने नृसिंह यात्रा और स्वयन्त हरण नामसे दो नाटक लिखे हैं। इन नाटकोंके भाव तथा शैली भी संकर-भाषणकी कोटिकी ही हैं। बैत्यारि ठाकुरने 'गुरु चरित' नामसे भी संकर-भाषणकी एक विस्तृत जीवनी लिखी थी। यह ग्रन्थ पद्यमें था। पुरपोत्तम विद्याबाणीने १५६० ई के आसपास प्रयोग रत्न माता नामसे एक संस्कृत-व्याकरण लिखा था। संस्कृत भाषाको सहज ही में बोलने और समझनेके उद्देश्यसे यह व्याकरण लिखा गया था।

इसी कालक गोपाल मिश्रने गीता-भाषणके बुने हुए श्लोकोंका अक्षरमया रूपांतर कर बीषा-रत्न नामसे प्रस्तुत किया। इनके अलावा धंजबुद्ध बध महिषासुर बध परधर्म निरूपण आदि ग्रन्थ भी लिखे। मोचिर मिश्रने पीताम्बर पद्यमें 'रूपान्तरकर गीता माहात्म्य' नामक ग्रन्थ प्रस्तुत किया। वीचित्र मिश्रपर भी संकरदेवका प्रभाव देखा जाता है। इसकी भाषा रमयुक्त और अलंकारपूर्ण है। मार्कण्डीय भट्टाचार्य नरनारायण राजाका समा पण्डित था। मार्कण्डीय भट्टाचार्य भी संकरदेवका अनुयायी था और उसने भविष्य पुराण स्वयं छन्द रहस्य और भावबलकी रचना की थी। स्वयं छन्दमें अपनी जीवनीके साथ-साथ भी संकरदेवके बारेमें भी उल्लेख था। कमरि अथवा पीताम्बर बायणने विराट् पर्वके कुछ अक्षर अक्षरमया अनुबाद किया। 'विराट् पर्वका' कुछ अक्षर भी इसमें अनुविष्ट किया गया था। विद्या बचानने भीष्म पर्व का अनुबाद और पातालि काण्ड रामायण की रचना की। शशीनाथ द्विव नामक मिश्रने महाभागक 'तमा पर्व' और 'द्वोग पर्व' का भाषान्तर किया।

दस दशममें जीवनी साहित्यकी परम्परा भी अक्षरमया साहित्यमें चमक उठी। ये जीवनीया अक्षरम ही आधुनिक जीवनीयोकी तरह नहीं थीं। ये जीवनीया अक्षर-

महान् भीरु जने-मुद्गलके सम्बन्धमें ही लिखी जाती थी। उस समय इन बीरनिर्घोषा चरित कहा जाता था। चरितकारोंमें द्विजभूषण रामचरण ठाकुर, रैप्यारी ठाकुर, रामानन्द द्विज भादिका नाम प्रमुख हैं। द्विजभूषणने वंकरचरित और अत्रामिन उपाख्यान नाटक लिखे थे। रामचरण ठाकुरने वंकर-भाषण सम्बन्ध नामक रहस्यवादी भक्ति ग्रन्थ 'कम बख' नामक नाटक और वंकरचरित नामक बीरनी लिखी है। रैप्यारि ठाकुरने गुहचरित नामक ग्रन्थ लिखा है। जिनमें भी वररत्न और भी भाषणदेव दोनोंकी बीरनी हैं। उनमें नृसिंह यात्रा और 'स्वयम्भूत' का नाटक भी लिखे हैं। रामानन्द द्विजने भी वंकरचरित और भवानी पुरिया ज्ञानाकी बीरनी लिखी।

इस कालक अन्तिम भागमें श्रीमद्-भाषण पुराणके विभिन्न स्कन्धोंका अममिया पद्यमें क्यान्तर हुआ है। क्यान्तरने उमक 'बनुर्भ' स्कन्ध का क्यान्तर और राधाचरित लिखा। हरिदेवने पंचम स्कन्ध का अनुवाद किया। अन्तिमने 'बनुर्भ' और पंचम दोनों स्कन्धोंका अनुवाद किया। गोपाल चरम द्विजने नृनीय और अष्टम स्कन्धका क्यान्तर किया केमबदेवने भाषणके नवम स्कन्ध का अनुवाद किया। इसी प्रकार महानुष्य भी वंकर देवने श्रीमद्भाषणकी जो परम्परा अमममें स्थापित की थी उसकी परम्परा निम्नर अमनी रही और यही वैष्णव आन्दोलनको भी बन मिलता रहा। 'भी समय पुस्तोत्तम यज्ञरतिने बीरिका छन्द' नामक ग्रन्थका निर्माण किया। इसमें ब्राह्मण और बौद्ध धर्मका पतन दिखाकर वैष्णव धर्मका प्राधान्य दिखाया गया है। 'मने स्रयामन' नामक एक दूसरे धर्मकी रचना भी है।

उत्तर वैष्णव कालमें भक्तिमूलक ग्रन्थके अलावा दूसरे विधियोंके ऊपर भी ग्रन्थ लिखे गए थे। यज्ञि ज्योतिष स्मृति आदि विधियोंपर भी ग्रन्थ लिखे गए। श्रीधर कन्दलीन ज्योतिषका माध्य ब्रह्म बहुत कायस्थने मीमांसनीके गणित शास्त्रका अममिया क्यान्तर किया है। मीमांसनीका अनुवाद 'विज्ञानतंत्र' नामके ग्रन्थ है। ज्योतिष ब्रह्ममणि नामक ज्योतिष ग्रन्थ भी इस समय उपलब्ध है। पीताम्बर मिश्रान्त बामीणने कौमुदी नामक १५ खण्डोंके स्मृति ग्रन्थकी भी रचना की थी।

दरपीणिके मनुष्यपर इस समय अनेक यौगिकी भी रचना हुई थी। इन यौगिकी कई संवह अवनक निकल चुके हैं।

उत्तर वैष्णव काल (१६२० ई० से १८२६ ई० तक)

वैष्णव-काल और उत्तर वैष्णवकालके बीच विद्येय रूपमें यह अन्तर है कि यहाँ वैष्णव कालमें वैष्णव-भक्ति-भोगवा ही माहिर्यमें भोगवाना था यहाँ उत्तर वैष्णवकालमें इनका जोर मन्द होकर वैयधिक विधियोंका प्राधान्य अधिक होने लगा। किन्तु इनका अर्थ यह नहीं है कि इस कालमें वैष्णव प्रभाव रहा ही नहीं।

वैष्णवकाममें साहित्यके क्षेत्रमें मोटे तौरपर दो प्रधान मसल देखे गए थे। एक तो यह था कि श्री संकरदेवने भागवत पुराणके आधारपर विष्णु वैष्णव धर्मका आदर्श साहित्यके सामने रखा। दूसरा लक्षण था—भट्टदेवके द्वारा गद्यशैलीका प्रतिपादन। उत्तर वैष्णव कालमें इन दोनों लक्षणोंका विकास हुआ है। समूचे अष्टमपर धीरे-धीरे आहोम शासनका स्वामी विस्तार हो जानेके कारण श्री अष्टमिया साहित्यके विस्तारमें सुविधा और अनुकूल अवस्था प्राप्त हो सकी। अतः इस कालके साहित्यके लिए विभिन्न विद्याओंमें अक्सर होनेके निमित्त रास्ता खुल गया।

महाभारतके विभिन्न पर्वोंके अष्टमिया अनुवादका दूसरा दौर इसी कालमें प्रारम्भ हुआ। सापर अड़िने वनपर्वके आधारपर 'सुमंतली वध' नामक काव्य-रचन की रचना की। विष्णुराम द्विजने 'वातात्म' ग्रंथकी रचना की। सिष्ट भट्टाचार्यने रामायणके आधारपर 'सिमुपान वध' का रूपान्तर किया। रामोवर शासने 'ब्रह्मपर्व' काव्य पर्व का और राममिथने भीष्म पर्व का अनुवाद किया। कविराज मिथने महापर्व और लक्ष्मीनाथ द्विजने धाम्नि पर्वका अनुवाद किया। अठारहवीं शताब्दीमें पुरुषोत्तम द्विजने महाप्रस्थानिक पर्व और मुपल पर्वका अनुवाद किया। अनन्त ठाकुर आठाने महाभारतसे हटकर 'भीराम कीर्तन' और 'त्रैलोक्य' की रचना की। उसमें विष्णु और राम दोनों अवतारोंके बारेमें वर्णन है। वह रामायण धिमु-रामायण की तरह सिधी गई है।

रघुनाथ महत्तने रामायणकी पद्यमें लिखनेका प्रथम प्रयत्न किया है। उसमें 'सर्भूजय' और 'अर्भुन रामायण' नामक और दो ग्रंथ लिखे हैं। रघुनाथ महत्त पश्चिम व्यक्ति थे और कदा रामायण नामक उक्त ग्रंथ रामायणमें कथानकके साथ-साथ आदर्शका भी प्रतिपादन किया है। अतएव उसके चार खण्ड ही प्राप्त हुए हैं। आदि अयोध्या बरम्भ और किष्किन्धा। यह मूल रामायणका संक्षिप्त अनुवाद है। कथा-रामायण अष्टमिया पद्य-साहित्यकी शृंगारामें तीसरी कड़ी है। श्रीसंकरदेवने पद्य-धर्ममें पद्य भाषाका जो प्रारम्भ किया था भट्टदेवने उसे सुदृढ़ भूमिपर स्थापित किया और रघुनाथ महत्तने बम्भीर और अनंकार प्रधान भाषाके साथ-साथ बरम्भ भाषा तक उसे पहुँचाया।

रामायणके आधारपर बहुत नारे इन्ध उम लक्षण मिले गए। बंयासमशासने 'नीला वनवासकी रचना की। भवदेव द्विजने अरवमेप यत्र' इतिहास पश्चिमने सुनारन शीनि-रामायणक मनुनेपर 'अंगर रावबारी' रचना की। अनन्तने 'पद्य-चरित' अथवा लक्ष्मीरती मनिहृत्त की रचना की है जिसमें इनुमानके द्वारा ज्योतिषीका रूप आरम्भपर मनिहृत्तका वर्णन किया गया है।

राम मिथने आहोम राज-वर्षाणिके आशेगपर भीष्म पर्व विष्णु शमकि 'हिमोत्तम' और बरम्भिके 'पुनरा चरित' का पद्यानुवाद किया है। रामनाथ महत्तने 'नन्द मुक्तावली' नामक वैष्णव मन्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ लिखा। रामकन्ध

बरपास मोहूर्तिने हयग्रीव माचबर आख्यात और योमिनी-उत्पन्न नामक दो ग्रन्थ लिखे।

कोच राजाओंकी तरह ही आहोम राजाओंने भी असमिया साहित्यके उत्पादनमें योगदान दिया है। आहोम शासक बरं गुरुसे बहुत दिनोत्तर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाए रखनेमें ही प्रयत्नशील रहा। अतः इस कालमें उसकी पृष्ठपोषकतामें आहोम भाषामें ही अपने हस्ताक्षर और सामान सम्बन्धी अस्य ग्रन्थ लिखे। किन्तु आहोम साम्यका जब विस्तार बढ़ा और इसमें जब प्रीकृता आई तो बहु विघात जननमूहके प्रभावकी बहुत दिनोत्तर और बाधा नहीं दे सका। आहोमोंको अपनी बन्ध-भूमिका मोहू सराक सिध छोड़ देना पड़ा और अपने साम्यके विनाश जननमूहके साथ मिश्र जाना पड़ा। इसी कारणसे असमिया साहित्यकी उन्नतिमें भी उसे हाथ बँटाता पड़ा।

आहोम राजाओंमें खसिहू और शिबसिहू भाषा-साहित्यके प्रति अनुपयी थे और उनकी पृष्ठ-पोषकतामें अलमिया भाषा-साहित्यकी प्रगष्ट उन्नति हुई। आहोम राज-समामें ब्रह्मवैवर्त पुराण गीत नाचिन्त्य अनुन्तना आदि धर्म निरुपेय प्रन्थोंका समाहर था। उपरोक्त दोनों राजाओंने गीत-भौविन्दके अनुकरणपर असमिया भाषामें कविता भी की थी। शिबसिहूकी कविताको उत्कामीन असमिया साहित्यमें अच्छा स्थान भी मिला है। इसी आहोम राजाओंकी पापकृतास गीत पोचिन्दका असमिया छन्दमें अनुवाद कविराज चक्रवर्तीने किया। उसीने रानी फूर्नस्वरीकी आज्ञान 'संज्ञ-भूङ्क बध-काव्य' रानी प्रमदेरवरीकी आज्ञासे 'ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण बल बध और महुन्तता का भी अनुवाद किया। संस्कृतमें भी उसमें विद्व उत्सवके बारेमें एक विवरण प्रस्तुत किया गया है। मास्वति नामक संस्कृत ज्योतिष शास्त्रका भी अनुवाद उमने किया।

इस कालमें पुराणोंके अनुवाद सम्बन्धी एक नया दौर भी प्रारम्भ होता है। ब्रह्मवैवर्त पुराणके अनुवादके सम्बन्धमें पहले ही उल्लेख किया गया है। इस पुराणका यही प्रथम अनुवाद है और इसके पहले इस पुराणके प्रतिपादित विषयका अलमिया रामायण और साहित्यमें विशेष स्थान नहीं था। शिबनाथ कन्दलीने कल्कि पुराण और 'मार्कण्डेय चण्डीका अनुवाद किया। चण्डीके अनुवादक समय उसमें 'कल्कि पुराण' सामान पुराण' और 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' का स्थापना भी है। मार्कण्डेय चण्डीके कई अनुवाद इस समय हुए। रंगनाथ चक्रवर्ती मधुभूदन मिश्र इन दोनोंने उमका अनुवाद किया। कबिदेवर विद्याचन्द्र भट्टाचार्यने इतिहासका अनुवाद किया। अलन्त आचार्यने आनन्द लहरी नामक काव्य-ग्रन्थकी रचना की और द्विज भूम नापने अर्म-अंवार नामक एक छन्दकी रचना की।

पुराणोंके अनुवादका जो सिममिता इस समय प्रारम्भ हुआ उसका अनुवाद भाषाजन विमन बिष्णु पुराण और मात्स्य उत्पन्न का नाचिन्द्रामने यम-वीणा का पञ्चपुराण विजने लम्पूर्य बिष्णु पुराण और धर्म पुराण का रामयोचिन्दने



'ब्रह्माण्ड पुराण और विष्णु पुराण का ब्रह्मोत्पत्ति द्वित्रये ब्रह्मवैवर्त पुराण' के द्वितीय अंश अष्टमका दुर्बेस्वर द्वित्रय ब्रह्मवैवर्त पुराणके 'प्रकृति अष्ट' का मुखनेस्वर वाचस्पति मिश्रने बृहन्सारदीय पुराण का अष्टमिया अनुवाद प्रस्तुत किया। ब्रह्मवैवर्त पुराणके इस समय बहुत सारे अनुवाद प्राप्त हुए हैं। आद्योम राज-शक्तिने रामपुराणके मतवादकी पुष्टि की थी जिसमें अपने मातृम मतकी पुष्टि हुई थी।

पुराणोंके इन अनुवादोंके साथ-साथ अनेक कवियोंने छुटकर विभिन्न रचनाएँ भी की थीं। इन रचनाओंमें अनुवाद और मौलिक दोनों प्रकारोंकी रचनाएँ मिलती हैं। इन रचनाओंकी विषय-वस्तु वैष्णव मतवादका पोषण यत्न मतवादोंकी पुष्टि। एकान्त भक्तिका भावार्थ्य आदि विभिन्न प्रकारोंकी थी। श्री शंकरदेवके बरपीत और श्रीमद्भक्तदेवकी शोषाके आदर्शपर बहुत सारे भक्तिभक्तक भी इस समय लिखे गए। यस्तुके साथ-साथ हिन्दीके भी अनुवाद कार्य हुआ था। हिन्दी काव्य मुपाकती मधुमालती पाहपुरी और अन्नाबधौका अनुवाद इसी समय पाया जाता है। इनके अलावा राम-चरितमानसका कुछ अपूर्ण अनुवाद भी इसी कालमें पाया जाता है।

रामायण द्वित्रिका "महामोह काव्य" वैष्णव परम्पराका एक उत्प्रेषण बोधक ग्रन्थ है। यह एक काव्य है जिसमें पाप एक पुष्पका लक्ष्य दिखाया गया है। रामायण द्वित्रिके इसी नामके एक नाटकका भी उल्लेख मिलता है।

बंगाली और चरित्त द्वित्रिका अनुवाद भी इसी समय पहले संख्यामें हुआ है। बंगालीमें 'हरद्व राज-बंगाली' प्रमुख है। राज-बंगालीके विवरणके साथ साथ सांवायिक और राजनीतिक अर्थशास्त्रोंका भी उल्लेख इसमें मिलता है। हरद्व राज-बंगालीका सेवक मुर्ययदि ईश्वर था। यत्रिकाल द्वित्रिके राज-बंगाली ग्रन्थ लिखा। रामराज रामकी मूढ़ बीजा भीलकच्छराजका रामोरर देव चरित, रामायण राम और श्रीराम यदुपचिका योपाल अन्नाचरित रवाकाल द्वित्रिका 'बंगाली देव चरित' रामायण द्वित्रिका बंगालीपाल देव चरित अन्वरीत द्वित्रिका देवचदेव चरित विद्यालय उन्नाका अक्षुर चरित आदि विभिन्न वैष्णव धार्मिक ग्रन्थोंकी जीवनिर्वा इस समय लिखी गई थी। ये सभी जीवनिर्वा यद्यमें भी विष्णु यद्यमें विभिन्न एक बृहत् मूढचरित भी इन समय प्राप्त हैं जिसका नाम है 'कदा मूढ चरित' यह एक विद्यालय मूढ चरित' ग्रन्थ है जिसमें श्री शंकरदेव और श्री नाथदेवकी जीवनिर्वाके अलावा उम समयके वैष्णव अन्वोपनकी बृहत् गारी आनधार्मिक भी प्राप्त होनी हैं। अन्विका मन्वजातीय यद्यका एक अष्टम समुदा भी इसमें प्राप्त होना है जिसमें देहाली मन्वजमें प्रचलित माधारम चरित् पाया अष्टमहृत् हुई है। इन ग्रन्थोंके अन्विके द्वितीय फाल्गुनीय मन्व निर्भव कुरम आचार्यका मन्व-चरित' मोक्षिण रामका 'मन्व मन्वराज' आदि यद्य-यद्य ग्रन्थोंमें भी मन्वजातीय वैष्णव मन्वराज और वैष्णव मन्वराज चरितय पाया जाता है। यद्य मन्वजातीय यद्यमें विद्यमान

परसुपमकी कथा बोया में दासबोली टीका सात्वत तन्त्रका अनुवाद, हृष्मान्त्र  
त्रिजके पूर्ण भावकतका पद्य-पद्य अनुवाद पद्य पुराण नामक धार्मिक वाचार्थका संकलित  
ग्रन्थ बाबीरा घर्माका नीतिमताङ्कुर नामक ग्रन्थ भी इसी समय लिखा गया है।

धार्मिक और साम्प्रदायिक मतवालोंके विभिन्न ग्रन्थोंके अतिरिक्त इस  
कालमें सम्पूर्ण सांसारिक विषयोंपर भी असमियामें ग्रन्थ रचे गए हैं। इनमें बहुत सारे  
पद्यमें ही हैं और उनका अनुवाद भी हुआ था। वैपयिक विषयोंमें सर्वप्रथम असमिया  
पद्यका व्यवहार इन ग्रन्थोंके माध्यमसे हुआ है। इससे पहले केवल धार्मिक और  
साम्प्रदायिक विषयोंमें ही इसका साधारणतया व्यवहार होता था। काशीनाथका  
बंकर भार्या इस समयका उत्सेखनीय ग्रन्थ है जिसमें एक गणितके असावा बमीनकी  
पैमाइय और बर्गफल निकालनेके नियमोंका उत्सेख है। घुमकरके 'भी हस्तमुद्रावली  
नायक अनुवाद ग्रन्थमें यमिनयके समय प्रबोधनमें आनेवाली हस्तमुद्राओंका वर्णन है,  
जिसमें साय-साय मुद्राओंका चित्र भी दिया गया है। मूल संस्कृत स्तोत्रोंका उवाहरण  
के साथ अनुवाद दिया गया है। बाहोम राज-रानी अम्बिकादेवीके आबेधानुसार  
शुकुमार बरकाठने हस्ति विद्यार्यब नामक ग्रन्थका प्रणयन किया। यह भी चित्रमुक्त  
ग्रन्थ है जिनका बंकरन रितबर और बोछाइ नामके दो चित्रकारोंने किया था।  
इसमें हाथीका वर्णन उसके रोग और निदान और उसको पालन करनेके तरीकोंका  
उत्सेख है। इसमें किस प्रकारके हाथीपर किस प्रकारके आवरीको बड़ना चाहिए,  
इसका भी उत्सेख है। असमके शासकों द्वारा अधिक संख्यामें हाथीका उपयोग किए  
जानेके कारण ही इस प्रकारके अमूल्य ग्रन्थका प्रणयन उस समय हुआ था। बोड़ेके  
रोय और निदानके सम्बन्धमें भी 'बोड़-निदान' नामक ग्रन्थ लिखा गया है जिसमें  
बोड़के प्रकारके बारेमें भी उत्सेख है। इस ग्रन्थके लेखकका अजतक कोई पता नहीं  
बसा है। वैपयिक विषयोंपर लिखे गए कामरत्न तन्त्र नामक मोरचानाथके नामके  
साथ बोड़े हुए एक संस्कृत ग्रन्थका अनुवाद भी असमियामें हुआ। इसमें वनस्पति  
और औषधियोंके बारेमें उत्सेखके साथ-साथ संकर द्वारा पार्वतीको अपने बधमें  
रखनेके उपायों आकर्षण स्तम्भन मारण आदिका विस्तृत वर्णन दिया गया है। 'हर  
पीरी सम्वाद' नामक दाम्पत्य-जीवन पर लिखा गया ग्रन्थ भी इस समय रचा गया।

इस कालमें सबसे महत्वपूर्ण साहित्य हुआ— बुरंजी साहित्य जिसमें  
आहोम शासनका धारावाहिक विवरण लिपिबद्ध किया गया है। यह इतिहास साहित्य  
असममें पहले पहल आहोम शासकोंने ही प्रारम्भ किया था और शुरूमें यह साहित्य  
आहोमोंकी अपनी उपजातीय भाषामें ही लिखा गया था। किन्तु आहोमों द्वारा  
असमिया आतीयता और भारतीय सनातन धर्म-ग्रहण करनेके बाद यह बुरंजी साहित्य  
असमिया भाषामें ही लिखा जाने लगा। यह बुरंजी साहित्य बड़ा विस्तृत है और  
आहोमोंके असमपर हुए शासकोंकी शासनका धारावाहिक वर्णन इसमें मिलता

है। यह बरंजी साहित्य कई दृष्टिकोणोंसे महत्वपूर्ण है। पहली बात तो यह है कि इसका राजनीतिक इतिहास मिलनिलेखार प्राप्त होता है जो तत्कालीन अथ भारतीय साहित्यमें नहीं के बराबर है। दूसरी बात है कि इन बुरंजियोंके जरिए असमियोंके एक प्रकारके राजनीतिक साहित्यकी सृष्टि हुई। तीसरी बात है कि असमिया गद्य साहित्यका एक मिलनिलेखार विकास इसमें मिलने लगा। चौथी बात है कि राजनीतिके अलावा सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक और धार्मिक वातावरणोंका पैदा-जोका प्राप्त हो सका। पाँचवीं बात है कि आहोमोंके साथ असमिया और असमकी सीमाओंपर बसी दूसरी उपजातियोंके सम्बन्धका परिचय प्राप्त होता है। असमिया भाषा-साहित्यके लिए इस बुरंजी साहित्यकी सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि एक सबसे असमिया भाषाके निर्माणमें इसके द्वारा असमियेपर भाषाओंसे स्वतन्त्र रूपसे अथ और अभिव्यक्तिका ग्रहण किया गया। इसकी भाषा पम्पीर, बरेलू और अभिव्यक्त्यापूर्ण है।

बुरंजी साहित्यमें 'पुराण अथमबुरंजी' ही सर्व प्राचीन माना जाता है। स्वर्न मारामखरेव महापत्र पर अमरनाथ नामक अथम बुरंजी नामके प्रकाशित हुआ है। 'पाटकाह बुरंजी' में आहोम-मोंगलोंके सम्बन्धके बारेमें उल्लेख है। आहोम सत्रकर्मयोधी हुक्काथ बतवाकी असम बुरंजी धीनाथ डारका पुङ्गुबुड़ीया बुरंजी कषाठी बुरंजी जमन्गीया बुरंजी त्रिपुरा बुरंजी अथम बुरंजी और काम रण बुरंजी अथमक प्रकाशित हा चुके हैं। आहोम राज्य-विप्लवके समय बहुत सारे बुरंजी अथम जमा किए गए थे किन्तु अथमक प्राप्त प्रकाशित और अप्रकाशित बुरंजीसे यह कहा जा सकता है कि अब भी उनका विकास साहित्य अभिविष्ट है।

इन प्रकार उत्तर वैष्णवकालका अथमिया साहित्य अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तिके पक्षपर अग्रसर रहा है। मस्लिमकालके बाद हिन्दी साहित्यमें जिस प्रकार ऐतिहासिक नामीन ह्यासोसमुष्ट साहित्यका मुगल हुआ था कमने कम विप्लवसुकी सृष्टिके अथमिया साहित्यमें ऐसा नहीं हुआ बल्कि वैष्णव कालके मुगल हुक्कर उत्तर वैष्णव नामके अथमिया साहित्य विकास क्षेत्रमें उत्तर आया था और जीवनमें आग्रसक नामी विप्लवकी रचनाएँ होने लगी थी इस कालमें एक प्रधान सत्ताधीय विप्लव—पट-साहित्यका धीरे-धीरे ज्ञान और गद्य साहित्यका विकास। अथमिया भाषा साहित्यने स्वाभाविक रूपसे अथमक जो प्रवृत्ति ली थी वह ब्राह्मण अथम नामके बसी होनी तो आग्रस आधुनिक अथमिया साहित्य और ही प्रयासका हला। किन्तु ईस्वी सन् १८२६ में अंग्रेजोंका अथमपर अधिपार होनेके बरफान् अथमिया भाषा-साहित्यके जिस आधुनिक प्रयोजनका अधिपार हुआ उसके कारण स्वाभाविक विकास पंचम नाम पीछे हट गया।

[नोट—सन् १९२२ से आग्रसके अथमिया साहित्यका संश्लेषण परिचय विधिभी आना—अथमिया—अथमियाका क्षेत्रीयें दिया गया है।]

रघुनाथ चौधुरी

[ कवि-परिचय ]



## रघुनाथ चौधुरी

### जन्म तिथि व बचपन

जसमके ज्योत्सु कवियोंमेंसे सेष्ठतम विहंगी कवि भी रघुनाथ चौधुरी का जन्म २० जनवरी सन् १८७९, सुइवार, सुस्ता ज्युर्बी पनेस पूजाके दिन कामरूप त्रिसेके (जसम राज्यके) अन्तर्गत काजोपाद्य नामक गाँवमें हुआ। उनके पिता स्व भोलाभाब चौधुरी एक धनी किसान थे और उन्हें जर्बोंमें वे भोलाभाब ही थे। चौधुरी जीकी माताका नाम क्या लता चौधुरी था। वे भी बति क्याबीन और धर्मपरायणा पत्नी थीं। चौधुरीजी अपने माता-पिता की तीसरी संतान हैं। उनके एक बड़े भाई और एक बहन थी।

कविके जन्मके दिन ही कुम-पुरोहितने जाकर स्व भोलाभाबजीसे कहा था—  
“तुम्हारे बंशका यह रघुनाथ है। रामचन्द्रकी तरह यह भी तुम्हारे बंशका नाम रोजन करेगा।” पुरोहितजीकी बात सब निकली। जन्म-पत्रिकाके अनुसार कविका नाम था—सोमनाथ चौधुरी। लेकिन पुरोहितजीकी प्रविष्यवाणीके साथ उनका दिया हुआ नाम भी लोकप्रिय हो जाता। और आज कविको “रघुनाथ” नामसे ही सभी जानते हैं—“सोमनाथ” नाम ठो जन्म-पत्रिकामें ही रह गया।

कविका बचपन बहुतही कष्टपूर्ण रहा। बचपनसे लड़ककर बिरजानेके कारण बाहिना पैर हनेछाके लिए बेकार हो गया और बायाँ पैर भी बहुत कमजोर हो

पया। जब आप भी महीनेके थे तभी यह दुःख बटना पटी। विधिवी कोपकृष्टि इनसे ही प्राप्त नहीं हुई। जब आप चार वर्षके थे तभी आपके दोनों भाई-बहन इस दुनियासे चल बसे। इस बटनाके एक महीने बाद ही आपके माँ भी इस दुनियामें न रही। पिता स्व भोगामाय चौधरीजी पास हो गए। सने-सम्बन्धी और पड़ोसी सारी आयदाद बाँट लेनेकी कोशिश करने लगे। कबिके दिन बहुत ही कष्टमय हो पड़े। अयातशात नामक गाँवके एक सज्जनने उन्हें आपस दिया। भोगामायजी चौधरी जब स्वस्थ हुए, तब वे कवि चौधरीको फिर अपने घर ले गए।

### शिक्षा बीसा

आठ वर्षकी अवस्था तक वे चलते योग्य नहीं थे जब कवि चौधरीकी प्राथमिक शिक्षा घरमें ही हुई। कबिके परिवारकी अल्पवस्था देखकर भोगामायजीके मित्र स्व बालक राम चौधरीजी कबिको अपने घर श्रेणिहारदियामें ले आए, और वहाँ उन्हे बालक रामजीके पुत्र स्व पर्यराम चौधरीके पास मोहाटी पहुँचा दिया। पर्यराम चौधरी रघुनाथजीको अपनी सतानकी ही तरह मानते लगे। आज तक कवि इस घर और परिवारको अपना घर और परिवार ही मानते आए हैं।

अतनके स्कूल और कनिजामें उस समय अपना आपा प्रथमिष्ठ भी है कवि रघुनाथ चौधरी एक विद्वित स्कूलमें भर्ती कटाए गए। परके वर्षके कारण नियमित रूपसे वे स्कूलमें हाजिर नहीं हो पाते थे। फिर भी कवि परीक्षाओंमें पीछे नहीं रहे। वार्षिक परीक्षामें वे सर्व प्रथम या तृतीय स्थान हुमेसा लेते ही थे। लेकिन एक दिनकी घटनासे कबिको स्कूली-पिछा छोड़कर प्रकृतिसे शिक्षा लेनेको बाध्य किया। आठवीं कक्षाकी छद्मपढ़ी परीक्षाके परिणामके प्रकाशमें उन्हें इस सम्बर अधिक विमता था। किसी कारण वरिणके अध्यापकने वे एक कबिजीको नहीं दिए। चौधरीजी उतके लिए आपस करने लगे जो कबिणके गिताक और साव ही प्रभाव गिताकजीको भी नागवार गुजरत। कबिके स्वाधीन मनमें किरोहकी चिनगाटी बाध उठी। कवि चौधरी जी आपकर तैयार नहुँक। वहमि वे किसी तरह मोहाटी सोटा माए गए। लेकिन अपने पिता और पर्यराम चौधरीजीके समझाने-बुझाने पर भी वे स्कूल जानेको राजी नहीं हुए। कबिके पिता स्व भोगामायजीको यह बात बहुत ही बुरी लगी—और उन्होंने गुस्सेमें आकर यह दिया—“आजने ठेक भुँद नहीं देरुया”। फिर भी कवि अटन रहे। अग आठवीं कक्षासे ही कवि रघुनाथ चौधरीकी स्कूली शिक्षा अन्त हुआ।

### राजकीय

राजकीय छात्रजीवन समाप्त होनेके बाद ही चौधरीजीकी प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ हुआ। वे अध्यापकके माक-माक अध्ययन भी करने लगे। तबरीकजी

ही एक प्राथमिक कन्या पाठशालामें चौधुरीजी अध्यापनका कार्य करने लगे। कविके हृदयमें मानव विदुषोंके प्रति एक गभीर भावना जागृत हुई। विमुखाकी मलाईके लिए "महना" (मैना) नामकी एक पत्रिकाके सम्पादनका भार भी चौधुरीजीने अपने हाथमें ले लिया।

इसी बीचमें चौधुरीजीके पिताजीका भी देहान्त हो गया। संसारम सब रतका कोई नहीं रहा। सभी एक एक कर कविको बकेसा छोड़कर चले गए। चौधुरीजी पिताकी मृत्युके संवारसे अभिमूढ़ हुए अठ उन्होंने योहाटीसे बाहर बसंतसामें ही रहनेका निश्चय किया। लेकिन बच्चाके आर्कष्यजने कविको बहाँ नहीं रहने दिया— बरबस उन्हें बोहाटी सीटना पड़ा।

योहाटीमें आकर इसबार कवि सामाजिक कामोंमें जुट गए। आसकर संघीत-अनुष्ठान पुस्तकालय स्थापन मन्त्रिक-प्रकाशन आदि कामोंमें दिनचरसी लेने लगे।

सन १९०१ में असमके एक मात्र सरकारी कलित्व कन्य कविकाकी स्थापना हुई। इस कलिकके उद्घाटन समारम्भमें कविजीने "आवाहन" नामक स्वरचित कविताका पाठ किया। प्रारम्भिक अवस्थामें लिखित 'आवाहन' कवितामें प्रकृति-संताप असम माताकी अपरूप प्राकृतिक दृश्यावलीका वर्णन कविने किया था। कवि उस समय गोहाटीके प्रायः सभी संघीतानुष्ठानोंमें भाग लेते थे।

सन् १९११ में स्व सत्यनाथ बराके सम्पादनमें "बोनाकी" नामक पत्रिकाको पुनर्जीवित किया गया और चौधुरीजी इसके सहायक सम्पादक नियुक्त हुए। स्व बराजीके सान्निध्य और "बोनाकी" के सम्पर्कमें आकर चतुनाथ चौधुरीजीकी साहित्य-म्यूहा प्रबल हो उठी। सन् १९०४ में कवि स्वयं कम्कलता आकर कामकाज सिंघर कर गए थे। लेकिन कुछ अनिवापकारक बधा "बोनाकी" का प्रकाशन प्रबल हो गया। फिर भी "बोनाकी" (जुमन्) ने असमिया साहित्यके एक बुनकी सृष्टि की थी। सन् १९०९ में इसकी स्थापना स्व अत्रकुमार अमरनाथाने कम्कलतामें की थी। सन् १९११ में इसी "बोनाकी" में कविकी "मरमर परकी (प्यारे परकी) नामक कविता प्रकाशित हुई थी। यह चौधुरीजीकी कविताका प्रथम प्रकाशन था—यहसी प्रकाशित कविता एक पक्षीको लेकर लिखी गई और अन्तमें पाकर उन्हें बिहूनी कवि ही कहा जाने लगा। पंजीक जीवनको लेकर जितनी कविताएँ कवि चौधुरीजीने लिखी हैं—सम्भवतः किसी भी भारतीय भाषाके एक भी कविने उतनी कविताएँ नहीं लिखी होंगी।

बोनाकी के प्रतिरिक्त और कई पत्रिकाओंके सम्पादनमें भी आप सम्बन्धित थे। सन् १९२३-२४ में जेसम निकलकर आपने "महना" नामकी बात पत्रिकाका सम्पादन किया था। सन् १९२३ में आपके सम्पादनमें ही असमिया नामकी पत्रिका निकली थी। बोनाकी ने त्रिम तरह असमिया साहित्यमें



रोमाण्टिसिज्म (Romanticism) का आतोक सम्पात किया था। ठीक उही तरह जयन्ती ने हमारे साहित्यमें 'आधुनिक कविता' का उद्बोध किया था। रोमाण्टिक युगके एक घेष्ठ कवि होनेपर ही आधुनिक कविताको इस तरह प्रोत्साहन देकर कविने अपनी जगहटा और प्रवृत्तिवापी मनोभावनाका परिचय दिया है। असमिया भाषाके अग्रिकठर आधुनिक कवि जयन्ती पत्रिकाकी ही कृष्टि है। तीन वर्षके बाद जयन्ती भी बन्द हो गई। बादकी कवि 'सुचि' नामकी और एक पत्रिकाका सम्पादन करने लगे थे। पत्रिका सम्पादनकी यह अन्तिम प्रवेष्टा थी। लेकिन वे इसमें भी सफल नहीं हो पाए। तीन वर्ष चलकर, सुचि ने भी असमिया साहित्य संसारसे बिदा ले ली। फिर भी चौधुरीजी हठोल्लाह नहीं हुए। मात्र ८४ वर्षकी इस बुढावस्थामें भी पीहाटी कविता समा (एक साहित्यिक संस्था) के द्वारा एक उष्ण कौटिकी पत्रिका सम्पादन की कल्पना से कर रहे हैं।

पत्रिका सम्पादनकी तरह पुस्तकामर्चकी स्थापना करनेमें भी चौधुरीजीने उत्साह दिखाया। सन् १८९२ ई में पुस्तकालय स्थापित करनेका आपने पहला प्रयास किया। सन् १८९३ में इसे त्पाई बन्द दिया—लेकिन सन् १८९७ के विपद् भूकम्पमें घर और पुस्तकें सभी भूकम्पमें विधीन हो गईं। सन् १९४ में पुस्तकालय स्थापनार्थ पीहाटी घहरमें एक आम समा आपने बुलाई थी।

इन कार्योंको करते हुए ही कवि चौधुरीजी महामहोपाध्याय धीरेस्वराचार्य और मैत्रिणी पंडित बालकृष्ण झाके संसर्गमें आए और संस्कृत साहित्यका रसास्वादन करने लगे। उनकी कविताके उत्तम प्रश्नों द्वारा ही उनके अभ्यनगरीत मनोवृत्तिका परिचय मिलता है।

कविके जीवनमें चारों तरह निराशाजनक परिस्थितियाँ भी थीं। बचपनमें आप लंगड़े हो गए, माई-बहन माता-पिता—एक-एककर सभी चल बसे। स्तुती शिषाका भी अन्त हुआ—गिराकोंके अविचारके कारण पत्रिकाएँ बन्द हो गईं। प्रबन्धके अभावसे पुस्तकालय विनष्ट हुए। स्कूलकी नीरुटीमें भी नहीं अभ्यवस्था रही। सन् १८९९ ई में असम सरकारने हो पाठशाळाओंको बन्द कर दिया—एक ही महामहोपाध्याय पंडित धीरेस्वराचार्यजीकी मगिबुस आपनकी संस्कृत पाठशाळा तथा हुपरा रघुनाथ चौधुरीके अभ्यासनबामा बातिका स्कूल। महामहोपाध्यायजीमें अपना केतव बीसने पचास और चौधुरीजीने बाएँ रगवैसे तीन रगवे करनेकी सरकारने अनीत की थी। सरकारने केतव तो बढ़ाया ही नहीं बरन् एक भी बन्द कर दिए।

इनसे चौधुरीजीके मनको बहुत ही चोट पहुँची जिससे कविप्यमें तथा इन तरहकी सरलपरीत मनोवृत्तिका वै विरोध करन लगे। अस्वकी आन्दोलनने मेकर अन्तके सामग्रिक भाषा आन्दोलन तक राग्यके मधी वैयक्तिक आन्दोलनमें चौधुरीजीने लक्ष्य भाग लिया। फिर भी चौधुरीजी विनी भी राजनीतिक इन उद्देशके

सबस्य नहीं बने। साहित्य और भारतीय संस्कृतिके एकनिष्ठ सेवकके रूपमें ही राष्ट्रीय और मानवीय स्वार्थ रक्षाके कारण उन आन्दोलनोंके साथ जा मिले। स्वाधीन चिन्त उदार मनोभाव सिन्धु सुलभ आवेग प्रबलता हंसमुख और मीठी बोधी रचनाएँ चौधुरीजीके आकर्षक गुण हैं। सन् १९०५ से १९७ तक चौधुरीजी बेसतमा ग्राममें खेती-बाड़ीमें जुट गए थे। कृषि जीवनके साथ ही उनके विप्लवी मनको बढ़ावा मिला। सन् १९०८ में स्वदेशी आन्दोलनमें भाग लेने से पीछाही चले गए और छात्र-संस्कृतिके संयोजक कार्यमें लगे गए। उनकी आवेगमयी बकनृतासे छात्र-संस्कृत बहुत ही अनुप्राणित हुई थी।

सन् १९११ में अर्बन पारिवर्त्तिने योहाटीमें एक माध्यमिक स्कूलकी स्थापना की। रचनाएँ चौधुरी उस स्कूलके एक शिक्षक नियुक्त हुए—लेकिन वहाँ भी आप प्यासा बिन नहीं रह सके। सन् १९१४ के विप्लव मुठमें उस स्कूलके सभी पारिवर्त्तिकों को अंग्रेज सरकारने गिरफ्तार कर लिया। फलस्वरूप स्कूल बन्द हो गया। चौधुरीजी फिर बेकार हो गए।

कविजी गिरास होकर फिर बेसतमा लौट गए और तैती आदिमें ही प्यान देने लगे। गौहरी जीवनकी विफलतासे ही चौधुरीजीको हमारे सामने एक श्रेष्ठ कविके रूपमें लाकर खड़ा किया है। सन् १९१४ से १९२१ के अरधिया कविजीने मिलनी कविताओंकी रचना की—अधिया साहित्य मञ्चारमें वे सब एक-एक मोती स्वरूप ही हैं। बृहत्ताके अज्ञातवास मिस्टरके 'हॉर्टन पीरियड' की तरह कवि रचनाएँ चौधुरीजीके सात वर्षके कृषि-जीवनसे उनके मनकी सुकुमार बुद्धिको अधिक प्रभावित और प्रस्तुतित किया। "बेसतमा का मंडान" कविके लिए गणपनापार सिद्ध हुआ। "केठेरी" "बहिरुठप" और "सादरी" आदि काव्य-सम्बन्धी कविताएँ कविजी सूक्ष्म निरीक्षण-संस्कृत निबिड़ उपलब्धि गम्भीर बस्यना और मननशीलताका परिचय देती हैं। बेसतमाकी उर्ध्व भूमिमें जो स्वर्ण-बीज बोया गया था—उसीका स्मृति चिन्ह अर्धिया साहित्यके इतिहासमें अमर रहेगा।

सन् १९२१ में महामानव महारमा नाथीके असहयोग संग्राममें कविने भाग लिया। बेसतमा पाँचके निवासियोंको स्वाधीनता संग्रामके लिए एकत्रित किया और अफीम बन्द करनेके हेतु सत्याग्रह आन्दोलन किया। इन अग्रगण्य सरकारने उन्हें गिरफ्तार किया और एक सालकी सजा कैद की सजा दी। सन् १९२२ में वे बेसतसे निकले और योहाटीमें रहने लगे—वहाँ आज भी रह रहे हैं। उन्हीं समयसे लेकर आज तक कविजी योहाटीके प्रायः सभी सामाजिक और सांस्कृतिक अनुष्ठानोंमें सम्मिलित रहे हैं। आपने कितनी ही समाजोंका सहायता किया—कितने ही मानव स्विकार किए—उनका हिसाब देना कठिन है। चौधुरीजीकी कवि-प्रतिभाके प्रति आदर प्रदर्शितकर "नामरूप संजीवनी समा" ने आपको "कविरत्न" की उपाधि दी है। भारत सरकारकी तरफसे भी उन्हें साहित्यिक पेंशन मिलती है।

सन् १९३६ में आप अंशम साहित्य समाजके सभापति पदके लिए चुने गए। विश्व-  
साहित्य समिति द्वारा कसकच्छामें सन् १९३२ में आयोजित अखिल भारतीय कृषि-  
सभाका सभापतित्व कवि चौधुरीजीने किया था।

सन् १९३५ को उनकी कथा-काम्यकी पुस्तक "नवमस्त्रिका" प्रकाशित  
हुई। चौधुरीजी अब भी निवृत्त हैं और उनकी अप्रकाशित कुछ रचनाएँ अब भी

कवि चौधुरीजी कविताका बाहर अंशमते बाहर भी हुआ। हाम्बुर्गमें  
अमेरिकाके प्रकाशित विश्व-साहित्यके चुने हुए संग्रहमें कविजीकी "बहागीर किया  
(बहागीरीकी सारी) नामक कविताको भी स्थान मिला। उनकी "केतेकी" नामक  
कथ-काम्यका अंग्रेजी अनुबाव भी छपाकर निकला।

कवि आजीवन कुँबारे रहे। प्रकृतिको ही अपना तर्कस्व मानकर विश्वास  
करनेका विचार उन्होंने नहीं किया।

कविजी अब सन्भावस्थाने विस्तारपर पढ़े हुए हैं। फिर भी अनेक नवीन  
प्रवीण साहित्यिकोका जमजम उनके विस्तारके चारों तरफ सगा ही रहता है। कृष्टि  
सकल विस्तृत नहीं रही। फिर भी बोलीमें ही आरम्भको पहचान भते हैं। अशमिया  
या भारतीय साहित्यकी साध-सौन्दर्य बढ़ानेके लिए सगवान उन्हें शीर्षायु प्रदान  
करेंगे।

### कृतियोंका परिचय—

रघुनाथ चौधुरी अपने विद्यार्थी जीवनमें ही कविता करने आ रहे हैं  
और अतीतक उनकी साहित्यिक योगता जागृत है। उनकी प्रथम प्रकाशित कविता  
"मरमर पत्नी" सन् १९०१ को "बोनारी" पत्रिकामें निकली थी। उनकी अन्तक  
की रचनाएँ सामक्यानुसार निम्नप्रकार हैं—

(१) सादरी (पहला कविता संग्रह)—सन् १९११

(२) केतेकी (कथ-काम्य)—सन् १९२३

(३) कारवागा अबका मरमर काम्य (अभिवासर एल्फका काम्य)—  
सन् १९२३

(४) बहिनारा (कविता संग्रह)—सन् १९३१

(५) नवमस्त्रिका (कथा कविता)—सन् १९३५

विश्व साहित्यके महान साहित्यकारके अन्तरेण और अहितय जीवन्तार बाह्य  
बाधावरकता प्रभाव अबाध पहना है यह सृष्टिका नियम है जो जना चौधुरीजी

कीन बच जाने। चौधुरीजी अशमिया भाषाके शुभुमाग कवि हैं और उनके योग्य  
दूरपर बाह्य बाधावरकता प्रभाव पहना गया है। अशमिया अभिधमलि उनकी  
कविताओंमें हुई हैं।

कविका जगम प्रहृष्टिकी घोषमें हुआ था। प्रार्थना वातावरणमें कवि बढ़ा हुआ। अपना कर्मक्षेत्र भी उन्होंने प्राकृतिक बुझावतियोंमें घरे बेसतनाको ही चुना था। प्रहृष्टि निरीसजन ही उन्हें कविता करनकी प्रेरणा मिली थी। चौधुरीजीने स्वयं यह स्वीकार किया है।

यद्यपि चौधुरीजीको स्कन्धी शिक्षा बहुत अधिक नहीं मिली—वे अंग्रेजी आदि भाषाके पण्डित नहीं हा पाए फिर भी वे किन्तुनसीम एवं अम्यपन प्रिय रहे हैं। उन्होंने भारतीय दर्शन और संस्कृत काव्यका गम्भीर अध्ययन किया है। गम्भूट कृत्यके अध्ययनके कारण ही उनकी कविता तलम मन्द-बहुधा हुई है जिसमें अनुप्रासोंकी छटा देखने मार्य है।

कवि चौधुरीजी अपनी कवितापर दूसरे किसी भी कविकी विचारधाराका प्रभाव स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि 'मेरी कविता गम्भीर अध्ययनका नहीं बल्कि सूक्ष्म अनुभूतिका ही फल है। मैं प्रकृतिक रमणीय आङ्गमें घूम-डिठकर प्रकृष्टिको जिस रूपमें देखा उसका ठीक बीसा ही वर्णन अपनी कवितामें किया है।'

साहरी और दहिकतरा (१९१०-१९३१)—ये दोनों कविता संग्रह हैं। पुस्तकके रूपमें साहरी ही कविका पहला प्रयास है। साहरीमें २८ और दहिकतरामें २१ कविताएँ संप्रहीन हुई हैं।

इन दोनों संग्रहोंकी कविताओंकी दो भाषाओंमें बाँट सकते हैं—(१) विहृग जीवनके सम्बन्धन और (२) यथायकी परछाईमें प्रहृष्टि परक कविताएँ।

बहुधाजी मभी चौधुरीके मुख बुझमें समझानी होकर मभीको अपना केंद्रमें कवि चौधुरीजीकी तुमना किसी दूसरे भारतीय कविम करना मुश्किल है। विहृग जीवनको मेकर कठेकी दहिकतरा माकाइ ए बार मार प्रिय विहृष्टिनि! केनेकी अण्ड मरमर पक्षी—आदिके जरिये कविने एक निमृदु मन्थ मभीक धामने उपस्थित किया है। कविने "मरमर पक्षी" को प्यारसे स्नेहक मूत्रमें बाँधनेकी इच्छा की थी लेकिन क्यार बन्धनको छुड़ाकर "मरमर पक्षी" "प्रिय श्री वन" (दूरके एक बंगल) की तरफ भाग गई। उसी दिन कविका हृदय बुझ-बेवनाम करने लगा—आइँ निरुध आइँ।

- इ जीवन आर नापार्थी मि मुख

मिलन बाधुरी पार ।

[ इस जीवनमें मिलन भाधुरी जानेवाला वह मुख किरने मुझे नहीं मिलेया। ]  
फिर भी "प्रिय विहृष्टिनि!" की मीठी बोलीमें कविका अजर पुनर्जित हो उठ है। कविक लिए इस "प्रिय विहृष्टिनि!" क मरमर स्वरमें बनेके हिरण पवन कन्दराएँ, बन्धनानियों तक मभी उपस ही उठ ब। उसी स्वर्ण जैसे आर मालक हृदयमें भी आगा भाषाभाषाका मन्थन भर दिया है—

मर्त्यवासी मानवक विवर्त सुरजि  
 सोमदेन प्रिय मित्रि  
 पठियाइ विने विवि  
 स्वर्गीय इतर बेछे कछे सुधा छानि ।

[ मर्त्यवासी मानवको धामि होनेके लिए अमृतवासी लेकर इतके बेजमें  
 स्वर्गसे विद्यावाले सुप वही अमरोल मित्रिको भेजा है । ]  
 वही सुर परी अंदे धामिका स्तूप है और धामिकापीका प्रचार करनेको  
 ही पृथ्वीवर आया है । कबिकी भी इच्छा है उस पत्नीके साथ धामि खोजते हुए  
 उड़ जाय—

मसाने वाचिब मुख  
 मकरी जनत मुख

तोभाइ लपटे जरि वामों बिहूँभिन ।

[ मुझे पाचिब मुख नहीं चाहिए, दुखी भी मैं नहीं होऊँगा । जो बिहूँभिन  
 मैं तुम्हारे साथ ही उड़ चरुँगा । ]

“दक्षिणतया के सम्बन्धमें अस्तमिवा भाषाके उत्पत्तिला प्रसिद्ध ज्ञानीपद  
 स्व डॉ. बाबूछाल काकठिजीका कहना है—

स्वरूपबिहीन मानसमोहिनी जीवन तोषिणी प्रिय बिहूँभिनो  
 आदिमें कबिने मिलन मन्त्रका नाप पूँका है । जबतको मिलन आशासे आधाभित्त  
 कर दक्षिणतया के माध्यमसे उड़ केतनमय इस जगत्के पाठक के मिलन कर देनेका  
 उपक्रम भी आपने किया है । यह एक कामपंबिहीन प्रेम कविता है जिसमें हुएरोंकी  
 बुद्धिने मोहल-रहनेवाला यह सुर पत्नी कबिके आपने मूर्तिमान हो उठा है—

कवि लेखनमित तदि मुच्छटित किय

रूप तीर नाइ बेछि

अनादुता हलिनैटि

इति बीच अमतर अति सुर बीच  
 किलु प्रिये तपे मौर अति प्राय प्रिय ।

[ कबिकी सैननीयें दू बपों नहीं आईं ? ठेरा रूप नहीं है—बीर बीच  
 जपनमें अति सुर बीच होनेके कारण ही क्या दू अनादुता हुईं हैं ? सिकिन प्रिये—  
 दू मैरी प्रायप्रिय हैं । ]

एसीमें कबिरा महत्त्व प्रतिपादित हुआ है । कवि बाने है—मंतार  
 हाथ अछेनिगोके बीच जाने अनुभूतिगीन प्रायवरी स्पेक्षर करना । पोद्दाटी  
 विरचितानपके बन्नामुद ( Dean of faculty of arts ) डॉ. विविंज  
 कुमार बरनाजीने इनींनिय कहा है—“Nature which, up till now had  
 served only as a decorative background, has been

chosen, as a subject of poetry, for its own sake" 'बहिष्कार' की तरह बर्से अन्तरही कोमलता और पवित्रतामें विनूत करनेकी इच्छा कविने की है। बहिष्कारके स्वर्णसे ही "बुद्धा माबार" (बुद्ध माबार बुद्ध) का आदर्शयै दिष्ट गया। इसी तरह "त्रिरीह" बृहती यौवनोत्सवनाके कारण गरीर क्षीय हो गया है। बहिष्कार की उपस्थितिमें ही पद्म-सूत पेड़पीछे और पत्नी आदि सभीमें आनन्दकी हिलोर उठने लगी है—

बेजाइसे प्रणवर जानेकी विनूत  
यदि जाओँ तैनि येन सकलौवनतुन।

[ तुम्हें प्रणवका निर्मल आदर्श दिखाया है। विम तरफ बेजना है—नया ही नया नजर आता है। ]

"केनेकी चराह" नामकी एक छाटी कवितामें कवि आनन्द विचार हो पटा है। इसकी हास्य और व्यंग्यमयी धर्मकी कठार मन्थारमें आगाका मन्थार करती है। कवि जनकी पत्नीको जन्म जन्मात्तर के लिए अपना बनाकर पानके लिए खोब रहा है। केनेकी खंड-काव्यमें इस छोटीसी कविताकी भावनाका ही मूर्त प्रकाश लभ्य दिखाई पड़ता है।

रघुनाथ चौधुरीका गृही परिचय मिलता है—उनकी प्रकृति परक कविताओंमें। प्रकृतिके मातृ कविता जति निष्ठका सम्बन्ध है। कविकी लेखनीमें प्रकृतिको यथार्थ रूपम सार्वकता मिली है। प्रकृतिकी बेग-मूपाके जरिए ही "विपाक मदिता" हीना-हीना" जतनी जगमभूमिक लिए आनयायिनी शैलीय घोड़ीनी कदवाकी भिन्ना मांगी गई है—

आहुये जननी इन्नु निमाननी  
विपाहि आनर माति

[ हे इन्नुनिमाननी जननी—आओ और आननी ज्यपि प्रदान करा। ]

बहागीर बिया" (बहापीका विवाह) कवितामें मातृ संसर्ग विहीन प्रकृतिके आनन्दोत्सवका वर्णन है। बभन्त दुहिता बहापीके विवाहके उत्सवमें बृद्ध सत्तारु और पत्नी आदि सभी आनन्द विचार है। बहापीके विवाहको केन्द्रमें रखकर प्रकृतिके मौन्दर्यका विकास करना ही कविका उद्देश्य है। माय ही इस कविताके जरिये अममिया आजीव जीवन और घरेलू जीवनकी एक शरीरी प्रस्तुत की गई है। मायकी प्रकृतिके बीच हीनक रागिनीका सन्धान मिला है और इस विषयमें आनन्दका एक परिपूर्ण रूप "बहापीर बिया" में प्रपन्न है।

"छम्पु" कवितामें स्वर्णघण्ट छम्पु के जीवनका विरलेपनकर कविने आनन्द यौवना छम्पुकी गारीमें मस्मय जीवनकी प्रमाप्ति खोजी है। "विदर" कवितामें कवि विरह-आप्यायी विविध कार्य प्रयापी वर विम्बित है। "बनिप्याधय" से संभ्या-कविता और कान्तावी हुन् हुन् ध्वनिके मातृ प्रकृतिका मनोहर रूप

देवकर प्राचीन भारतकी पौरव-भाषाको स्मरण कर, समयकी गतिसे अविचल 'बहिष्कार' को पक्षधर पत्रिके शान्ति-निकेतनकी आस्था ही है। बङ्गपुत्रके किनारे हरे-भरे जंगलोंमें सुसोभित "विरमस्मिका" ने कविके हृदयमें आतन्त्र्यमयी भावनाओंका जट्टेक किया है। कविने भी विरमस्मिकाके स्वर्णसे प्राण परिवृष्ट करनेकी अभिलाषा प्रकट की है।

प्राचप्रिय आज मोर विजय कुंज  
तुमिबाले लपलाटे हुराहुर तरंग ।

[ प्राचप्रिय आज मेरे विजय कुंजमें हुरीकी तरंग उठाओये क्या ? ]  
प्रकृति परक कविताओंके अतिरिक्त कविके इन दोनों संघटनोंमें कुछ वैचाम्य

मूलक कविताएँ भी मिलती हैं। इन कविताओंके जरिए कविकी अपनी जीवन यात्रा ही अपार्यक्त रूपसे प्रकाशित हुई है।

सादरी की पहली कविता "मिसा" में ही कविकी वैचाम्य भावना अद्विष्ट हुई है। कविने जीवनके पहले स्तरमें सम्भवत बड़ी बड़ी आशाएँ की थी लेकिन वे सभी निष्फल हो गईं। अब कवि संसारके सभी आशा-मुक्त शान्ति-मेघ नाममा राक्षस-सम्मान पौरव आदिका आज परिव्याप कर रहे हैं। मायाही मूलवृत्ताकी तरह इन सब चीजोंको छोड़ते समय उन्हें कुछ-ही-कुछ मिसा और इनलिए उम्होंने विगाशिकी कामना को हूर नपाकर कुछ-ही-कुछ मिसा और समय मिया है। साब ही भयवानले प्राथना की है—

सितार रेखार बरे लीबाते लबाय  
बाके धन अटल बिबबाध ।

[ पत्थरकी सकीरकी तरह ही तुममें मेरा अविचल विरवाह रहे। ]  
संसार सम्बन्धी इन तरहके मनोभाव "सादरी" की बनिजर कथा

( बहिष्कारी काने ) निराश विपाद बिच्छीर उक्ति ( बिच्छीकी उक्ति ) संठाप  
आदि कविताओंमें मिलते हैं।

जीवनमें शान्ति चाहते हुए कविने जन्ममें 'मरक' का आह्वान किया है—  
बिबर रूप-धरि तुमि बिबा लीक रेखा  
तिबिनहै प्राणे और ललित लखना

[ दिव्य रूप धरकर तुम (मरक) मुझे बर्तन लीके  
मुझे मानना मिलेगी। ]

उसी दिन

"बहिष्कार" में कविकी जीवनके प्रति तीव्र वैदना तथा संसारके प्रति वैचाम्य भावना पम्भीर रूपसे स्पष्ट है। संसारमें कविकी कुछ-मन्त्रधारी ही मिली। उनमें जो चारा का उमे मरी पाया। और क्या उनरी बलना का त्रिपतामने भी आये उदारर मरी रेखा। इतना कवि आत्मको आधुनिक समयपर कुछ प्रकट करते हैं—

बिफल जीवन मोर बिफल सफलता आसा  
घातग्रहीन आदि भइ दिया मोर कर्मताका

[ बिफल जीवन मेरा बिफल हई सभी आसाएँ। आब मै घाम्पहीन हई  
जीर मेरा हृदय कर्मतासी हई । ]

कबिका ब्यक्तिक जीवन भी निरुसम थीर बेरनामम ही कहा जा सकता है।  
अचपनमें पेरकी दुर्बलताएँ हुई—किछोर जीवनमें उम्हें माठा पिता एव भारी-बहुनोसि  
बिछोह हुआ तथा सारा जीवन कुँबारा रहकर ही बिताना पड़ा। कबिने इस जीवनकी  
बात " बँराम्बर कहा कबिताम स्पष्ट कही है—

आसा पछी करि फल घुम्ब हिया परिरल  
संसारत आदि भइ अफलग्रहीया

[ आसा रूपी पक्षी उड़ गया—घुम्ब हृदय पड़ा हुआ है। संसारमें आब  
मै अकेला हूँ । ]

कबिनी इन भावनाओंने तीव्ररूप धारण किया है " बहिकतरा " की अन्तिम  
कविता फूलघम्या में चित्तानि ही मानो उनके लिए फूलकी घम्या है—

सेये मोर फूलघम्या रक्तकमलर  
नल ताते अलन्तसमन ।

[ यह रक्त कमलोंकी मेरी फूलघम्या होमी वही मै अन्तिम समय करुँवा । ]  
सावरीकी " मरण " कविताकी तरह बहिकतराकी " फूलघम्या " कवितामें  
संसार बिपनी कबिने एक ही इच्छा ( मृत्यु कामना ) प्रकट की है।

कुल मिनाकर इन दोनों संग्रहोंको असमिया साहित्यके श्रेष्ठ कविता संग्रहोंमें  
गिना जा सकता है।

कारवाला—कवि चौधुरीजीका यह पहला कव्य काव्य है।

कारवाला सन् १९२३ में कर्मबीर चन्द्रनाथ स्मृति प्रकाशनीके प्रथम  
अंकनिके रूपमें प्रकाशित हुई।

'कारवाला काव्यमें कवि चौधुरीजीने इसलाप धर्मकी प्रसिद्ध एक  
ऐतिहासिक बियोगान्तर कहानीको निरुसम चित्ररूप दिया है। 'कारवाला'  
महात्मा हजरत मोहम्मदके खानदानकी अन्तिम व्याप्ति हुसैनके तप एतसे रंजित है।  
बमिस्क अविपति पापात्मा एभिन्न इसलाप धर्ममें एक नायकत्वकी प्रतिष्ठा कराने और  
इसलाप धर्मको निर्मूल करनेकी जी-जोक कोशिशमें लगा था। साथ ही उसने सुन्दरी  
जुबेदाको अपनी अंकुशयिनी बनानेकी कल्पना भी की। पश्यन कर जुबेदाके द्वारा  
ही महात्मा हुसैनका बन्धन करना चाहा। प्रलोभनसे प्रमुख होकर जुबेदा बाने आई—

हम राज राजेश्वरी

अप्याह एभिन्न राजबन्धन

एने रणग लुब्ध नीबारी एदि ।



[ मैं बारम्बार एजिप्टके राजमन्त्रमें राज राजेश्वरी होऊँगी। इस तरहका स्वर्ग मुझ छोड़ नहीं सकता। ]

लेकिन जुबेदाको अत्यन्तक राजमन्त्र नहीं मिला। एजिप्टने जुबेदाको नहीं अपनाया बल्कि स्वामीकी हत्यारिची पापिनी जुबेदाके दो दुकने अपनी ही तलवारसे कर दिए।

पापियसी जाम्बोबाक करि मुंड छेद  
पापर कि परिभाम ज्वलंत उपमा  
देखुबाले समाजक समक लयाह।

[ पापिनी जुबेदाका मुंड छेदकर पापका ज्वलन्त परिभाम दिखाकर समाजको भ्रष्ट कर दिया। ]

इसाम संतमें फिरसे आपवाएँ नहीं आईं। जेबुस्साका आस्थासन पाकर इसाम परिवार बरीना छोड़कर शान्तिही खोजमें जुपयके लिए रवाना हुआ। लेकिन मार्ग भूलकर वे कारबालाके मर प्राणमें जा पहुँचे। इसरी तरह फोटाट नदी पर एजिप्टके ईजिप्टोंने अवरोध कर लिया था। अब सारे धिक्किरमें पानीके लिए हाहाकार मच गया। हुर्नन पुर पानी लाने गये लेकिन वापस नहीं आ सके बूँकि पानुके ईजिप्टके बाधसे वे नहीं स्वर्ग विद्यार मये थे।

सरपर सुनीतल बलबाल करि  
सरपर बरनु पस स्वर्गघाबर्त।

[ स्वर्गका सुनीतल पानी पीकर स्वर्गके निवासी स्वर्गघाम बने गए। ]

इस बुद्ध बटमाके उपरांत भी कुछ क्षणोंके लिए हुर्ननके विहिरमें आनन्दकी कुमुभि बजने लगी। उनके अन्तिम अनुरोधके अनुसार वासिम और मत्रिनाकी घासी हो गई।

मुठमें एक एक कर सभी बस बसे। बाबको इसाम हुर्नन पुर पानुकोके हाबले फोटाटके किनारेको जम्मुन कण्ठके लिए जाने जाए। बरनुर्नको पराधित करला हुआ फोटाट का पानी-पिने हुर्नन जाने बड़ने सये। लेकिन उनही जाँत्रोंके सामने इस पानीके लिए जीवन देनेवाले आत्म परिवार और इष्ट पुदुम्बियोंकी बहि घमरने लगी—

एदुवि पानीर बाबे कस इत आनी  
आपे बरिजम और धिदिर पुदुम  
एरिछे जीवन एइ पीबम बरत

[ एक बूँद पानीके लिए मीनड़ों मीनों बिजने ही आमीब परिवर्तों और पुदुम्बियोंने इन मन्त्रमूमिमें प्राप्त किए हैं। ]

हुर्ननके जीवनको मँजूरपरी बन और बटाने घेर लिया। अरन-भरन राज-भरन लकीरों ग्याइ फेर अस्याहके विज्जतमें जीवनही नमालि खोजने लने &

इसी स्वर्ण बखरपर सख स्वर्ण मूद्राका सोम दिखाकर एजिप्टने बिमारको हुसैनका कटा हुआ सिर सानेके लिए भेजा। स्वर्गसे हजरत मोहम्मद हुसैनको भे जानेके लिए खुद उतर आए—

हजरत मोहम्मद बखलोक हरी  
धिय्य सह आबिर्भाव बिमान पबत  
बेनेहर बीहिबक सं पबलह ।

[ हजरत मोहम्मद बैबलोकसे अपने शिष्योंके साथ अपने प्यारे मित्रको भे जानेके लिए आकास मार्गपर उपस्थित हुए। ]

पापी बिमारके हाथमें इमाम हुसैनकी हत्याके समयकी माथमें इस्लामी सोम मुहर्रम प्रथके रूपमें मनाते हैं।

कवि चौधुरीजीने इस्लाम धर्मकी प्रसिद्ध कहानीको बलबिबकी तरह अपने काव्यमें बंक्षित किया है। मनोरम कहानी कविकी सेखनीमें और भी मनोरम होकर निखर उठी है। आलोचककी मायामें "हृदय का तप्त रत्न बेकर इसे आपने सजीव बनाया है।"

बहुमुख ठटके दुष्योंको देखकर ही उनके आभारपर कारबामा मरुभूमिका जैसा काव्यनिक बिब चौधुरीजीने जीया है वह बहुत ही आश्चर्यजनक है। कविका व्यक्तित्व इसीमें है।

इस्लाम धर्मकी कहानी लिखते हुए भी कविके इस काव्यमें बिदेसी शब्दोंकी भरमार नहीं है। सम्पूर्ण काव्यमें कुल केवल सत्रह बिदेसी-शब्दोंका व्यवहार किया गया है। कुछ असमिया शब्दोंका प्रयोग उनकी काव्यशैलीकी एक खास बिदेपता है।

केतेकी—

केतेकी कविके जीवनकी सर्वश्रेष्ठ उपमाव्यि कही जा सकती है। किसी एक पक्षीको लेकर इस तरहके लख-काव्य दूसरी मायामोंमें बहुत ही कम मिलेगे। इस काव्यके सम्बन्धमें डॉ वाक्तीजीने कहा है—“बहावीर बिमा” में जो आनन्दानुभूति उन्मिद और पक्षी जीवनमें ही सीमित थी केतेकी कवितामें उसीने कुल दिनारा छोड़ मरोड़कर मानव समाजके बरेमू जीवनको भी प्रभावित किया है। केतेकी के आनन्दसे जड़ बेटन जगतमें नव जीवनका सचार हुआ है और चारों तरफ आनन्द ही आनन्द परिब्याप्त है।

पाँच तरंगोंमें बिभक्त केतेकी काव्यकी प्रथम तरंगमें अनजान और अज्ञात बैससे आकर आहुन और उदात्त स्वरसे गीत या पाकर बिभोर हो भूयते फिरते केतेकी पक्षीको देखकर कवि आश्चर्यचकित है। उनी पक्षीने जैसे दो ही दिनोंमें सभीको अपनाकर “जगयापीहीन रिनस्ताजमें” भी सजीवनी ला भी है—

सजाइ तुलित इतर भूमित  
अपश्य मस्मान् ।

[ अजर भूमि को भी तुमने अपरूप मरुघातका रूप देकर सजाया । ]  
कवि इस संसारके टेढ़े-मेढ़े रास्तेपर कुछ-बैस्यक बीच केठेकी पक्षीके जीवतकी  
स्वर्गीय प्रेम-प्रीति और उसका मुक्त देखकर विस्मित हैं । मानवकी कामरता और  
ज्ञान कीधसको धिक्कारते हुए पक्षीकी स्वर्गीय प्रेम प्रीति को कबिने तिर  
मंभाया है ।

द्वितीय तरंगमें 'केठेकी' के आगमनसे प्रकृति राज्यमें किंचित् तच्छ अपूर्व ज्योति  
का पई है इसीका वर्णन हुआ है । केठेकी ने जड़ताके आवरणको मेढकर प्रकृतिमें  
नव जेतनता ला दी है । नीतके स्वरासे अनुभूतियत भुवनमोहिनी चक्रिमायमी निष्ठा  
तापके आगमनसे और अधिक ज्योतिषित हो उठी है—

केतनो विक्रम पूजिमार निष्ठा  
अगत् जोमालीमय  
तोर मातेयेन मर्त्य भुवनत  
अमृतर प्रारण्य ।

[ कैंती ज्योत्स्नामयी वह पूजिमाकी पठ है । तेरे स्वरने जैसे इसी  
मर्त्यलोकमें अमृतकी झार बहा दी हो । ]

तृतीय तरंगमें 'केठेकी'के आगमनसे कवि-क अन्तरमें जो हिलोर उठी है उसकी  
तुलना उन्होंने अतीत कालके कल्प आगमन देवी सङ्कल्पताके जीवनके व्यक्तिरूपसे  
की है । सङ्कल्पताके जीवनके वैराग्य और अकसाएके मूलमें मागो केठेकीका सधुर  
स्वर ही था । मनी पद्य रूप अतिरञ्ज बममन्ती आदिके जीवनके हर्ष और  
विषादके मूलमें भी उसीके जीवनका स्वर ही रहा है ।

अनुरं तरंगमें केठेकी में ही एक चिरंतन धारका सम्भान मिला । केठेकीके  
आगमनसे विश्व ब्रह्माण्डमें नवजैतना और प्रेमका अंतुर अंतुरिण है । महाविश्वको  
आनोहित करनेवासी उस विहंगिनीके कबिने ही महानाति और मृगमृज्जाके हेतु  
बोड़ी-नी करपा की माषता की है । कवि प्याकुल हा उद्य है—

माजानने पच्छि तोर ति संपीते  
काङ्क निषे घोर प्राण

×

×

×

बन्ध देणवाह लड या सावति  
माबाओ हु संभारत

[ क्या तुम नहीं जानती हो कि तुमजाने ही मनीनने मेरे प्राण हर लिए हैं ।  
मे दम लगाएने नही चूँगा । तुम मुझे पक्ष दियाकर मे बनो । ]

अन्तिम तरंगमें जब केठेकी मर्त्यका मोड़ छोड़कर उड़नी हुई हुए निम्नमें  
जाती गई तब कविता अन्तर भुन विचारने कर उद्य—

## कृपय मुचि पति दूर वेद लई

मायाओ एदिसों तयो एरि पति

कि बसाम्य हब मार

[ तुम दूर वेद बनी गई मैंने तुम्हारे ही कारण संसारकी मायाको त्यागा—तुम भी बनी गई—अब मेरी क्या बधा होगी ? ]

“क्रेतेकी” कविता कविकी आकस्मिक रचना नहीं है। यह ‘साधरी’ कविता संग्रहमें प्रकाशित पक्षी विषयक कविताओंका ही विकसित रूप है। कविकी पहलेकी कवितामें बितने प्रसोंका उदय हुआ था उसीका कवित्वमय उत्तर ‘क्रेतेकी’ कवितामें मिलता है। “कवि जीवनके बहु काल संश्लिष्ट भावनाओंका क्रमविकास चौधुरीजीकी पक्षी-विषयक कविताओंको छोड़कर असमिया साहित्यमें और कहीं मिलना मुश्किल है।

नवमल्लिका—(१९३८) यह कवि चौधुरीजीकी अन्तिम रचना है। अन्तिम रचना होनेके नाते कवि-जीवनकी गम्भीर उपलब्धियाँ इसमें मिलती हैं। यह उनकी कथा-काव्योंका संग्रह है। प्रकृतिके साधारणसे साधारण विषयको लेकर कविने ज्ञान-गम्भीर तत्व इनमें समेटा है। असमिया भाषामें क्या कविताका यह दूसरा संग्रह है।

भाषा-शैली—

चौधुरीजीकी दृष्टिमें भाषा संसारका वाद्यमय चित्र है। चौधुरीजीकी भाषामें तत्समता साक्षरिगता चित्रमयता संगीतात्मकता यात्रि अमंशुत हैं। चौधुरीजीकी भाषामें तत्समताके साथ-साथ संगीतमकता भी होनेके कारण उनकी कविताएँ पढ़नेसे ऐसा मानस पड़ता है कि एक बेगबती सरिता घीर, स्मिर, गम्भीर गतिसे गिराव करती हुई बह रही हो।

चौधुरीजीकी भाषा चित्ररचित भाषा है जिसमें अनेक शब्द-चित्र अत्यन्त सुन्दर हैं। इसका एक उदाहरण—

घोषादि दिखर येबे रंजि संघ्यारामे

सुखेरे विषाम लमे सांघ्य लमोमनि।

[ घोषादि दिखरपर बब रजित हो संघ्या रागसे सुखसे विषाम केठे सांघ्य लमोमनि। ]

चौधुरीजीकी भाषामें अनुप्रासका प्रयोग अधिक देखा जाता है। इसीलिए पर-परपर अनुप्रासकी छटा देखनेको मिलती है। इसका एवमात्र कारण है उनकी संगीत-प्रियता।

रजुनाथ चौधुरीजीकी भाषा प्रकाशन सेती सरल और प्राञ्जल है। असमिया और भारतीय अन्य आधुनिक काव्य-साहित्यका अध्ययन कर विशेषकर भी चन्द्रसेन और कामिदासकी काव्य-रचनासे आप प्रभावित हुए थे और उन शैलियोंकी रचना पद्धति

और वीलीको ही कविने अपनी रचनाओंमें अपनाया है। छवि बुलंदी पर प्यार जाकि असमिया छन्द काभिवासकी मन्दाकमठा अमिताभार और भिरिक जाकि छन्दोंके परिए कवि चौमुतीजीकी काव्यमयी भासा विकसित हो उठी है। साहित्यमें कविका स्थाम—

कवि चौमुतीजीके सम्बन्धमें असमिया साहित्यके कुछ प्रख्यात आलोचकोंका मतस्य इस प्रकार है—

डॉ. बापीकांत काकठिजी एम ए पी एच डी लिखते हैं—मुरझाई हुई अपनी भावनाको बसाकर भाषाके हिमोरोमें झुसनेते जो आगम्य प्राप्त होता है—वही आगम्य कविता होती है। चौमुतीजीकी कवितामें बहु आनन्द देनेकी क्षमि विद्यमान है।

असमिया कविताकी कहानी में डॉ महेस्वर नेओपजी लिखते हैं— "चौमुतीजीने पत्नी जीवकी छन्दमयी कवनाका संतान करते हुए प्रकृति परक कवितामें एक अद्विज तालर्यका आरोप किया है और उससे ही स्वकीय प्रगोनात्मक विपाद साकार कर दिया है। काभिवास जाकि कवि मुकजनोंके मानसिक परिवेश चितकल्पिण घावाके छन्दर्यका प्रभाव मानते हुए भी उन्होंने आधुनि गीति-काव्यको परिपुष्ट और अलङ्कृत कर रखा बा।

"असमिया साहित्यके इतिवृत्त" में डॉ मारवेन्द्र शर्माजीने लिखा है— "पौटाभिक आख्यामके तान संयुक्त करते हुए चित्र रचनका समावेश कर भाषोपयोग मन्दाकमीके व्यञ्जनापूर्व प्रयोगने उनकी कर्मन गीतीको उन्नत्यन और हृदय प्राण तथा चित्रोपम कर दिया है।

"केतेकी" के सम्बन्धमें साहित्य सम्राट् सरस्यनाथ बंज बरुवा जीने लिखा बा— "इस 'केतेकी' को ही लेकर हम विश्व-साहित्यके दरबारमें जा सकेगे।" अमन म्यायात्मके भूतपूर्व म्यायाधीम श्री इमिराम डेकाजीने चौमुतीजीकी कविताके सम्बन्धमें ये की समामोचक बापीमें ही कहा है—

His lines are chilled for immortality—

इतविच समामोचकोंके अनुसार किस्मकोच बहु बहा जा सक्या है कि चौमुतीजीकी कविता असमिया रोमाण्टिक साहित्यका उच्चोप मंपीन है। उनकी कविता व्यात्मन्य मोपीकी आरग्य माधना की बाणी है।

केदम असमिया साहित्यमें ही नही भारतीय साहित्यमें भी चौमुतीजीका बोधदान इमीभित् स्वरधीन रहेया कि बिहनाकि कसररका उन्होंने मुन्कट बाणी प्रदान की है—उनके कन्दोंमें राबिनीका सचार करके ही वे मूज मड़ी हुए बरन् जीवतकी मामिक अनुभूतिपोका मत्रीव चित्र अत्यन्त मनोहर बनाकर उनमें अमिबिष्ट कर दिया है। हरेक कवितामें तामयताका भाव ही प्रदान है। यों देया जाए तो परिमापती बुक्तिमें कविकी रचनाएँ कम हैं—परन्तु उनका भावात्मक भीत्य और शंभारमयी छन्द-बोधना उन्हें भेष्टन्यन कवियोंकी धेरीमें पड़ेबा देनेके लिए सपष्ट है। ● ●

# रघुनाथ चौधुरी

[ काव्यसम्बन्ध ]

मासागे तोमार प्रभु एशवय विभूति  
 राजपद, सम्मान गौरव  
 बारिघर साओसोटा भिक्षार तजुलि  
 सेये मोर भतुस बभय ॥१॥

मसजों द्विदित औरि सम्भ्रमर माला  
 माबों ताक अति हेय सुनि,  
 अपमान अपयश, साछना शिरत  
 सम प्रभु भावहरे तुलि ॥२॥

उच्छाकासा माइ प्रभु, सुत्र हृदयत  
 करा भोक सकसोरे सर  
 मात्र पयारत येने चाके भक्तसइ  
 पत्र पुष्प फलहीन तर ॥३॥

मालागे तोमार प्रभु पाषिय सम्पद  
 बुदिनीया सुखर बाहानि  
 भक्तशारीया करि मात्र बाटतेइ  
 एरि यह माय बा काहानि ॥४॥

मासागे सुम्बर रेह कान्ति कमनीय  
 धुम-पद, आमन्त्र विनास  
 हपर छसना मात्र मोहर बिकार  
 सिबोरत माइ भमिसाय ॥५॥

पिगाचिनो कामनाक बिछीं भातराइ  
 ताइ भोक बिछे बहु दुय  
 शरीर शायरि उठे परिते मगत  
 राजसोर बदावार मुय

## १ मिथ्या

हे प्रभु, तुम्हारा ऐश्वर्य विभूति राजपद सम्मान गौरव मुझे नहीं चाहिए। दरिद्रताका भिक्षापात्र ही मेरा अतुल बेभय है ॥१॥

सयमका कण्ठहार में अत्यन्त तुच्छ समझता हू। (अत उसे) गमे नहीं मगाऊंगा। अपमान अपयश साँझमा वठे आप्रहृके साज सिरोधार्य कर सँगा ॥२॥

मेरे इस क्षुद्र हृदयमें उच्चामोक्षा नहीं है। मुझे सबसे छोटा बना दो। उसी तरह जैसे मदानके बीच पत्र पुष्प फसहीन बृक्ष अकेला खड़ा रहता है ॥३॥

हे प्रभु दो दिनके सुखकी सामग्रियाँ मा तुम्हारी पार्थिव सम्पदा मुझे नहीं चाहिए। क्योंकि ये सभी बीच रास्तमें ही मुझे अकेला छोड़कर कभी-न-कभी चली जाएँगी ॥४॥

मुझे सुन्दर शरीर कमनीय कान्ति दौब-पेंच आनन्द विकास नहीं चाहिए। ये सभी मोहके विकार हैं—रूपकी छलनाएँ मात्र हैं—उन्हें पानकी मेरी अभिभाषा नहीं है ॥५॥

पिशाची कामनाको मैंने बहुत दूर भगा दिया है। उसने मुझे बहुतसे दुख दिए हैं। उस राक्षसीके विकराल मुखका स्मरण होये ही मेरा शरीर सिहर उठता है ॥६॥



समुद्यत धमर पि आछे अघरूप  
तात येन निपिछसे भरि  
धिरबिन धिरबधी हम लागे प्रमु  
अभावर यत्रघात परि

॥७॥

यदिमो भमत परि पिअो हताहल  
हियाअनि परि माय कसा,  
निरस सहिम प्रमु, दिया भाए मोक  
ससारत आछे यत ज्वासा

॥८॥

धुगिछो धुगिम भाए बग्य हृदयत  
दात दात बुदिसक बशान,  
नकरो बेजार प्रमु तोमार कायत  
आमन्वत चाकिम मगन

॥९॥

मुखर ह्रींहृदि यवि सिअो मार घाय  
छिन ह्य आनामता सुपि  
साग्बना दिअोला मोर आछे सगरीया  
बिपावर अकुसो एदुपि

॥१०॥

आगा-मुष शान्ति प्रेम बासना-सुपिति  
सकली ये मरोधिजा अम  
बहरपी हृद मोक धुबा दि मायोन  
ओपनाय विलत बिभ्रम

॥११॥

सिकारणे मुख बाँछा नकरो, मासाले  
निबिचारो पीट्टरर पास  
बसियाइ दिलो यत बरनु भरमर  
मोर पल ओघारोइ माल

॥१२॥

अभावका यत्रजाएँ भोगकर चिरदिन में फिरदुखी बनकर  
रुहूँगा । परन्तु सम्मुखमें घनका जो अन्धकूप है उसमें मेरे पैर  
न फिसलने पाएँ ॥७॥

यद्यपि भ्रममें हलाहल पीले हुए मरण हृदय भी काला हो जाए,  
फिर भी मैं उसे चुपचाप सहूँगा । ससारमें और भी जितनी  
ज्वालाएँ हैं मुझे दे दो ॥८॥

इस दग्ध हृदयमें दात शत बृक्षिक दंशम भोग रहा हूँ  
और भोगता रहूँगा । फिर भी दुख नहीं करूँगा । तुम्हारे  
पास रहकर तब आनन्दमें मग्न रहूँगा ॥९॥

मेरे मूँहकी हँसी यदि न रहे और आशाकी सता अगर टूट  
भी जाए—तब भी मुझ सान्त्वना देनेवाले विषादके आँसू  
मेरे साथी रहेंगे ॥१०॥

आशा-सुख क्षान्ति-प्रम वासना-तृप्ति ये सभी मृगतृष्णाएँ  
हैं । बहुरूपी बनकर ये मुझे सिर्फ धोखा देती हैं और अन्तरमें  
भ्रम उत्पन्न करती हैं ॥११॥

इसलिए, मैं सुख नहीं चाहता प्रकाश मुझ नहीं चाहिए  
और उमकी याचना भी नहीं करूँगा । सभी प्यारी वस्तुओंको  
मेरे फेंक दिया है—मेरे लिए तो अन्धकार ही अच्छा है ॥१२॥

समुच्चत घमर यि आछे भयकूप  
तास येन निविष्टसे भरि,  
बिरदिन घिरुखी हुम लागे प्रभु  
अभावर यत्रनात परि

॥७॥

यदिओ भ्रमत परि पिओ हस्ताहम  
हिपाखनि परि याय कला  
निरसे सहिम प्रभु, बिपा भाव मोक  
ससारत भाछ यत क्यासा

॥८॥

भुगिछो भुगिम भाव बग्य हुबयत  
वात वात बुद्धिक बशान,  
नकरो बेजार प्रभु तोमार कायत  
आमन्वत पाकिम मगम

॥९॥

मुखर हाँहिटि यदि सिओ भार याय  
छिन्न हय मादासता जुपि  
सान्त्वना दिओता मोर आछे लगरीया  
बिपावर बहुलो एटपि

॥१०॥

भासा-मुख शान्ति प्रेम वासना-सुपिति  
सकली ये मरीबिचा म्रम  
बहुरूपो हइ मोक भुवा वि मायोत  
भोपजाय बिलत बिभ्रम

॥११॥

सिकारणे मुख बाँटा नकरो, मासागे  
निबिचारी पीट्टर फाम  
बसियाइ बिसो यत बस्तु मरमर  
मोर पक्षे भाँघारेइ भास

॥१२॥

अभावकी घबराहटें भोगकर चिरदिन में चिरदुखी बनकर  
रहूँगा । परन्तु सम्मुखमें धनका जो अन्धरूप है उसमें मेरे पैर  
न फिसलने पाएँ ॥१७॥

यद्यपि भ्रममें हलाहल पीते हुए मेरा हृदय भी जाला हो जाए,  
फिर भी मैं उसे चुपचाप सहूँगा । ससारमें और भी जितनी  
जवासाएँ हैं मुझे वे दो ॥८॥

इस दग्ध हृदयमें घट घट वृद्धिबक दंसन भोग रहा हूँ  
और भोगता रहूँगा । फिर भी दुख नहीं करूँगा । तुम्हारे  
पास रहकर सदा आनन्दमें मग्न रहूँगा ॥९॥

मरे मूँहकी हँसी यदि न रहे और आशाकी सता अगर टूट  
भी जाए—तब भी मुझ सान्त्वना देनवाले विपादके आँसू  
मेरे साथी रहेंगे ॥१०॥

भाषा-मुख क्षान्ति प्रम भासना-वृष्टि ये सभी मृगतृष्णाएँ  
हैं । यहूँरूपी बनकर ये मुझ सिर्फ़ छोखा बती हैं और अन्तरमें  
भ्रम उत्पन्न करती हैं ॥११॥

इसलिए मैं सुख नहीं चाहता प्रकाश भुझ नहीं चाहिए  
और उनकी याचना भी नहीं करूँगा । सभी प्यारी वस्तुओंको  
भन फेंक दिया हूँ—मरे लिए तो अन्धकार ही अच्छा है ॥१२॥

यत बिया बुख बंग्य काँघत कपाइ  
नानी एको बजार मनत  
तोमारे बिभूति जानि सकसो सहिम  
यत बिन चाको सत्तारत ॥१३॥

मुख बुख, हाँहि अघु, हय बा बिपाइ  
तोमातेइ ज्युमब बिलय,  
अनुकूल, प्रतिकूल तुमिये जीवर  
सकलोते बेछो तुमिमय ॥१४॥

बयामय, मार्गो एटि चरणत मिका  
बिया मोक प्रापत आववात,  
दिलर रेखार बरे तोमाते सबाय  
चाके येन अटल बिबास ॥१५॥

चाहे कितन ही दुख-दैन्य मरे बघोंपर क्यों न लाद दो  
 मनमें दुख नहीं बसेगा । इन सबको तुम्हारी विभूति  
 समझकर उन सबको सहता जाऊँगा ॥१३॥

सुख-दुख हास्य-अश्रु हर्ष या विषाद—सभी कुछ तुमसे ही  
 उद्भव होते और तुममें ही सब भी होते हैं । जीवका अनुकूल  
 प्रतिकूल सब कुछ तुम्हीं हा—मैं सभीमें तुम्हारा ही दर्शन  
 करता हूँ ॥१४॥

हे दयामय ! तुमसे मैं एक भिक्षा माँगता हूँ—मुझे  
 आश्वासन दो—पत्थरकी सकीरकी तरह तुम्हारे प्रति मेरा  
 अटल विश्वास चिरकास तक बना रहे ॥१५॥

—————

यत बिया बुध इम्य कौघत पपाइ  
 मानो एको बेजार मनत,  
 तोमारे बिभूति जानि सकलो सहिम  
 यत बिन पाकों ससारत ॥१३॥

सुख बुध, हीहि मधु, ह्यं वा बिपाव  
 तोमातेइ उद्भव बिलय,  
 अमुकूल, प्रतिकूल तुमिये जीवर  
 सकलोते बेघो सुमिमय ॥१४॥

बयामय, मार्गो एष्टि चरणत भिला  
 बिया मोक प्राणत भाइबास,  
 शिसर रेखार बरे तोमाछे सबाय  
 पाके येन अटल बिइबास ॥१५॥

आहे कितने ही दुख-मय मरे कष्टोंपर क्यों न साद दो मनमें दुःख नहीं करेगा। इन सबको तुम्हारी विभूति समझकर उन सबको सहता जाऊँगा ॥१३॥

सुख-सुख, हास्य-मधु हृष या विपाद—सभी कुछ तुमस ही उद्भव होते और तुममें ही मय भी होने ह। जीवका अनुकूल-प्रतिकूल सब कुछ तुम्हीं हा—मैं सभीमें तुम्हारा ही दान करता हूँ ॥१४॥

हे ययामय! तुमस में एक भिक्षा माँगता हूँ—मुझे आशवासन दो—पत्थरकी सकीरकी तरह तुम्हारा प्रति मरत अटल विदवास चिरकाल तक बना रहे ॥१५॥





## २. बहागीर बिया

प्रकृति बीपारी गामद छोबासी  
 बहागी आइरे बिया,  
 उमहू मासहे सकनोरे येन  
 जानम्बे न घरे हिया ॥१॥

स्वरग मरत सकनो ठाइते  
 उठिछे मानन्ध रोस,  
 साजन काचन र बपहत  
 गीठेइ जगत मोस ॥२॥

अभ्यक्त सुरत प्रेमिक भुमरे  
 बिले सकनोते जन  
 गछ सतिकार प्रति गिरे निरे  
 मरुरि उठिले प्राण ॥३॥

शिमलु बलाश अजोक मन्हार  
 श्यामस बिटपी राजि  
 बीष आमरण ससाइ माहिछे  
 राइसी साजेरे साजि ॥४॥

कामिनी कौबज धम्या नागेश्वर  
 सुगधि कुसुम मासा  
 न न रूप धरि पुष्य जानगत  
 पातिछे प्रेमर छेसा ॥५॥

मसय समीर गय बणिबर  
 गात तत् माइबिया  
 कुसर मुष्णग घोरोबात सह  
 हइछहि बिसनीया ॥६॥

## २ वहागीका ध्याह

प्रकृति पुत्री युवती वासिका यहागी विटियाका ध्याह है ।  
समीका मन आनन्द उमादमे परिपूष हो उठा है ॥१॥

स्वर्ग-मत्य समी जगहोंमें आनन्द-ध्वनियाँ हो रही हैं ।  
रग-रूपोंसे सजघज करनमें मारा विद्व बिभोर है ॥२॥

प्रेमी भ्रमरन अब्यक्त स्वरम समीको मूचना दे दी है ।  
बृह-लताभोक नस-नममें भी प्राण स्पन्दित हा उठा है ॥३॥

सुमस पसास अथाक मन्दार, श्यामल विटपी राजि आदि  
समीन जीण आभरण बदसकर नवीन रमाके शृंगारमें पदापण  
क्रिया ह ॥४॥

कामिनी, कांचन शम्पा मागेद्वर, आदि सुगन्धयुक्त पुष्प  
भी मए-नए रूप धरकर पुष्प कतनमें प्रमदा खन खन  
रहे हैं ॥५॥

यघके व्यापारी मलय ममीरको जसे अब होन नहीं रह  
गया है । बहु पुष्पोंका मूबाम पीठ पर सादकर बितरित कर  
रहा है ॥६॥

## २ बहागौर विद्या

प्रकृति कीयारी गामर छोवासी  
 बहागी भाइरे बिया,  
 जसह मासहे सकलोरे येन  
 मानम्बे न घरे हिया ॥१॥

स्वरय मरत सकसो टाइते  
 उठिछे आमन्ब रोस,  
 साजन काचन र रूपहत  
 गीटेइ जगत मोल ॥२॥

अम्पकत सुरत प्रेमिक भ्रमरे  
 बिने सकलोते जन  
 गछ सतिकार प्रति सिरे शिरे  
 मज्जरि उठिसे प्राण ॥३॥

शिमसु बलाश अणोक मन्बार  
 दयामस बिटयी राजि  
 जोष आमरण सताइ भाहिछे  
 राइसी साजेरे सामि ॥४॥

कामिनी काचन चण्या नागेश्वर  
 सुगधि कुसुम मासा,  
 न न लय घरि पुष्य कामनत  
 पातिछे प्रेमर ऐका ॥५॥

मलय समोर गछ बधिकर  
 गात तत् नाइकिया,  
 फुनर मुघाण घोकोबात लइ  
 हइछहि बिसनोवा ॥६॥

## १ वहागीका ब्याह

प्रकृति पुत्री, युवती बामिका वहागी विटियाका ब्याह है ।  
सभीका मन आनन्द-उमादसे परिपूर्ण हो उठा है ॥१॥

स्वर्ग-मर्त्य सभी जगहोमें आनन्द ब्यनियाँ हो रही है ।  
रग-रूपोंसे सबभ्रज करनमें सारा विश्व बिभोर है ॥२॥

प्रेमी भ्रमरने अब्यक्त स्वरसे सभीको सूचना दे दी है ॥  
बृक्ष सताओंके नस-नसमें भी प्राण स्पन्वित हो उठा है ॥३॥

सेमल पसास अशोक भन्दार, श्यामल विटपी राजि आदि  
सभीने जीर्ण आभरण बदसकर नवीन रगोंके श्रुगारमें पदापण  
किया ह ॥४॥

कामिनी कांचन चम्पा मागेस्वर आदि सुगन्धयुक्त पुष्प  
भी नए-नए रूप धरकर पुष्प-जाननमें प्रेमका खेल खेल  
रहे हैं ॥५॥

गघके ब्यापारी मलय समीरको जैसे अब होश नहीं रह  
गया है । वह पुष्पोंका सुवास पीठ पर सादर बितरित कर  
रहा है ॥६॥

- धुनीया धुनीया सतारे मडित  
 कुसुमित तदरानि  
 रमक लमक करि ठाये ठाये  
 बिछे बेइ घर साजि ॥७॥
- हीरक मडित चन्द्रातप खनि  
 ओलमिछे आकाशत,  
 आइ बहुमती बिछे पाटी परि  
 सेठबीया भासमत ॥८॥
- भापती सकसे रभार तसते  
 करिछे मार पि काम,  
 कोनोननी माहि बिछे पुण्यांजलि  
 कोनोबे गाइछे नाम ॥९॥
- जये जये माहि फेहु चराइटी  
 मगस उरसि बिसे,  
 बहिकतराइ प्रभाती सुरत  
 स्तुति गीत भारमिसे ॥१०॥
- माघ काममत रडियाल कुलि  
 सगासे एपार मात  
 गेसर ध्वजित स्वरगत येन  
 बहिस प्रेमर हाट ॥११॥
- संकारि उठिस पुष्य जपबन  
 बसिस प्रमर बा,  
 हांहिदि मारिस माघेमासती  
 गाते सगाइ या ॥१२॥
- पाटर जसे गात भरियाइ  
 पाटमाई बुधि माजि  
 जोरोण पिघाब आहिस मुम्बरी  
 पाटगामस्टी साजि ॥१३॥

सुन्दर सुन्दर सता मण्डित कुसुमित सर-राजियोंने मिल  
मिल कर जगह-जगहपर तोरण बना दिए हैं ॥७॥

हीरक मण्डित चन्द्रसाप (बंदोवा) आकाशमें तना हुआ  
है । और घरती माताने हरा आसन विछा दिया है ॥८॥

सामियानक नीच महिषाएँ अपने अपने कामोंमें सगी हुई  
हैं । कोई आकर पुष्पाब्जसि वे रही हैं तो कोई गीत गा  
रही हैं ॥९॥

शुरू-शुरूमें आकर फट्टू "पक्षीन मंगल ध्वनिका उच्चारण  
किया । दहिकतराने (पक्षीका नाम है) प्रभाती रागिनीमें  
प्रार्थना सगोतका प्रारम्भ किया ह ॥१०॥

आमके बगीचेमें रसिक कोकिसने भी अपना स्वर बसाया ।  
उसके गीतकी ध्वनिसे मानो स्वर्गमें भी प्रेमका हाट मग  
गया है ॥११॥

प्रेमका पवन चलने लगा, पुष्प उपवन झड़त हो उठा ।  
मधु-मालती गमवाही बालकर हँसन सगी ॥१२॥

पाटक घेसँ (महिषाओंका एक प्रकारका आवर जसा  
पहनावा) पहनकर पाटमावे (पक्षी) सजघजकर "ओरोण"  
(बिबाहक पहलेका एक सम्कार—जिसमें कन्याको बरकी  
सरफस कपड़े और अलकार पहनाए जाते हैं और शादीकी बात  
पक्की हो जाती है ।) पहनायेके लिए सुन्दर युवती जैसी  
सजकर आई ॥१३॥

- सोण बरणीया डरीया काँचन  
 सोणारु, कमक चम्पा  
 रबिले धुनीया बेभीर आकारे  
 कन्प्यार साहूती खोया ॥१४॥
- सिग्दुर रक्तिम असका तिसक  
 पिघामेहि ज्याराणो,  
 निमज पासत कुसुम फुलर  
 बिसेहि रहन सानि ॥१५॥
- पिघामे काणत बाभिन फुलर  
 बाधर पतोबा केर,  
 हात बुधनित कुज सतिफार  
 सोमबता मुठिछारु ॥१६॥
- पिघामे मयुरे गोमर्षे मेखेला  
 भमका फुलीया चाय,  
 बिसे बुटा तुसि फुल बछा हि रिहहा  
 रवकी पखिसा बाह ॥१७॥
- बाह तलस्तिक भादूजी फुलर  
 आरुमर कोत्तमणि,  
 काजसी घबसी अपराजितर  
 कबासर करघनि ॥१८॥
- साजि काचि येन भाछ पाटराणी  
 गोसापी बाय्यात बहि,  
 बिबा अपरुप रुप साबप्यत  
 येसामे जगत मुहि ॥१९॥
- घरिटे योगान कुसररणी सये  
 फुलरपु बुहि पात,  
 कोनोअनी भाहि सछ्जर मुदि  
 छटियाइ पाकु गाल ॥२०॥

सुनहली दाढ़ीवाले कांचन अमसतास और कनक-चम्पाने  
वेपीके आकारसे कन्याक जूड़ेको सुन्दर ढगसे गूँथकर सजाया  
है ॥१४॥

उषा रानीने असका तिसक रक्षितम सिन्दूरसे सजाया और  
उमक कोमल गालपर कुसुम फूलने नया रंग चढ़ा दिया ॥१५॥

कानोमें अमारके फूलोंके जड़ाळ (एक प्रकारका सोनेका)  
असकार पहना दिए हैं और दोनों हाथोंमें कुज सतिकाओंके  
सोन जड़ी मुठिबास (दाजूकी तरह हाथके असकार)  
पहनायीं ॥१६॥

मोर पक्षीने बड़े बड़े फूलोंके गोमके सहेंगा (एक  
विशिष्ट प्रकारका सहेंगा । असमिया सड़कियोंके प्यारकी बीज)  
पहनाया और रसीली तिससी वहनने बसभूटदार चादरके  
‘रिहा’ (चादरकी तरह कम घौंढाईवाला एक कपड़ा—चादरके  
साथ असमिया महिसाएँ इसे पहनती हैं) सजा दिया है ॥१७॥

माजी फूलोंकी और आकके फूलोंकी चाद ससान्तिक  
‘कोतमणि’ (बीज) बनाई गई श्यामल और स्पेस रंगके  
अपरञ्जित फूलोंकी कमरकी ‘करघनी’ बनाई गई ॥१८॥

(वहागी) सजघजकर गुसावी पसगपर, राजमहिपी (की  
तरह) बैठी हुई हैं (मानो) अपने अपूर्व रूप साबध्यसे  
(उसने) समग्र विद्वको मोह लिया है ॥१९॥

फूल रानियाँ पुष्प-पराग और कोमल पत्सव दे रही हैं—  
तो नहीं कोई आकर पीसा हुआ ‘सछम’ का गुमाल  
शरीरपर उड़ा रही है ॥२०॥



- कम्बर्पं कुमार प्रेमिक बसन्त  
 भाङ्गिछे दरारि ताजि,  
 बिबिध सुरत पबित्र प्रेमर  
 उठिछे बाजमा बाजि ॥२१॥
- मारिसेहि मेये डोसत बापर  
 जिसीये बनाय जासि,  
 टुनी बुसबुसो नाचे छे छे  
 हेदुनुका भोजापासि ॥२२॥
- नब पस्तबित तरु शाखाबोरे  
 हातत खोबर धरि,  
 कोसेकी बाइको बिया गाबसं  
 आनिछे बरण करि ॥२३॥
- आजि पुष्पिमार रातिदो चिकोन  
 भाकास जोनेरे मरा,  
 रगत धषम स्निग्ध किरणत  
 हीहि उठे बसुधरा ॥२४॥
- बीपक सुरत जुरिसे सगीत  
 बिहुवा बाउसाजनी,  
 जिसिकि उठिस बाम्य कामनर  
 त्रिकुञ्ज भइप छनि ॥२५॥
- कटक बनत सि प्रेम गीतत  
 फुसिस केसेकी फुस,  
 भेटफुल कसि जस कुँबरोरो  
 हृदय मुकसि हल ॥२६॥
- जइ जगतत जीव जगतत  
 पाओं सबसोते बेवा  
 महा बिबिध जुरि बिरिडिछे मेन  
 मानन्वर पूग रेवा ॥२७॥

प्रेमी कन्दर्प कुमार बसत आज 'वर रूपमें सञ्जकर द्वारपर आया है—इसलिए विविध स्वरोंमें पवित्र प्रेमके वाद्य बजने लगे ॥२१॥

वादस आकर डोल बजाने लगे। शींगुरोंने दाहनाई बजाई। टुनी बूसबूस आदि पक्षियोंने विविध भगिमाओंसे नृत्य प्रारम्भ किया और "हेटुलुका" (पत्नी विशेष) 'ओमा पानि' नृत्य कर रही है ॥२२॥

मव पत्नबिबित तरु-शाबाएँ हाममें भँवर सिये हुए क्रेतकी वहनको गीत गानेके लिए बुसाकर साईं हैं ॥२३॥

आज पूणिमाकी रात है ज्योत्स्नासे प्सावित आकाश सुन्दर हो उठा है। रजत-धबल स्निग्ध-किरणोंमें यमुन्दरा हैस रही है ॥२४॥

बाबली 'मिहुवा (पत्नी विशेष) न शीपक स्वरसे सगीत प्रारम्भ किया। कमनीय कानोंके निकुञ्ज रपी मण्डप इससे अनुगुञ्जित हो उठे ॥२५॥

उसी प्रेम गीत ही के कारण कण्ठक बनमें कतकी जिस उठी है और जसकूमारी कुमुदिनीने भी हृदय-द्वार उन्मुक्त कर दिया है ॥२६॥

मे देख रहा हूँ—स्वावर-जगम समग्र महाविद्वममें मानों आनन्दकी पूर्ण रेखा बदीप्यमान हो रही है ॥२७॥

३ गोवा हे एबार मोर प्रिय बिहंगिनि

गोवा हे एबार मोर प्रिय बिहंगिनि  
 दुनिले अमिया भात,  
 हृदय परिव शान्त,  
 लसित मधुर स्वरें जीवन तोपिणी,  
 गोवा हे एबार मोर प्रिय बिहंगिनि ॥१॥

यि सुरत मुग्ध हय बनर हरिणी,  
 गीतर सहरो तुसि,  
 गोवा मन प्राप खुसि,  
 जुराक पराण मोर मड भात दुनि,  
 गोवा हे एबार मोर प्रिय बिहंगिनि ॥२॥

प्रकृतिर सोलामूमि सोन्वयर छनि,  
 गहीन नितान बने,  
 जसाह मानन्द मने,  
 डाले डाले उरि फुरा बन बिहारिणी,  
 गोवा हे एबार मोर प्रिय बिहंगिनि ॥३॥

कठत मिसाइ सइ छप्रिग रागिणी  
 प्रेमिका बिहयी तुमि,  
 मुलाला कामन मूमि  
 गिरि गुहा जपबन, सिग्घु तरगिणी,  
 गोवा हे एबार मोर प्रिय बिहंगिनि ॥४॥

परे ने मनत पछी यमुना लटिनी,  
 कबम गछत परि,  
 पधमत मुर धरि  
 करिछिला बजांगना प्रेम जग्माबिनी,  
 गोवा सोइ मुरे मोर प्रिय बिहंगिनि ॥५॥

### ३ गाओ सकवार मेरी प्रिय विहंगिनी !

मरी प्रिय विहंगिनी एकवार गाओ। तुम्हारी अमृतमयी बाणी सुनकर मेरा हृदय शांतिसे परिपूज हा उठता ह। सलिल मधुर स्वरसे हे जीवन-तोपिणी गाओ—मेरी प्रिय विहंगिनी—एक वार गाओ ॥१॥

जिस स्वरसे वनके हरिण मुग्ध हो उठते हैं वसही गीतकी लहरें उठाकर न्यमुक्कत स्वरसे गाओ। तुम्हारा गीत सुनकर मेरे प्राणाको शांति मिल। गाओ मरी प्रिय विहंगिनी—एकवार गाओ ॥२॥

हे वन विहंगिनी साँदयकी खान प्रकृतिकी सीमाभूमिके गभीर निजन वनमें ध्यानन्दोन्साससे वृक्षोंकी डालियोंपर तुम धूमती फिरती हा। गाओ मरी प्रिय विहंगिनी—एक वार गाओ ॥३॥

कण्ठमें छत्तीस रागिनियोंका समन्वयकर प्यारी विहंगिनी—तुमन कामन, भूमि, गिरि-नुफा उपवन सिधु तरंगिनी—आदि सबको माहित कर जामा है अत गाओ—मेरी प्रिय विहंगिनी—एक वार गाओ ॥४॥

ह विहंगिनी—क्या तुम्हें स्मरण है कि यमुना सटपर बदम्ब बूझपर बठकर अपने पथम स्वरसे तुमने द्रजांगनाओंका प्रेमो-ग्मादिनी बना जामा है। गाओ—मरी प्रिय विहंगिनी—उसी स्वरसे एक वार गाओ ॥५॥

हृदयर स्तरे स्तरे वाशव काहिना,  
 अगाह अतीत स्मृति,  
 सोमार सुबसा गीति,  
 मानस हृदत हहि भाशा कुमुदिनी,  
 गोवा हे एवार मोर प्रिय विहंगिनि ॥६॥

मस्यबासी मानवक बिबस जुराणि,  
 तोमा हेन प्रियनिधि  
 पठियाइ बिले बिधि,  
 स्वर्गीय बुतर बेरो कळे सुधा सानि,  
 गोवा हे एवार मोर प्रिय बिहंगिनि ॥७॥

एवार घुराइ गोवा मानस मोहिनी,  
 सरसा बिहगी सुनि,  
 गीत सुनि याओ पमि  
 एकाचपतीया हइ थाकों किबा गणि,  
 गोवा हे कोमल सुर प्रिय बिहंगिनि ॥८॥

जर्जरित करे तनु ससार पोरणि,  
 बीणार मधुर ताने,  
 नापाओ सास्वना प्राणे,  
 मस्फुट सगीते बिया मृत सजीबनी,  
 मामारिबा अभागाक प्रिय बिहंगिनि ॥९॥

घान्तिर भराल बेहि । सुइ हिया यनि,  
 नाजाना भागर प्राणे,  
 नाजाना बुपये बेने,  
 पुस मघु बुहि फुरा फुलनि पुसनि  
 गोवा ह एवार मोर प्रिय विहंगिनि ॥१०॥

हृदयके प्रति स्तरमें शीघ्रवकी कथाएँ समाई हुई हैं। तुम्हारे मधुर गीतने अतीत स्मृतिको जगाकर मानस-सरोवरमें आधा-कुमुदिनीको विकसित कर दिया है। गाओ—मेरी प्रिय विहगिनी एक बार गाओ ॥६॥

मर्त्यबासी मानवको धाम्नि प्रदान करनेके लिए बिघाताने तुम्हारे कण्ठमें अमृत भरकर स्वर्गीय द्रुतके वशसे तुम्हें अपनी—प्रियनिधि बना भेजा है। गाओ—मेरी प्रिय विहगिनी—एकबार गाओ ॥७॥

हे मानस मोहिनी—तुम सरस विहग हो तुम्हारे गीत सुनकर मैं मग्न हो जाता हूँ और तल्लीन होकर कुछ गुनगुनाता रहता हूँ—गाओ—हे प्रिय विहगिनी—एकबार कोमल स्वरसे गाओ ॥८॥

संसारकी ज्वालासे शरीर ज्वरित हो रहा है। वीणाकी मधुर रागिणीसे मुझ सान्त्वना नहीं मिल पाती। तुम्हारे अस्फुट सगीतसे मृत सबीबनी फूँक दो। गाओ—हे प्रिय विहगिनी—मुझे हताश न करो ॥९॥

तुम धान्तिबा भण्डार हो—न तुम्हारा छोटासा हृदय पकावट ही जानता है—और न उस दुःखकी अनुभूति ही होती है धीके तुम फसोंका मधु पीत हुए वाग-वगीचोंमें घूमती फिरती हो। अतः गाओ—हे प्रिय विहगिनी—एकबार गाओ ॥१०॥

कोबाघोल प्रियतम काक नो बखानि  
 कुसे कुंसे घुरि घुरि,  
 गोवा कल ठेमो धरि,  
 प्रेमिक मिलन गीत मधुर भाविणी,  
 गोवा हे एवार मोर प्रिय बिहगिनि ॥११॥

कल पाम सेइ शक्ति ज्ञान विकासिनी  
 हिया प्रम रते मरा  
 बने बने गाइ फुरा,  
 बिभूर महिमा यज्ञ तुमि बिरहिणी,  
 गोवा हे एवार मोर प्रिय बिहगिनि ॥१२॥

बिहगी नोहोबा तुमि कार प्रेमाघीनि  
 कोने नो करिले कोबा,  
 अमृत भार घोषा,  
 कोन सेइ जन प्रेम कदणार छनि,  
 देखुबाइ बिया मोक प्रिय बिहगिनि ॥१३॥

दुता हे एवार पखी अभागार बापी  
 मासागे पायिब सुख,  
 मजरी मनत हुज्ज,  
 तोमार लगते जरि घाओ बिहगिनि,  
 सहाय यइछे यत प्रेम मन्दाकिनी ॥१४॥



प्रियतमे, यताओ ङुज-कुजमें कितनेही रूपोंमें किस प्रेमीकी प्रसन्नतामें मिलन गीत गाती हो—हे मधुर भावणी—गाओ—मेरी प्रिय विहगिनी—फिरसे एक वार गाओ ॥११॥

वह शान विकासिनी शक्ति मुझे कहाँसे मिलेयी ? तुम्हारा हृदय प्रेम रससे परिपूर्ण है । हे विरहिणी तुम बिभुकी महिमा बनबनमें घूम घूमकर गा रही हो—गाओ एक वार मरी प्रिय विहगिनी गाओ ॥१२॥

तुम विहगिनी नहीं हो यताओ किसकी प्रमाधीना हो किसन तुम्हें अमृतका भार ठोनबासी बनाया है । प्रेम और कदगाकी खाम वह कौन है ? गाओ—हे प्रिय विहगिनी—मुझे उन्हें दिखा दो ॥१३॥

हे पक्षी—एकवार इस अभागकी भी बात सुन लो—मुझे पार्थिव सुख नहीं चाहिए (उनके अभावसे) मममें भी मैं दुःख का अनुभव नहीं करूंगा । जहाँ सवा प्रेमकी मन्दाकिनी प्रवाहित हो रही हो—वहाँतक मैं तुम्हारे साथ उड़ चर्नुंगा ।



## ४ केंतेकी घराड

- अ केंतेकी, अ केंतेकी किय एनेबरे  
 शुषुये शुषुये उरि उरि  
 किय फुरा घूरि घूरि,  
 कार मो बिरह गोवा अबुन भापारे ॥१॥
- गगन बिहारी पखी कोन सुमि बोया,  
 सोबालय एरि सुमि  
 फुरा डासे डाले अमि,  
 आवेग सुरत किजो प्रेम गीत गोवा ॥२॥
- स्वाधीन भावरे पूर्ण हृदय सोमार  
 गहीन जारणि बन,  
 किम्बा पुष्प उपबन,  
 करा गइ सुमि तात भानग्ने बिहार ॥३॥
- “केंतेकी” लाहरी माम कि गुणत ससा  
 कार प्रेमे भस्त हइ  
 धोर मरण्यत गइ,  
 गछ सता गिरि मधी सवाके भुसासा ॥४॥
- प्रेमगीत गावसइ कत मो दिबिसा,  
 एकेटि भावर गान,  
 एकेटि प्राणर ताने,  
 बट्टया ससार सुमि बोमस करिता ॥५॥
- निजम रुपर निगा गहीन वमत  
 अमिया गीतर धार  
 दुनिटिनी कत धार  
 धोरे धोरे मिसि योवा धोर बताहत ॥६॥

४ केतेकी पक्षी

अरी केतेकी अरी ओ कनेकी इस तरह घूममें क्यों घूमती फिरती हो और अपनी अनजान बोलीमें किसकी बिरह बेदना गा रही हो ? ॥१॥

हे गगन बिहारी पक्षी तुम कौन हो यथाओ लोकालय त्यागकर कुक्षीकी टहलियों और डालियोंपर घूमती फिरती भावेग भर स्वरसे किसका प्रेम-मगीत गा रही हो ? ॥२॥

स्वाधीन भावोंस ही तुम्हारा हृदय परिपूर्ण ह । गहन निर्जन वनों अथवा पुष्पोद्यानोंमें आकर तुम आनन्दसे बिहार करती हो ॥३॥

कतेकी ऐसा सुन्दर नाम सुमने किस गुणस लिया ? सुमने किसके प्रेममें उमरत होकर घोर अरुण्यमें बुझ सता गिरि, मरी आदि सभीको मोहित कर लिया ? ॥४॥

प्रेमगीत गाना सुमन कहाँस सीखा ? एक ही भावनास परिपूर्ण नाम और एक ही जीवन-सामये कठोर ससारको भी सुमन कोमल बना दिया है ॥५॥

निस्तब्ध दोपहर निगीधकाममें सपन बनमें धीरधीरे पवनके साथ विभीन होते हुए तुम्हारे सुन्दर गीतोंको मने कितनी ही बार सुना है ॥६॥

## ४ केतेकी चरात

- म केतेकी, म केतेकी किय एनेबरे  
 शुभूये शुभूये उरि उरि  
 किय फुरा धूरि धूरि,  
 कार नो बिरह गोवा मभुन भापारे ॥१॥
- गगम बिहारी पखी कोन सुमि कोवा,  
 सोकालय एरि तुमि  
 फुरा डाले डाले भ्रमि,  
 माबेग सुरत किनी प्रम गीत गोवा ॥२॥
- स्वाधीन भावेरे पूज हृदय तोमार  
 गहीन जारणि बन,  
 किम्बा पुप्य उपबन,  
 करा गइ सुमि तात जानन्बे बिहार ॥३॥
- "केतेकी" साहरी नाम कि गुणत सता  
 कार प्रेमे मत्त हइ  
 घोर भरण्यत गइ,  
 गछ सता गिरि मदी सबाके भुसासा ॥४॥
- प्रेमगीत गाबसइ कत नो शिकिला,  
 एकटि भाबर गाने  
 एकटि प्राण्यर ताने,  
 कटुवा ससार तुमि कोमस बरिता ॥५॥
- निजम रुपर निगा गहीन बनत  
 भमिया गीतर धार  
 शुनिछिनी कत धार,  
 धीरे धीरे मिसि मोवा धीर बताहत ॥६॥

## ४. केतेकी पक्षी

अरी केतेकी अरी ओ केतेकी इस तरह धून्यमें क्यों धूमती फिरती हो और अपनी अनजान बोलीमें किसकी बिरह वेदना गा रही हो ? ॥१॥

हे मगन बिहारी पक्षी तुम कौन हो घटाओ मोकामय त्यागकर वृक्षोंकी टहनियों और डालियोंपर धूमती फिरती आवेग भरे स्वरसे किसका प्रेम-सगीत गा रही हो ? ॥२॥

स्वाधीन भावोंसे ही तुम्हारा हृदय परिपूर्ण ह । गहन निर्जन वनों अथवा पुष्पोद्यानोंमें आकर तुम आमन्दसे विहार करती हो ॥३॥

“केतेकी” ऐसा सुन्दर नाम तुमने किस गुणसे लिया ? तुमने किसके प्रेममें उन्मत्त होकर घोर भरप्यमें बृक्ष, सता गिरि मदी आदि सभीको मोहित कर लिया ? ॥४॥

प्रेमगीत गाना तुमने कहाँसे सीखा ? एक ही भावने परिपूर्ण गान और एक ही जीबन-तानस कठोर नन्दने ही तुमने कोमल बना दिया है ॥५॥

निस्तब्ध दोयहर निगीयमानने — — —  
पवनक साथ विसीन होते हु नन्दने — — —  
किन्तनी ही वार मुना है ॥ ॥

मरतत वद योवा सगीतर धारा  
 एकेधरे शुनि शुनि  
 पाकों किये भाबि गणि,  
 आपोनाक भापुनिये ह्यो आत्महारा ॥७॥

तोमार सगीते प्रिय जाने कि मोहिनी,  
 भाषार पदुम पाहि  
 मारे मिचिकिया हाहि,  
 हृदय बीणात बाजे प्रेमर रागिणी ॥८॥

प्रेमिक मिसम भाशा बुके बाग्य सह,  
 आनर सोतत माहि  
 वजाइ मृदुल याही  
 मिसम वातरि दिया प्रेमिकक गइ ॥९॥

तुमि बिने सखी केई संसारत नाइ,  
 परर सुखत सुखी  
 परर दुखत दुखी  
 एकटि उद्देश्य सह फुरिछा सबाय ॥१०॥

धनर बिहग तुमि प्रमर भिखारी  
 मानुहर रीतिनीति  
 बुदिनीया स्नेह प्रीति  
 सकसीके मभोधा बि हसा धनधारी ॥११॥

किहनु मोचीया पपी मानुहर मुख  
 पायिब सुखर साइ  
 मालागे मे भास बाइ  
 सबाख्य माइ मेकि ससारत मुख ? ॥१२॥

मत्स्यभोजनमें प्रवाहित सगीतका प्रवाह मुनत मुनत तस्तीन हो कुछ सोपताही रह जाता है और अपने आपमें खो जाता है ॥७॥

हे प्रिये तुम्हारे सगीतमें कौनसा सम्मोहन-मंत्र है जिससे अन्तरमें म्विष आगाके कमल-दल म्विष हाम्पसे विस उठते हैं और हृषय-बीणामें प्रमकी रागिनी बज उठती है ॥८॥

प्रियतमकी मिलन-कामना हृदयमें सँजोकर आनन्द प्रवाहमें लीन मृदुसवणी बजाती हुई प्रमीका मिसनकी मूचना देती हो ॥९॥

तुम्हारे बिना ससारमें मेरा कोई नहीं है । तुम दूसरोंक सुखमें सुखी और दुःखमें दुःखी हा—एक ही उद्दम लिए तुम निरन्तर घूम रही हो ॥१०॥

बनकी बिहगिनी तुम प्रेमकी मित्रारिण हो । मनुष्यकी रीति-नीति और दो दिनोंकी स्नेह प्रीति सभीका परिर्याग कर तुम बनचारिणी बनी हा ॥११॥

हे पत्नी तुम मनुष्यका मुह क्यों नहीं देखती ? पापिक सुखोंक लइइ क्या तुम्हें अच्छ नहा लगत ? क्या वन्मुत ससारमें सुख नहीं है ? ॥१२॥

मरतत बइ योबा संगीतर धारा  
 एकेबरे शुनि शुनि  
 भाकों किबा भाबि गणि,  
 आपोनाक आपुनिये ह्यो आत्महारा ॥७॥

तोमार सगीले प्रिये जाने कि मोहिनी,  
 भाशार पडुम पाहि  
 मारे मिधिकिया हाहि  
 हृदय बीणात बाज प्रमर रागिणी ॥८॥

प्रमिक मिसन भाषा बुके बान्धि सइ,  
 भागन्व सोवत भाहि  
 बजाइ मृदुस याही  
 मिसन बातरि दिया प्रेमिकक गइ ॥९॥

शुमि विने सजी बई संसारत नाइ,  
 परर सुखत सुखी  
 परर दुखत बुखी,  
 एकटि उद्दय सइ फुरिछा सदाय ॥१०॥

बनर बिहग शुमि प्रेमर मिजारी  
 मानुहर रीतिनीति  
 बुदिनीया स्नह प्रीति  
 सकसोके मप्रोषा बि हमा मनबारी ॥११॥

बिहनु मोबीया पखी मानुहर मुख  
 पायिब सुखर साद  
 नासागे न भास बाद  
 सबाक्ये नाइ मकि ससारत मुख ? ॥१२॥

मर्त्यलोकमें प्रवाहित सगीतका प्रवाह सुनत सुनते तस्तीन हो कुछ सोचताही रह जाता हूँ और अपने आपमें खो जाता हूँ ॥७॥

हे प्रिये तुम्हारे सगीतमें कौनसा सम्मोहन-मंत्र है जिससे अन्तरमें स्थित आशाके कमल दल स्मित हास्यसे खिल उठते हैं और हृदय-वीणामें प्रमदकी रागिनी बज उठती है ॥८॥

प्रियतमकी मिसल-कामना हृदयमें संजोकर आनन्द प्रवाहमें सीम मुबलबधी बजाती हुई प्रेमीको मिसलकी सूचना देती हो ॥९॥

तुम्हारे विना ससारमें मेरा कोई नहीं है। तुम दूररोंक सुधमें सुधी और दुखमें पुखी हो—एक ही उद्देश्य लिए तुम निरन्तर धूम रही हो ॥१०॥

बनकी बिहुगिमी तुम प्रमदकी मिथारित हो। मनुष्यकी रीति-नीति और दो बिनोंकी स्नेह प्रीति समीका परित्याग कर तुम बनपारिणी बनी हो ॥११॥

हे पत्नी, तुम मनुष्यका मुंह क्यों नहीं ऋग्रती? पामिव सुखोंक सङ्ग क्या तुम्हें अच्छे नहीं लगत? क्या वन्द्युत-ससारमें सुख नहीं है? ॥१२॥



क्षुनितमाने प्रिय सखा क्या एति कर्मों  
 एकोद्वे नासागे मोक,  
 मकरों खेजार शोष,  
 जन्म बन्मान्तरे येन तोमाको हें पायों ॥१३॥

सुन्दर बुद्धनि हिया नाइ भेवामेव,  
 एके ध्यान एके ज्ञान,  
 मिलि माव बुद्धि प्राण,  
 कदापितो बुझनर महव बिच्छेद ॥१४॥

ह प्रिय सखी—एक बात कहूँ—सुनोगी क्या ? मुझे और कुछ नहीं चाहिए । ( उनके लिए ) मैं किसी प्रकारका शोक भी नहीं करूँगा । सिर्फ एकही अभिलाषा है कि जन्म जन्मान्तरमें तुम्हींको मैं प्राप्त करूँ ॥१३॥

सुन्दर दुखी दो-हृदय जिनमें कोई भवभाव नहीं । एक ध्यान, एक ज्ञान—दोनों एक प्राण हो जाएँगे और कभी भी दोनाका बिच्छद नहीं होगा ॥१४॥

---



## ५. पविष्ठाभ्रम

हे पथिक अपना सापित जीवन यहाँ आकर शान्त करो—  
यहाँ क्षणभर मात्र बठनेस आपका अन्तर शान्त हो जाएगा ।  
यह गिरि सध्याभ्रम पथिकके लिए शान्ति-निकेतन और  
प्रेम-पुरी है ॥१॥

यह प्रकृतिका काम्यवन ऋषिका आश्रम है । देव-वांछित  
यह पुरी अत्यंत सुन्दर है । चारों ओर ज्वालहीन निस्तब्ध  
और निर्जन हैं गंभीर प्रकृति योगीक समान ध्याममें  
मग्न है ॥२॥

पर्वत-कन्या सुन्दर स्वभाववाली सध्या भक्ति कान्ता—  
सीतों बहनें स्वर्गीय भावोंस महिमाके गीत गाती हैं और  
ब्रह्मपुत्र मानो स्वामीकी गोदमें सम्भाषण कर रही हैं ॥३॥

दोनों तरफ फूलोंकी पक्षियाँ—बृक्ष लताएँ झूमझूमकर ऋषिके  
शरणोंमें प्रणाम करती हैं । गगनबिहारी पक्षी काननको  
मोहित कर कुञ्ज काननमें मगन आरती करते हैं ॥४॥

(यहाँ किसी कालमें) पवित्र यज्ञकी यद्यसे दूर-दूर तक  
पुष्प तपोवन पवित्र हो उठे थे । वनक बिहग और हिरण  
प्रेममुग्ध होकर सामवेदके गीत ध्यामस सुना करते थे ॥५॥

स्वर्गके विद्याधर, देव और देवियाँ विविध भगिमासे द्वाबाध  
बजाया करते थे और ऋषि-कन्याएँ मिसकर पंचमस्वरमें  
दीपक अलाप आराधनाके गीत गाया करती थीं ॥६॥

५. षोडशोऽध्यायः

हे पयिक, कुरोवाहि तापित धीवन,  
 सन्तेक वहिसे हिया परिब शीतस,  
 भागस्था पयिकर शान्ति निकेतन,  
 भमया प्रेमर पुरी गिरि सध्याचल ॥१॥

प्रकृतिर काम्यवन श्रुविर भाभम,  
 जमर बाँछित पुरी अति बितोपम  
 धारि बिश निजजास निमात निजम,  
 गभीर प्रकृति योगी ध्यानत मयम ॥२॥

सध्या ससिता कान्ता पबूधत जापारी,  
 तिनिमोटी बाइ मनी स्वर्गीय भाबत,  
 महिमार गीत गाय स्वभाब मुम्बरी,  
 सभापिछे ब्रह्मपत्र स्वामीर कोसात ॥३॥

हुकाये फुलर शारो गछ सतिकाइ  
 हासिजासि सेया करे श्रुविर पायल,  
 गगम विहारी पछी कानन मुलाइ,  
 मगस भारति करे कुञ्ज कामनत ॥४॥

पवित्र होमर गये बहु दूरसइ,  
 करिछित सुपबिन्न पुष्य तपोवन  
 बनर धराइ पठु प्रमे मुग्ध हइ  
 बाण, पाति दुनिछित सामबेद गाम ॥५॥

स्वरगर विद्याधरो बेद विष्वांगमा,  
 बत्राय भमर बाछ छत्रो धरि धरि  
 दोपक पचम सुरे गीत भाराधना  
 गाइछित मिति यन श्रुविर जीपारी ॥६॥

## ५. षोडशोऽध्यायः

हे पथिक अपना स्थापित जीवन यहाँ आकर छाँट करो—  
यहाँ क्षणभर मात्र बैठनेसे आपका अंतर घान्त हो जाएगा।  
यह गिरि सम्भाषण पथिकके लिए घान्ति-निश्चयन और  
प्रसन्न पुरी है ॥१॥

यह प्रकृति का काम्यवन ऋषिका माश्रम है। देव-वाञ्छित  
यह पुरी अत्यन्त सुन्दर है। चारा ओर ज्वासहीन, निस्तम्भ  
और निर्जन है गभीर प्रकृति योगीक समान ध्यानमें  
मग्न है ॥२॥

पर्वत-कन्या सुन्दर स्वभाववासी सध्या, ललिता कान्ता—  
तीनों बहनें स्वर्गीय भावोंसे महिमाके गीत गाती हैं और  
दृष्टपुत्र मानते स्वामीकी गोदमें सम्भाषण कर रही हैं ॥३॥

दोनों तरफ फूसोंकी पक्षियाँ—बृक्ष सत्ताएँ झूमझूमकर ऋषिक  
चरणोंमें प्रणाम करती हैं। गगनबिहारी पक्षी काननका  
मोहित कर कुछ काननमें मंगल आरती करते हैं ॥४॥

(यहाँ किसी काममें) पक्षि यज्ञकी गधसे दूर-दूर तक  
पुण्य तपोवन पवित्र हो उठे थे। इनके विहंग और हिरण्य  
प्रेममुग्ध होकर सामवेदके गीत ध्यामस सुना करते थे ॥५॥

स्वर्गक विद्याघर, देव और देवियाँ विविध भगिमासे दबबाध  
ब्रजाया करते थे और ऋषि-कन्याएँ मिलकर पञ्चमस्वरमें  
दीपक अमाप आराधनाके गीत गाया करती थीं ॥६॥

इन्द्रर अमरावती प्रमोद कामन,  
भरतमूमित खोवा किबा घोमा घरे  
बनवेबी सवे पिघि पुप्य आमरण,  
प्रकृति फूमनि माजे मानन्वे बिहरे ॥७॥

धुतुराम बसन्तर प्रिय संभावणे,  
सौम्यम्य ओपति परे पुप्य कामनर  
फुसर सुगम्य आनि सांध्य समोरणे,  
बिलाइछे शान्ति सुधा स्वर्गाय प्रेमर ॥८॥

सुबगी कुसिये माते अपूर्व तानेरे,  
जिलोये बजाय बीषा मिसन मुरत,  
गोरब प्रकृति भेदि ससित प्रकारे,  
उठे तार प्रतिध्वनि काम्य कानन्त ॥९॥

दरतर लीज ज्योति पुबति जीनर,  
बिरिछे येतिया आहि फुसर घोपात  
कि ये मनोमोहा बुझ्य कुज कामनर,  
पराण बिभीत हय पवित्र भावत ॥१०॥

घहस वयामस क्षेत्र शिलनिरे पया,  
लखा आठे बगिष्टर हृदय कुगत  
अतीत गोरब स्मृति आर पुष्य बषा,  
बिदवसीसा अभिनय कौतिलात दात ॥११॥

वत युग मार गल बासर सेतल,  
आजिमो बगिष्टापम आठ एजे भावे,  
आम्यर गोरब घोपि मस्य भुपनत,  
बिजतार हेम्बोसनि सहिटे गोरबे ॥१२॥

मानो इन्द्रकी प्रमोदकानन अमरावती ही मत्स्यमें सुप्तोभित हो रही है। वनदेवियाँ पुष्पोंके आभरण पहनकर प्रकृतिके पुष्पो-द्यानमें आनन्दसे बिहार कर रही हैं ॥७॥

ऋतुराज वसन्तके प्रिय सम्भाषणसे पुष्पकाननका सौंदर्य छसक रहा है और साँध्य समोरण फूलोंकी सुगन्ध साकर स्वर्गीय प्रेमकी घान्ति सुधा बिरतप कर रहा है ॥८॥

रसीली बोकिल अपूर्व स्वरसे गाती है। शींमुर मिसन स्वरमें बीणा बजाते हैं। समित्त झंकारसे मीरव प्रकृतिको भेदकर कमनीय कामनमें उसकी प्रतिध्वनि गूँज उठती है ॥९॥

धारदीय चन्द्रमाकी प्रभातकालीन क्षीण ज्योति जब पुष्प गुच्छ पर पड़कर झसकती है, उस समयक कृञ्ज काननका दृश्य कितना मनोरम हो उठता है! पवित्र भावोंसे प्राण आत्म विमोर हो उठते हैं ॥१०॥

बिस्तृत ब्यामस क्षेत्र गिमावासे गुंभी हुई है। अतीत गौरवकी स्मृति और पुष्प क्यारें तथा गत गत विद्व-सीसा अभिनय-बीरति गायाएँ वशिष्ठक हृदय-दुर्गपर लिखी हुई हैं ॥११॥

कालक्रममें कितने ही युग बीत गए, लेकिन वशिष्ठायम आज भी उमी तरह ही है। मय्य भुवनमें आर्योंकी गौरव घोषणा करनक हतु (उसने) विजेताओंके (काम) आक्रमण मौन रहकर सहे हैं ॥१२॥



६ मूरण

माछिसों निबेइ सह एकोके मजना  
मातुर कोनात रगे नाचि फुरिछिसों  
मायामय ससारर बिचित्र भामोना,  
हृहा कन्डा दुइय किमों एको मेरेछिसों ॥१॥

तोतयाओ तुमि देय, अरुजिते माहि  
भाग्यसिपि देखि मोर जठिछिसा हूहि  
पाहरिसों भतीतर सि सच फाहिनी,  
नापामों सि सुख भाव इह जनमत ॥२॥

देछिसों ससार चित्र, प्राणर संगिनी  
हल मोर बुखे बुपी ससार बनत  
सतियाओ तुमि मोर बेछि रेहदप,  
प्रणयर परिणाम बुजिसा स्वल्प ॥३॥

भरि बिसों जीवनर तृतीय पापत,  
प्रिय परिजन सह पातिसों संसार,  
कत ये सहिसों बुप जीवन पपत,  
मेरेछि जपाय एको करों हाहाकार  
तोतयाओ तुमि मोर बहि गितानत,  
जोवनर दाय सीसा सेजिता भाग्यत ॥४॥

माछिस आधय तद जरि गन बासा,  
सम्पहर लपरीया, भारतीय स्वजने,  
उमति नाचाय मोरु बेछि कुरदगा,  
अकलइ बान्धि बान्धि फुरों बने बने  
सेतियाओ तोमावटे सुबरि सुवरि,  
विचारों चरम सच्य छिनि माया जरि ॥५॥

## ६ मरण



मैं बहुत छोटा था। कुछ जानता नहीं था। माँकी गोदमें उल्लाससे खला कूला करता था। मामामय ससारके विचित्र माटपके हास्य और क्रन्दनके दृश्य मैंने कुछ भी नहीं देखे ॥१॥

हे देव ! तब भी तुम अलक्षित रूपमें आकर मरी भाम्य सिपि देखकर हँस पते थे । आज जतीतकी उन बातोंको मैं भूल गया हूँ । वह सुख इस जन्ममें अब और नहीं मिलेगा ॥२॥

ससार चित्र मैंने देखा । ससारमें मेरी प्राण-सगिनी मेरे दुःखमें दुखी हुई । फिर भी तुमने मेरा रग-डग देखकर प्रणयका परिणाम ठीक समझ लिया था ॥३॥

अब मैंने जीवनके तृतीय स्तरमें प्रवेश किया—प्रिय परिजनको लेकर ससारकी रचनाकी—कितने नहीं दुःख मैंने सहन किये जीवन पथ पर ! उस समय कोई उपाय न देखकर मेरा मन हाहाकार कर उठता था । हे देव तब भी तुमने मेरे सिरहाने बैठकर जीवनकी शोष शोभा मेरे भाम्यमें सिख दी ॥४॥

मेरा सहारा ही टूट गया—पर उभड़ गया सम्पदाके पक्षे आनसे मेरी दुर्दयामें आत्मीय स्वजन भी मुझे अनदेखा करने लगे । मैं अकसा ही रोता हुआ—अगसोंमें भटकता था । हे देव ! उस समय भी मायाकी बोरी लोड तुम्हारा ही ध्यान कर करम सीमाका अनुसंधान करता था ॥५॥

आहा मोर धिर सगो, आहा प्रिय, सखा,  
 सोमार मुळके चाइ कुळ पाहरिम,  
 दिव्य रुप धरि तुमि दिवा मोक बेळा,  
 पिबिना चिताफ मइ साबटि धरिम  
 सिबिनाहे दुर हव ससार घालमा,  
 सिबिनाहे प्राचे मोर लमिव साम्बता

॥६॥

आओ हे मरे पिर साथी मरे सखा आओ—मैं तुम्हारा मुँह  
 देखकर ही कुछ घुस जाऊँगा। जिस दिन मैं पित्तामिका  
 भासिगन कर भूगा, उस दिन मुझे दिव्य रूप धर दशन दोगे।  
 उसी दिन मेरी ससार-यातनाका अन्त होगा और उसी दिन मेरे  
 प्राणोंको सान्त्वना मिलेगी ॥६॥

---

७ दक्षिणतरा

- म मरमी बहु मोर म दक्षिणतरा  
कोन मुर्छनात तोर घाजे दोसोरा,  
मिसन माधुरी लइ  
आहिछ साबरी भइ  
कोन बिरही क बिबि प्रेमर कतरा  
पवुसिते आछे रइ गुप्तचि कतरा ॥१॥
- आसोक मे अधकार सुदूर प्राप्त  
कोन सागरर परा  
अमृत गरम भरा  
मेसि बिछ सफुरादि मोहिनी कठर  
बइ गल मिश्रव्यापि रिक बिगन्तर ॥२॥
- कोनेनो पठाले लोक कसकण्ठी करि  
पुचे बिले घसफाट  
मातिलि मुचबी मात  
शोसली मलया बाघे बिने पाल तरि  
प्रकृतिर निस्तप्यता गल भेद करि ॥३॥
- जह गल धर्या गल आहिल शरत  
बिधाघरी पित्रलजा  
पजनो बिलहि बजा  
माघे बत छम्ब तुसि कदग गुरत  
धमक सगासि रिनी मम्बनपुरत ? ॥४॥
- कापत मगतघट प्लसर करणि  
मिति यत बनमाता  
पिछाइछे बनमाता  
पुस्त रादाइ बिछ बुगदुगोपनि  
घरिछे ऊपाइ रूप बनर वरणी ॥५॥

## ■ दहिकतरा (पक्षी विशेष)

ऐ प्यारी सखी दहिकतरा किस मूर्च्छनामें तुम्हारा बुतारा बन रहा है ! मिलन-माधुरी लेकर तो तुम आई हो पर किस बिरह्रीको प्रेमका संदेश दोगी ? बह्द्वारपर 'गुलबि 'तरा ( फूल विशेष ) तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं ॥१॥

तुम कौनसे सूदूर प्रान्तका आलोक और अघकार सा रही हो ! अपने मोहनी कण्ठसे किस सागरके अमृत और विषको बाल रही हो जिससे कि विश्वके विग्विगन्त परिभ्याप्त हो रहे हैं ॥२॥

कसकण्ठी बनाकर तुम्हें किसम भेजा है ? पूर्व दिशामें पी फटत ही तुम्हारे सुरीली ठान सुनाई देती है, जो प्रकृतिकी निस्तब्धता भेदती हुई दूर बसी जाती है बहुत कुछ उसी तरह जिस तरह शीतल मलय वायुसे पासतनी नाव घसी जाती है ॥३॥

प्रीप्स गया बर्षा गई और आ गई शरद् ऋतु इसमें विद्याधरी चित्रसखा सपी खजन पक्षीने दर्शन दिया । यह कितने ही छंदोंमें बहण स्वरासे मृत्यु करती है जिससे नम्वनपुर आश्चर्य निभोर हो जाता है ॥४॥

गोदमें मगसबट और फूसोंकी डामी मिण बनवासाएँ आपसमें वनमासा पहना रही है और बदापर दुगदुगो ( बस्त्रविशेष ) सजा रही है । उपातों भी धीरे धीरे सज-घजकर स्वप्नित वप न मिया है ॥५॥

पुष्प वृष्टि हस तोर परमममित  
 निमज पाहूनि डरा  
 पानी पियसिरे भरा  
 मुकुतार शुभ्रमासा इयामस पाटीत  
 कि मुम्बर स्निग्ध कान्ति फुस्स बनमित ॥६॥

इयामस तृचेरे भरा घुनीया पधार  
 मुम्बरी धारबबाला  
 पिधासे हरित माला  
 संगीतर हिस्तोलत प्रेमर माधार  
 फुसित ह्रबत कत कुमुद नहू सार ॥७॥

आछिसि निमाती ह्रइ कत दिन धरि  
 बसिस दौतल बाप  
 कुदघाइ दिसे राय  
 आहिस वसन्त बरा साहबाह करि,  
 आबरि आनिसि तये तुसि सुवागरि ॥८॥

लीरघाबी मुकच्छर मस्तार ध्वनित  
 बाजि उठ बनबेजु  
 उरि फुरे फाहुरेण  
 करे नृत्य लीलाभुंगी फुस्स फुसमित,  
 उठिस स्पन्दन गिरि शिष्टरममित ॥९॥

पस्तबे पस्तबे भरि उठे गीति छन्द,  
 किबा अपरप दृश्य  
 उद्बोधित महाधिरव  
 स्वरगर परा आनि अमूतर जांड  
 दासि बिछ भरतत प्रम मकरन्द ॥१०॥

तुम्हारे स्पर्श मात्रसे ही मानो पुष्पवृष्टि हो रही है। हरी भरी तृणाच्छादिता भूमि पानी पिपसि" (एक प्रकारका पौधा) स भरी हुई है जो मानो श्यामस बिस्तरपर मुक्ताकी दृग्भ्रम मालाएँ हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट वनमें कितनी सुन्दर स्निग्धकान्ति बिराजमान है ! ॥६॥

श्यामस तृणोंसे सुन्दर खेत विभूषित है। मानो सुन्दरी सरदबासान ही यह हरित मासा पहनाई हो। प्रमाघार हृदयोंमें सगीतकी हिल्लोरोंसे न जाने कितने ही कुमुद प्रस्फुटित हो रहे हैं ॥७॥

कितन दिनों तक तुम नीरव रहीं ? (सकल जब) पीतल वायु प्रवाहित होने लगी कुदवा (पत्नी विधेय) बोलने लगी और वसत बरबेदामें सञ्चल कर आया तब तुम ही मगल पीतोंसे उसका स्वागत किया ॥८॥

जिस समय मधुर ध्वनिसे मल्हार अलापती हो उस समय मानो तुम्हारे कठस कीरकी बर्षा होती है जिससे बन बेशु बज उठती है फाम रणु (गुसास) उड़ने लगती है तथा विविध भाव भगिमासे अमर नृत्य करन समता है— जिसम समस्त गिरि गिञ्जर स्पन्दित हा उठता है ॥९॥

पत्तों-पत्तों तक में गीतिछन्द भर उठा है।— इस तरह प्रेम मकरन्दमे परिपूण बिस्वके इस अनुपम दृश्यको देखकर महाबिदय उद्भसित हो उठा है। मानो तुम ही स्वगम अमृतका पात्र सा मर्त्यसौख्यमें उड़के विद्या हो ॥१०॥



कार प्रेरणात तद्द्वि जुरिति सगीत  
 सटिमीर क्षीरघारा  
 कार प्रेमे आत्महारा  
 यि गीतर तरगत मूस तरगित,  
 ह्वय भाप्सुत करे माबोन भगीत ॥११॥

सगीतर सुधा घारा बिसि तद्द्वि बाकि,  
 भाकाशत रामघेमु  
 रजिले नीसिमा तनु  
 खेवपुरी एरि थइ भाकाशो नतकी,  
 भरतत भरि दिसे उवशी बतेफी ॥१२॥

भेपक्या सत्रे पिधि तद्वितर हार,  
 गात सइ भोसांबरी  
 आरोवाल छनि घरि  
 भाप्रहरे दिछे लोरु प्रीति उपहार,  
 कुजे कुजे घरि कत करिछ पिहार ॥१३॥

भामोडि गधर्बपुर मग्गन बामन,  
 गानि बिली विडबजित  
 मदाससा प्रेम गीत  
 पातिसि प्रेमर हाड सीसा निचेतन  
 करे घत घसस्तइ कुज निघुषन ॥१४॥

तोणगटि सोयारवे तद्द्वि भोशामणि  
 बनर कथिता रधि  
 दिउ प्रेम उगपाधि  
 घवल मघर मुट तुलापातप्रनि  
 कत बाय्य कपारेइ हण्ठे गुजनि ॥१५॥

वताओ तो किसकी प्रेरणास और किसके प्रेममें आत्मविभोर होकर तुमने गीत प्रारम्भ किए, जिनकी सहरोमें मौन ही हृदय नाच उठा है ॥११॥

तुम्हारे समीपने मानो अमल की धारा ही घहा दी—जिसन आकाशक नीसे धरीरको भी इन्द्रधनुष के रूपमें प्रभावित किया ह। एसा प्रतीत होता है कि वधपुरीकी नर्तकी—उर्वशी केतकीके रूपमें मर्त्य-लोकमें आई ह ॥१२॥

सभी मेघ कम्यामोंने बिछुटा हार पहनकर धरीरपर नीलाम्बर धारणकर वड़ आस्रहसे तुम्हें प्रीतिका उपहार दिया है। तुम कुञ्ज-कुञ्जमें कहीं बिहार कर रही हा ? ॥१३॥

गद्यर्षपुर नन्दन काननकी भाषोद्धितकर बिद्वज्जीत मवाससा के प्रेमगीतोंको क्या तुमने पाया है जिससे लीला मिक्तन प्रेमका हाट बस गया है जहाँ वसत कुञ्जको मधुवन बना रहा है ॥१४॥

स्वर्ण बीज अमलतासने मणिगुच्छ लेकर कनक कविताकी रचनाकर अयाचित प्रेम प्रधान किया है। शुभ्र वादलका वल मानो मूत्रपत्र है जो कितनी ही काव्य कथाओंसे मुन्दर बना हुआ है ॥१५॥

सुइतर काणे काणे कहुबार फुस  
 बताहत हासि जासि  
 डोवे डोवे डो खेसि  
 तुपार घवस कान्ति घरिछे बिपुस  
 येन सुरे तरंगिनी पुसके आकुस

॥१६॥

सोणोबामी रहणर सरियह डरा,  
 बपर माधुरी समा  
 बालि प्रेम ज्योतिबधा  
 उराइ पराग फाकु मनप्राप हरा  
 रमक लमक हस बिदय बसुन्धरा

॥१७॥

शोमार अजत तुल्य तरु-क्षोमाजम,  
 ताते परि प्रिया तइ  
 तुमि सगौतर सय  
 सानि बिलि रूपछटा घवसी अजन,  
 करिछे स्वर्गीय बुधये हृदय रंजन

॥१८॥

पुडा भाजररो तइ भाडि लि घमक  
 लागिस बसस्त बा  
 उसह मासह गा  
 नव बिदालय बसे करे अकमक  
 सभाविछ भागदवा कत पयिबक

॥१९॥

गिरोय बासत प्रिये परि राति दिन  
 फुस कौबरक सइ  
 कि घेसा छलिछ तइ  
 डेवा घनि सागि तोर बहा हस शोष,  
 एवे नेकि यादु तोर भालपोवा चिन

॥२०॥

साहित्यक किनारमें काँसक पूसोंने हवामें झूम-झूमकर  
सहरोंके साथ सह्यते हुए तुपार घबस कान्ति ग्रहण कर सी  
ह मानो सुर तरंगिनी पुसकसे आकुल हुई है ॥१६॥

स्वप्नित रगक सरसाके खेत-रूप माधुयमें प्रेमके ज्योतिषण  
मनप्राण आकर्षित करनबास परागके गुमाल उडा रहे हैं  
जिमसे बिदब बसुधरा अनुरजित हो उठी है ॥१७॥

अजनकी तरह गोभावास घाभाजन बृक्षपर बैठकर संगीतकी  
लय गुँजाकर तुमने घबसी अजनक साथ रूपछटा सान दी है  
भीर एक स्वर्गीय दृश्यसे सबका हृदय रजित कर रही हो ॥१८॥

बृक्ष 'आजारका भी तुमने पमका दिया ह। बसत पवनसे  
उसका हृदय भी आन्दोलित हुआ है। बमकत हुए नव किमसय  
बमने जगभगात हुए कितन ही परिव्रान्त पयिकाको उत्साहित  
किया है ॥१९॥

गिरीप ( बृक्ष बिणप ) की बसियोंमें बैठकर  
बसियोंके साथ रात दिन कीनसा खस तुम खेल रही हा ?  
यीवनोन्मादसे तुम्हारा शरीर क्षीण हो गया ह ? प्रिये क्या  
यही तुम्हार प्रमकी निशामा है ? ॥२०॥

रपही, सेउती, कया, घम्पा, युति वलि  
 फुसर कुबेरीघोरे  
 सानि र रुपहेरे  
 फुसर धाराइ बस घाने घाने पाति  
 जनाइछे ध्याकुसता इगितेरे माति ॥२१॥

बिमफुसी भासतीर रुप बितोपन,  
 चिचित्र बरण धरि  
 बुकु पमि उरि करि  
 लइ गध उपहार कुकुम चन्दन  
 याचिछे साबरी लोक प्रथम चुम्बन ॥२२॥

करबीर तगरतो तुसि बिसि हो  
 फुले फुसे फुलराणी  
 साजि बिसे फुसबेणी  
 मीपिया भाइटिकी लागे किबा मी,  
 ममर भागाटि बाव पुरावि मेनी ॥२३॥

भालमुवा डालिमीर युकुपनि जुरि  
 पाचिसाहि पचिसाइ  
 घने घने चुमा प्याइ  
 रूपलासी तरगत माङुरि साङुरि,  
 हेपाह पलाइ पोये भमिया माधुरी ॥२४॥

प्रेयसी गुटिमासी महवि अघोरा  
 प्रियतम जने भाहि  
 बजाइ मोहन घाही  
 पिपाब मिसन दूने प्रणय मरिवा  
 पलाब पिपाह मोर हबपपर पोड़ा ॥२५॥

रूपही, सेवन्ती जबा चम्पा, युति जाति (फूलोंक नाम)  
 आवि फूल कुमारियोंने विविध वर्णोंसे सजघजकर जगह जगह  
 मैवेच सजाये हैं और इधारेसे मुसा-मुसाकर अपनी व्यामुलता  
 सुनित की है ॥२१॥

सूर्यमुखी मासती अपने मनोहर रूप एव विचित्र वण वाने  
 हृदयको खोलकर गन्ध रूपी कुकुम-चन्दनका उपहार दे बेकर  
 तुमसे प्रणय चुम्बन माँग रही है ॥२२॥

करवीर तगरको भी तुमने तरंगित कर दिया । असक्य  
 फूलोंसे फूलरानीन अपनी फूलबेणी सजाई ह । 'मौ-पिया '   
 बिटिमाको भी कौनसा मधुरस चाहिए ? उसके मनकी आशा  
 क्या तुम पूरी नहीं करोगी ? ॥२३॥

कोमल डामिमीके बक्षको आबूतकर पञ्चवासी तितसी वार  
 धार चुमती है । वह उसकी रूपलासीकी तरंगोंमें तरती हुई  
 इच्छानुसार अभियमाधुरीका पान करती है ॥२४॥

ओ प्रियतमा गुटिमासी धीरज मत छोओ । प्रियतम आकर  
 मोहन बशी वजाएंगे और मिसम दूत आकर प्रणय-मदिरा  
 पिताएगा । सब सब प्रकारकी दुधा पिपासा और हृदयकी  
 पीड़ा गायब हो जाएगी ॥२५॥

## ८ गिरिमाहिका

अयि अनन्यगुच्छिता फुल्लशिखरिणी  
 रजि मणिकणिकार हरित मेखला,  
 आछा शोभि शुभ्रबेदो, करि सुरमित  
 सौहृदपर तोरभूमि द्रयामल बननि ।  
 नन्दनर रूप ज्योति परिमस सुधा,  
 करि आहरण बिश्व बिजयिनी रूपे  
 मोहिता नितम्ब दश बिजय प्राप्तार ।  
 वनस्पति हुमादसे नव पल्लवरे  
 जनाइछे हृदयर गुप्त सम्भाषण  
 स्तोत्रनम्रा सतिकार कुञ्ज पस्तपत  
 उठिछे उर्यासि येन प्रेमर तरंग  
 प्रिया, तुमि ढासिला कि मोहन मबिरा  
 हाँहि कटाक्षर यि हाँहित बने बने,  
 हरिता क्षत्रत तव तृण सतिकारो  
 भाइल जमक, ठाये ठाये बिधे यिधे  
 फुलिस रङ्गेरे कुटज कुटमस राजि  
 ब्रोगिजात शुभ्रकान्ति फुल्ल ब्रोगिबसे  
 प्रीतिभरा साजाञ्जलि याबिछे सादरे ।  
 बेबतव सवसर मुकुल पराग  
 उरि अहा पवनर मुकुल गतित  
 मुकोमल गौर तनु पेलाइछे पुर ।  
 रंजित तुषार शुभ्र निमज गामत  
 सुरमि कुकुम राग रक्त चन्दनर ।  
 पायाद्रि शिखर यबे रजि संप्या रागे  
 गुण्डेरे द्विधाम समे साँप्य नमोमनि  
 द्विबुध यनिता सबे सिबि मभोरणु  
 दिउहि पिघाइ मुबनाहार आमरण

## ८ गिरिमालिका

अथि अनवगुण्डिता फुल्ल सिखरिणी,  
 रञ्जित कर मणिर्गणिकाकसे हरित मेखलाको  
 घोमित हो रही हो शुभ्र बेशघारिणी, कर सुरमित  
 सौहित्यकी तीरभूमि-स्यामल वन ।  
 मन्दनकी रूप-शोधि सुधाके परिमलका  
 कर आहरण विदवविजयिनी रूपमें  
 मोह लिया नितव देश निर्जन इस प्रान्तका ।  
 वनस्पति द्रुमदल नव पल्लवोंसे  
 षटभाया हृदयका मुप्त सम्भाषण ।  
 किञ्चित् बिनम्र भक्तिका कुञ्जके पल्लवोंसे  
 मानों उच्छल रही प्रेमकी सरगें ।  
 प्रिये बासी है तुमने हँसी-कटाक्षकी ?  
 कैसी मोहन मधिरा जिस हँसीसे वन वनकी  
 हरित क्षेत्रकी तट-सूष-सताओंकी  
 पमक उड़ गई ठौर-ठौरपर भाँति-भाँतिके  
 किस रहे विविध रग रञ्जित कुटज कुटमल समूह ।  
 द्रोणीजात शुभ्रकान्ति प्रफुल्लित द्रोणीवसोंसे  
 प्रीतिपूर्ण साजांबलि करते अर्पण सादर ।  
 देव वृक्षोंके सकल मुकुस परागने  
 अहा उड़त हुए पवनकी मृदुल गतिसे  
 सुकोमल मौर तनुको किया है शान्त ।  
 तुषार शुभ्र मसृण गालपर रञ्जित है  
 भन्दनका सुरभि कुंकुम राग रक्त  
 शोपाद्रि शिखर होता जब रञ्जित सम्भ्या रागसे  
 श्री सुखसे विश्राम लेते साम्ध्य नभोमणि  
 बिवुध वनिता सभी सिख नगोरेषु  
 पहना बेटी मुक्ताहार आभरण



मसञ्चि बिछिस गाब कोमस हातेरे  
 पुष्पतीया मालिनोर शोस्तस जलेरे ।  
 प्राणप्रिया, आजि मोर बिजन कुञ्जत,  
 तुलिवाने सपसासे हीहिर तरण  
 इयधारे जपञ्चि परा भाकुल प्राणत  
 बिया प्रेम मकरम्ब अमृत परदा  
 अकृत्रिम प्रणयर स्नेह भासिगत  
 निष्प्रम कुसनि मोर हक ज्योतिषय ।

---

कि आज निज कोमल करोंसे सहसाकर धरीर  
 करखी पुष्पतोया मालिनीका शीतल अस सिक्त करता है ?  
 प्राणप्रिये आज मेरे निर्जन इस कुजमें  
 उस्तासके सयसे उठाओगी क्या हास्य तरंगों ?  
 व्यथासे विमूढ़ व्याकुल मरे प्राणोंमें  
 भर दो अमृत स्पर्शमय प्रेम मकरन्द,  
 अकृत्रिम प्रणयके स्नेह-आसिगनोंसे  
 प्रभाहीन उपवन मेरा हो उठे ज्योतिर्मय ।

## ९. वीराग्धर कथा

मार्या पुत्र घन अन बिलों मइ बिसजन  
 मितिर कुट्टम केओ नाइ सगरीया,  
 भाशा पखी जरि गल शुष्य हिया परि रस  
 ससारत भाजि मइ अकसशरीया ॥१॥

सुखर ससार मोर अचिरे परिस ओर  
 निजामते बहि कस काड़ो हुमुनिया,  
 सहाय सपवहीम देखि सबे करे धिय  
 येये देखे सेये बोले बाटर बलिया ॥२॥

मासागे ससार सुख नाचामों मानह मुख  
 बीबनत पालों बहु बेजार आमनि,  
 घुन पेंध बिसासिता सकसो लागिछे तिता  
 भाजरि पेलासो माया मोहर बान्धनि ॥३॥

सकसोरे एरि आश अरष्यत सलों बास  
 मन गसे अकलइ पुरों पयषों बने बने  
 बिबिध बराइ पहु ठापे ठापे भाछे बहु  
 सिहंतोइ सगी मोर जीबने परणे ॥४॥

छाय यहि बापे घोइ परों यहि चासे ओइ  
 यहिओबा भाए किबा घटे अमगत  
 नवरों एकोके मय आछे प्रभु बपामय  
 हब तेबें भाभितर भाभयर घस ॥५॥

मोक्षत भापुर हले अरष्यर कस मुसे,  
 गुषाभ्रों पेटर श्वासा पलापे भागर,  
 मोरालर टासघनि सेये गार भापरनि  
 तारेइ गुषाभ्रों जार मासागे कापोर ॥६॥

## ९ वैराग्यकी कथा

भार्या पुत्र धन जन सभीको मैंने विसर्जित कर दिया ।  
मेरे साथी मित्र आत्मीय स्वजन कोई नहीं हैं । आधा रूपी  
पक्षीक उड़ जानेसे हृदय धूस्यवत् हो गया ह अब संसारमें मैं  
केबस अकेला रह गया हूँ ॥१॥

मेरे सुखका संसार शीघ्रही नष्ट हो गया अब मैं किसी  
मिर्जनमें बैठकर सम्बी भाहूँ भरता हूँ । मुझ असहाय और  
सम्पत्ति हीनको देखकर सभी भूणा करते हैं जो देखता है वही  
मुझ रास्तका पागल कहता है ॥२॥

मुझे संसारके सुख नहीं चाहिए मानवकी आकृतिसे भी दूर  
ही रहना चाहता हूँ । जीवनमें दहृतसी विरक्ति और उदासी  
ही मुझ मिली है । सांसारिक दौब-पेच विनाशिता आदि  
सभी बटु लग रहे हैं माया मोहके बंधन मने समेट लिए ॥३॥

सब प्रकारकी आशाओं और अभिलाषाओंको छोड़कर मैंने  
अरण्य-निवास ग्रहण कर लिया है । यहाँ इच्छानुसार अकेला  
बन-बनमें घूमता रहता हूँ अनेकों प्रकारके पशु पक्षी वहाँ बहु  
तायतसे हैं वे ही अब मेरे लिए जन्म मरणके साथी हैं ॥४॥

अगर मुझ बाध सिंह खा डालें या खाए खोहमें अगर मैं  
जा गिरूँ या और कोई अमंगल हो जाए, तो भी मुझे अब  
इनमेंसे किसीका भय नहीं लगता क्योंकि जो दयामय प्रभु हैं  
वे ही मुझ आश्रितके आप्रयदाता बन जाएंगे ॥५॥

शुधासे ब्याकुल होनेपर अरण्यके बन्द मूस फसोंको  
खाकर उदरकी ज्वाला बुझाता हूँ । ओवास बूलकी छान  
घरीराबरपका नाम दती है और उसीसे धीत वित्त देता  
हूँ मुझे बस्त्रोंकी आवश्यकता नहीं ॥६॥

भाछे कत कुञ्जवन प्रकृतिर तपोवन  
 हियात नतुन भाबे खेसे कत डौ,  
 कोमलता सरसता स्वरगर पवित्रता  
 भानम्ह मूरति यत विरामे नितौ ॥७॥

तारे कत शोभा घामों हुबगत शान्ति पामों  
 बिभूर महिमा गामों पखोर सुरत,  
 तरगर सीमा खेसा अपूर्व मोहन मेसा  
 रं मने बहि घामों तटिनी तीरत ॥८॥

येति हेडुनि बसि बिचित्र रहन ठासि  
 लाहे भाहे याप नीस सायरत तल  
 फसर सुगध वाही मलय समीरे भाहि  
 सन्तापिस प्राण मोर करे सुशीतस ॥९॥

हिंसा ह्वेव प्रबधना संसारर विडम्बना  
 सोभर बेहानि तात एको नाइकिया  
 मामाबो सिबोर कया नाइ आर एको सेठा  
 सबा कये आसि मइ परम सुखीया ॥१०॥

विबिना ससाटी बेहा बेहाइ ससार बेहा  
 बिचारिब पाबस मुस्तिर बिघाम,  
 गछर पातेरे सजा भाछे पिटि भडा पजा  
 ताते बहि पाम मइ गय समिघाम ॥११॥

प्रकृतिके तपोवन सदृश कुञ्जवन अन्यत्र कहाँ हैं? नवीन भावनाओंकी ऐसी हृदयमें तरंग कहाँ उठा करती हैं? कामलता सरसता स्वर्गीय पवित्रता आनन्दकी प्रतिमा यहाँ (प्रकृतिमें) नित्य बिराजमान है ॥७॥

कितने भावस उम सबकी घोभा मिरगकर में आन्तरिक क्षान्ति पाता हूँ। पक्षियोंके स्वरमें स्वर मिसाकर में विभुकी महिमाका गान करता हूँ। मदीक किनारे बैठकर मैं तरंगोंका सीलामय अस् देखता हूँ—जो एक अपूर्व मोहन मेसेके सदृश है ॥८॥

अध रक्तिम सूर्य विचित्र वर्णोंको आसत हुए धीरे धीरे नील (आकाश समुद्र) के नीचे चला जाता है तब मलय-वायुमें तरती हुई सुमनोंकी सुगंध आकर मेरे सतप्त प्राणोंको शीतल कर देती है ॥९॥

वहाँ हिंसा द्वेष प्रबन्धना संसारकी विडम्बना सोभका व्यापार—कुछभी नहीं चसते। आज में उन विषयोंका चिन्तन नहीं करता। अब कोई अजालही नहीं रह गया है। सच कहता हूँ आज में परम सुखी हूँ ॥१०॥

जिस दिन मद्भर शरीर संसार व्यापारको समाप्त कर मुक्तिका बिधान पाना चाहेगा (उसदिनके लिए) बृक्षके पत्तोंसे बनी हुई टूटी फूटी हुई कुटियामें बैठकर मैं अस्मित समाधान पा लूँगा ॥११॥

१० अन्तिम ज्योति

मरम मिषारी मइ विश्व भांडारत  
बुजिछिसों अन्तरर बान,  
गरल उबुमब हल सियु मंघनत,  
अमूतर ना पामों सघान

॥१॥

उहाम बासना सह स्वण मृग बदि  
ससारत अमिसो किमान,  
बुज्जय साससा लेमो मुगुधिल मोर  
ध्यष हल मरुपमेदी बाण

॥२॥

मम्महृत व्यथाहत बुग्बह जीवन  
भाछे मोह भाबतत भुरि  
स्पम्बनत तन्नासुर बुग्बस वित्तर  
जइताइ निछे सता हरि

॥३॥

व्यथार सहस्रजला व्यथतार ग्लानि  
बुहु पोरा तपत उषष्बास,  
कोनबा गुषाव मोर कोनबा दुनिब  
भारव्यर स्वप्न उपग्यास ?

॥४॥

जीवतर छुधतरा भार घामों घामों  
अन्तर अन्तिम बुक्त,  
परम मान्द रूप छुब ज्योतिरणा  
नापाम न भार ति सोक्त ?

॥५॥

## १० अन्तिम उद्योति



मैं प्रेमका मिखारी इन बिदव भडारमें अन्तरक समर्पणका सघान कर रहा था (परन्तु) सिधु मन्थनमें गरमका उद्भव हुआ, अमृतका सघान नहीं मिला ॥१॥

उद्भवाम बासना लिये स्वर्णमृगक पीछे दौड़ते हुए मैंने सघारमें न जाने कितने लकड़र लगाए, लो भी मरी दुबय साससा न मिटी लखमेरी बाग व्यर्थ हो गया ॥२॥

मर्महित ध्ययाहत मय दुःख जीवन माहके आवतनमें भूम रहा है। घड़कनेवाल तन्त्रातुर दुर्वल चित्तकी अज्ञता उसकी संज्ञाकी हर रही ह ॥३॥

व्यथाकी सहस्र उवासाएँ ह व्यर्थताक कारण पैदा होनेवाली ग्लानि है एव हृदय दग्धकारी तप्त उच्छ्वास है। इन्हें कौन दूर करेगा? मेरे स्वप्नोंकी अरबी कषाएँ कौन सुनगा? ॥४॥

अनन्तके अन्तिम बन्धमें जीवनका घुबतारा अन्त होनेवासा है। उस सोकमें क्या मैं परम आनन्दरूप श्रुत ज्योतिकणको प्राप्त न कर पाऊँगा? ॥५॥





३१ फुल शय्या

आत्मो किमान दिया बेबनार बोजा  
हे मोर हृदय बेवता  
कल्प रोदन तुलि भाङ्गि बिसा किय  
प्राणर निबिड़ मोरबता ?

॥१॥

भोवनर सघिकाण बियसि बेसात  
हिया घुमि उठे कोसाहल  
भार किय तिबत ध्यया रिक्त हृदयत  
बासि बिसा तोय हसाहल ?

॥२॥

कोन काहानिये तुमि हरि मिछा मोर  
प्रीतिमरा प्रणयर साह  
अन्तर्दाही रावधर बिता जुइकुरा  
कोन बिना मुमाबनो भाए ?

॥३॥

आनन्दर पूणपात्र शुष्य भाजि मोर  
कओपिन बेबो ह्राहाकार  
बाबगिर बहनत बेवदाह तठ  
परि डेइ हल छारछार

॥४॥

मारिछिस दक्षिणोस ताहानि पिपात  
योवा नाइ सि बिय जामरि  
बेबनार यत अस्त्र करिछा प्रयोग  
मुहु पाति सइछो सामरि

॥५॥

हिया भगा बियाबर तिति अपूजले  
पाहरिछो ससार मरम,  
मारामान्त बिल भाजि उबलित करि  
बिबा गुण पाला प्रियतम ?

॥६॥

## ११ फूल-सेज

हे मर हृदय दबता और कितनी बदनाओंका मोम डालोगे ? मरे प्राणोंकी निविड़ नीरबताको तुमने करुण यदनस क्यों भग कर दिया ? ॥१॥

जीवनका सघिकाम इस सभ्यामें हृदयको पीड़ितकर कोसाहस मचा रहा ह। तब इस हृदयमें शून्य और अधिक कट्टु व्यथाका सीप हसाहन क्यों डाल दिया ॥२॥

कितन दिनों पूव ही तुमने मरे प्रीतिभर प्रणयक मोदक (सङ्कट) को हर लिया है ! अन्तर वहनकारी रावणकी प्रग्वलित पिता और कितने दिनोंमें खुसगी ? ॥३॥

पूरा भरा हुआ मेरा भानन्दका घट आज रिक्त हो गया है मैं अपन चारों धार हाहाकार ही हाहाकार देखता हूँ मानों दावाग्निकी ज्वालामें विशाल देवदार बृक्ष जलकर राख हो गया हो ॥४॥

(उनक द्वारा) मेरे बशमें जितने भी व्यक्तिगत मार गए हैं आज तक उनका विष घास्त नहीं हा पाया ह। फिर भी मुझपर बदनाक जिन अम्त्राका तुम प्रयाग कर रहे हो उन सबका मैं अपन बलपर सभास रहा हूँ ॥५॥

हृदयभग करनेवाले बिपादके आँसुओंमें सिक्त होकर ससारका स्नेह विस्मृत हो चुका ह। मर इस भारतकान्त बित्तको उद्दलित कर ह प्रियतम तुमन क्या सुख पाया ह ? ॥६॥

मरहिछे जीबनर कुलम मायुरी  
 नोवारिसो आपीसा पुराब,  
 मरहिछे प्राणत आबि क्लाम्ति अवसाब  
 दिया मोक शान्तिरे जुराब ॥७॥

यातनात निपीडित ओरे जीबनत  
 कडियासो पत आवज्जमा,  
 तोमारे बिपुस बान बुकृत सावटि  
 भस्तिमत सभिम सास्बना ॥८॥

जवसिछे बुरत सठ प्रसपर शिखा  
 धरिछे कि रूप पितोवन  
 सेये मोर फुसशय्या रक्त कमसर  
 सम ताते अमस्त शयम ॥९॥

जीवनकी दुसम माधुरी मुख्तावी जा रही है में  
 आर्काक्षार्को पूण नहीं कर पाया । प्राणोंमें आज क्साग्निका  
 अवसाद जा रहा ह मुझ गान्तिसे विभ्राम सने दो ॥७॥

यातना पीड़ित सारे जीवनमें मैंने जितनी आवर्जनाएँ डोह  
 हैं उन्हें तुम्हारा ही बिपुस दान समझकर वक्षमें धारण कर  
 अन्तमें साग्वना प्राप्त कर लूँगा ॥८॥

सुदूर प्रसयकी शिक्षा प्रज्वलित हो कसा अपूब रूप धारण  
 कर रही है ! बही मरी रक्त-कमलकी फूलसेज बन में  
 जसीमें अनन्त घयन से लूँगा ॥९॥

---

[ प्रथम तरंग ]

कर परा तइ माहिसि सोनाइ  
कोन बिसे याव उरि,  
किय बा कुरिछ बुर बुरगित  
अकसइ धुरि कुरि ?

॥१॥

लोकामोक एरि मिजान भूमित  
मुहुजा भापारे तइ  
कि मात मातिछ निहर अज्ञात  
मुहुजो बिहगी मइ

॥२॥

बेधर कुसम मानिछ कि घम  
काकमो बिनाइ दिवि  
निम्वा इ बेधर माल परतुखिनि  
कोन बगलइ निबि ?

॥३॥

अलंघ्य गिरिर गिछरे गिछरे  
घर बिनमोया मुर,  
कतिपाया गइ तटिमो तीरर  
निस्तब्धता कर बूर

॥४॥

बिजग बनत प्राप्तर भूमित  
ममत कि सइ पुर  
कत एरि यह पराग मगिरु  
अकन अकन पुर ?

॥५॥

जमम सभिछ मानब अज्ञात  
भाछे नि मुन्दर टाइ  
भया, दारति बया बेबमाता सये  
बिहरिछे सखबाप

॥६॥

## १२ केतेकी !

[ प्रथम तरंग ]

अरी ! कहाँसे आई हो तुम आर किस दिशाको उबती  
बनी जाओगी ? अकसी ही दूर-दूर तक क्यों घूम फिर रही  
हा ? ॥१॥

मोकामाक छाडकर हम अनजान भूमिपर किसकी आशामें  
अनजान भाषामें क्या कह रही हा हे बिहंगी में समझ नहीं  
पाता ॥२॥

क्या दब-दुखमें किसी निधिका किसी विशेषका घाँटन आ  
गई ? अथवा इस वेधकी उस्तम बन्तुका किसी दूसर दशमें  
म आओगी ? ॥३॥

तुम बनी असभ्य गिरिके गिखरोंपर मधुर तान छेड़ती  
हो बनी नदीक तीर जाकर उमकी नीरबता दूर करती  
हा ॥४॥

मतमें क्या लकर बिजत कम प्रान्तकी भूमिमें तुम घूमती  
रहता हा और अपन जीवन-मापिकका सुमत कहाँ रख  
छाड़ा ह ? ॥५॥

मानबक उम अनाउ सुन्दर स्थानमें तुम्हारा जग्म हुआ हे  
जहाँ धडा गान्ति दया आदि मनी श्रेयसाएँ सना बिहार  
करती हे ॥६॥

- दुष्ट व्यधि तात मोहर बागुरा  
 पातिछे सुम्बरकइ,  
 किम्त पखी तइ भाग पीछ गनि  
 फुरिबि सतक हइ ॥१४॥
- माहिछ बिहगी आलबि ममत  
 बिबा काम पाम बुसि,  
 सोमर देहानि भाछे आइ बहु  
 याब तोर मन भुसि ॥१५॥
- इपिने तितिने छिछि मेसि मेसि  
 काक चाव जुमिजुमि,  
 कार थिरहत बिरहिनी तोर  
 गइछे हबय पमि ? ॥१६॥
- कारमी घातरि आनिछ साबरी  
 कारनी पातिबि कया  
 हबय पमोया मात दुमि तोर  
 हियात मागिछे देया ॥१७॥
- बिहू बातार आनिछहे यदि  
 तोर कया भुसुनाबि,  
 मिसम बातारि आनिछहे यदि  
 सावणि मुरत गाबि ॥१८॥
- माहियेइ तइ भुसासि सागर  
 भुसासि पबत बन  
 अमृत बरया एवारि मातने  
 भुसासि ससारथन ॥१९॥
- बनप्राणीहोन मइ प्राप्तरत  
 गाइ समीबनी गान  
 राजाइ भुसिति उयर भूमित  
 अरण्य मरुथान ॥२०॥

यहाँ दृष्ट शिकारी मोह जाल सजाए बैठे हैं । परन्तु हे बिहगी, तुम आगा पीछा सोचकर सतर्क होकर घूमना ॥१४॥

हे बिहगिनी क्या तुम यहाँ कुछ खाने पीनेकी आशा सेकर आई हो ? यहाँ खोमके बहुतसे व्यापार चलते हैं बिनमें तुम्हारा मम भूल जाएगा ॥१५॥

इधर उधर सिर उठा उठाकर तुम बार-बार किसे देखती हो किसके बिरहसे अरी बिहगी तुम्हारा हृदय विगमित हो रहा ह ? ॥१६॥

अरी प्रिये, तुम किसका संदेश सा रही हो ? किसकी गाय्या सुमाओमी ? अन्तर विचलित करनेवाली तुम्हारी बोली सुनकर हृदयमें बड़ी वेदना हो रही है ॥१७॥

यदि तुम बिरहका संदेश भाई हो तो अपनी बात म सुनाओ और यदि मिसनका संदेश भाई हो तो मधुर स्वरसे यामो ॥१८॥

तुमने आते ही समुद्रको मोह लिया पबतों और बनॉलो घमित कर लिया तुमने अपनी पीयूषवर्षी केवल थोड़ी सी बोलीसे सारे ससारको मोह लिया है ॥१९॥

तुमने अनहीन मरुप्रान्तमें सजीवन सञ्चार करनेवासे गीत गाकर बजर भूमिमें भी अपूर्व मरुघानकी रचना कर डाली ॥२०॥



बीणार झकार मुरसीर ध्वनि  
 लटिनीर कुसु तान,  
 तोरेइ सुरत बाजे सिधोरत  
 बिमल प्रेमर गान ॥२८॥

तोरेइ निबिना जोव भाछे बेखि  
 भाछे मरमर भापा,  
 कोमल हाहिटि कटाक्ष चाबनि  
 तये निराझार आशा ॥२९॥

प्रेमर शिकनि शिकनि मर्त्यक  
 पियासि अमृत बिन्दु,  
 तोफे भाहि सइ तरार माजत  
 हाहिछे बिमल इन्दु ॥३०॥

---

बीणाकी झकार, मुरझीकी छ्वनि नदीका कस-कस भाव—  
सभीमें तुम्हारे ही स्वरोंसे निर्मल प्रेमका संगीत बजता  
है ॥२८॥

तुम, जैसे जीव वर्तमान हैं इसीलिए प्रेमकी भाषा भी बनी हुई  
है। तुम्हारी कटाक्ष वृष्टि और कोमल हँसी ही निराशोंकी  
आशा है ॥२९॥

तुमने मर्योंको प्रेमकी धिक्का दी ह तुमने ही अमृत  
विन्दुका पान कराया ह। तुम्हारा ही आदर्श लेकर सारोंके  
बीच बिमल चन्द्रमा हँसा करता ह ॥३०॥

---

कवि-ध्वी माला

बीभार झकार मुरसोर ध्वनि  
 तटिनीर कुमु ताम,  
 तोरेइ मुरत बाजे सिबोरत  
 बिमल प्रेमर गान

॥२८॥

तोरेइ मिबिना बीब भाछे देखि  
 भाछे मरमर माया,  
 कोमल हाँहिटे कटास बाबनि  
 तये मिराशार आशा

॥२९॥

प्रेमर शिकनि शिकसि मर्यक  
 पियासि अमृत बिन्दु,  
 तोके माँहि सइ तरार माजत  
 हाँहिछे बिमल इन्दु

॥३०॥

वीणाकी झकार, मुरलीकी ध्वनि मदीना कस-कस नाद—  
सभीमें तुम्हारे ही स्वरासे निर्मल प्रेमका संगीत बजता  
है ॥२८॥

तुम जैसे जीव वर्तमान हैं इसीलिए प्रेमकी भाषा भी बनी हुई  
है। तुम्हारी कटाक्ष दृष्टि और कोमल हँसी ही निरुधोंकी  
भाषा है ॥२९॥

तुमने मत्स्योंको प्रेमकी शिक्षा दी है तुमने ही अमृत  
बिन्दुका पान कराया है। तुम्हारा ही आदर्श मकर तारोंके  
धीरे बिमल चन्द्रमा हुआ कखा है ॥३०॥

---